आनन्द

पुष्पांजलि

5

बालाजी पब्लिकेशन

केंद्रीय हिंदी निर्देशालय (शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की संशोधित व परिवर्धित देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण के अनुसार N.C.E.R.T. की नई शिक्षा नीति पर आधारित।

आनंद पुष्पांजलि

हिंदी की पाठ्य-पुस्तक

लेखक :
डॉ राजेन्द्र श्रीमाली
एम०ए०, बी०एड०

5

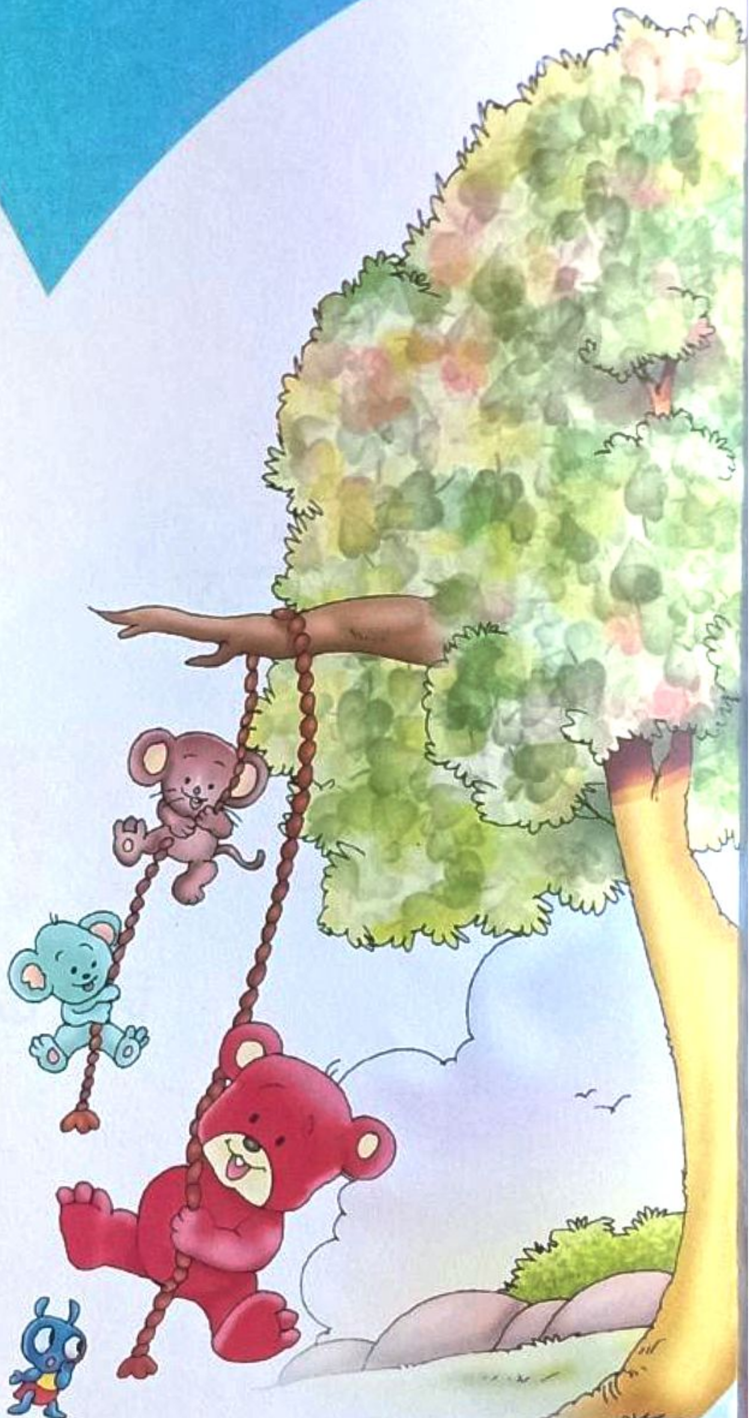

- © सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के चित्र, भाषा तथा अन्य प्रकार की सामग्री अनुमति के बिना छापना या नकल करना वर्जित है।

- नवीन संस्करण

- कंप्यूटर ग्राफिक्स

S·H·R·I·M·A·L·I CREATIONS
FIRST WORD OF PRINTING

हर्ष इन्फोटेक

दो शब्द....

जैसा कि हम जानते हैं कि किसी बात को उचित माध्यम से प्रस्तुत करने पर वह अत्यधिक प्रभावशाली हो जाती है। भाषा उस माध्यम का उचित रूप है और कोई बात अपनी मातृभाषा में कही जाए तो उसका प्रभाव और भी सशक्त हो जाता है। परंतु किसी भाषा के अधूरे और अनुचित ज्ञान एवं प्रयोग से कहने वाले का प्रस्तुतीकरण कितना ही शानदार क्यों न हो, वह सफल नहीं हो सकता।

इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत देश के सभी विद्यालयों में हिंदी भाषा के शिक्षण को अनिवार्य कर दिया गया है। परंतु इतने व्यापक स्तर पर राष्ट्रभाषा के प्रसार का निर्णय लिए जाने पर भी हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों को लेकर कोई नीतिगत निर्णय नहीं लिया जा सका है। परिणामस्वरूप हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। प्रायः ऐसी पुस्तकों का अभाव दृष्टिगोचर होता है, जिनके द्वारा भाषा-शिक्षण को सरल, सुगम और रुचिकर व बोधगम्य बनाया जा सके।

इसी अभाव को दृष्टिगत रखते हुए हमने पुष्पांजलि (हिंदी की पाठ्य-पुस्तक) नामक पुस्तक-शृंखला का प्रणयन किया है। इस पुस्तक-शृंखला की रचना हमने छात्रों के बौद्धिक स्तर को विशेष रूप से ध्यान में रखा है, जिससे यह पुस्तक-शृंखला भाषा-शिक्षण की समस्त क्षमताओं के अनुरूप प्रस्तुत करने में शिक्षक-वर्ग का मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगी और छात्रों के लिए भाषा-अध्ययन बोझ न होकर एक रोचक खेल से अधिक कुछ न होगा।

प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक शृंखला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- भाषायी कौशल की सभी विधाओं कविता, कहानी, संस्मरण, प्रेरक प्रसंग, चित्रकथा, बौद्धिक परीक्षण आदि का समावेश।
- सुव्यवस्थित पाठ योजना का आधार देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, वीरता, साहस, त्याग, बलिदान, भारतीय संस्कृति, सामाजिक सहयोग, पारस्परिक सद्भाव, कर्त्तव्यनिष्ठा, अनुशासन आदि जीवन-मूल्यों को उभारने वाले तत्त्व हैं।

प्रत्येक पाठ का विभाजन निम्नलिखित प्रकार है

(i) अभ्यास का विभाजन पाठ-बोध और भाषा-बोध दो भागों में किया गया है।
(ii) योग्यता विस्तार द्वारा छात्रों के बौद्धिक विकास को एक आयाम देने का प्रयास किया गया है।
(iii) भाषा-ज्ञान के अंतर्गत पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, वचन परिवर्तन, लिंग परिवर्तन, वाक्य प्रयोग आदि का ज्ञान कराया गया है।

हम अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल हुए हैं, इसका आकलन हम आपकी स्वीकारोक्ति से कर सकेंगे। आपके सुझाव पुस्तक शृंखला को और अधिक उपयोगी बनाने में हमारा मार्गदर्शन और सहयोग करेंगे, जिसके लिए हमें आपके सुझाव और अनुशंसा पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

—लेखक एवं प्रकाशक

विषय-सूची

1. मेरा हिंदुस्तान 5

2. झूठ की सजा 9

3. बगीचे में खजाना 14

4. अमर क्रांतिकारी-राजगुरु 18

5. विमल इंदु की विशाल किरणें 23

6. मैडम क्यूरी 26

7. आगरा की सैर 31

8. गुलाब सिंह 35

9. साहसी कुलूमू 39

10. बरसो बरखा रानी 44

11. अलादीन और जादू का दीपक 47

12. सुखमय जीवन का आधार : स्वास्थ्य 52

13. अपना स्थान स्वयं बनाइए 57

14. पद और सवैया 61

15. पंच परमेश्वर 64

16. प्रेम की मूर्ति 69

17. चरित्रवान् बनो 73

18. गुलीवर की यात्राएँ 77

19. अब जाड़े की बारी आई 84

20. ग्रामीण जीवन 87

21. सुकरात 92

22. शहीद भगत सिंह 95

23. डॉक्टरी 100

1 मेरा हिंदुस्तान

मातृभूमि को संसार की सभी वस्तुओं और साधनों से उत्तम बताया गया है और हमारा देश हिंदुस्तान इसका जीता-जागता प्रमाण है। क्योंकि यह विविधता में एकता वाला देश है। प्रस्तुत कविता में कवि ने भारत की इन्हीं विशेषताओं का वर्णन किया है।

लाख-लाख गाँवों में बसता,
मेरा हिंदुस्तान है।
मत समझो माटी के घर हैं,
हर द्वारे भगवान है।

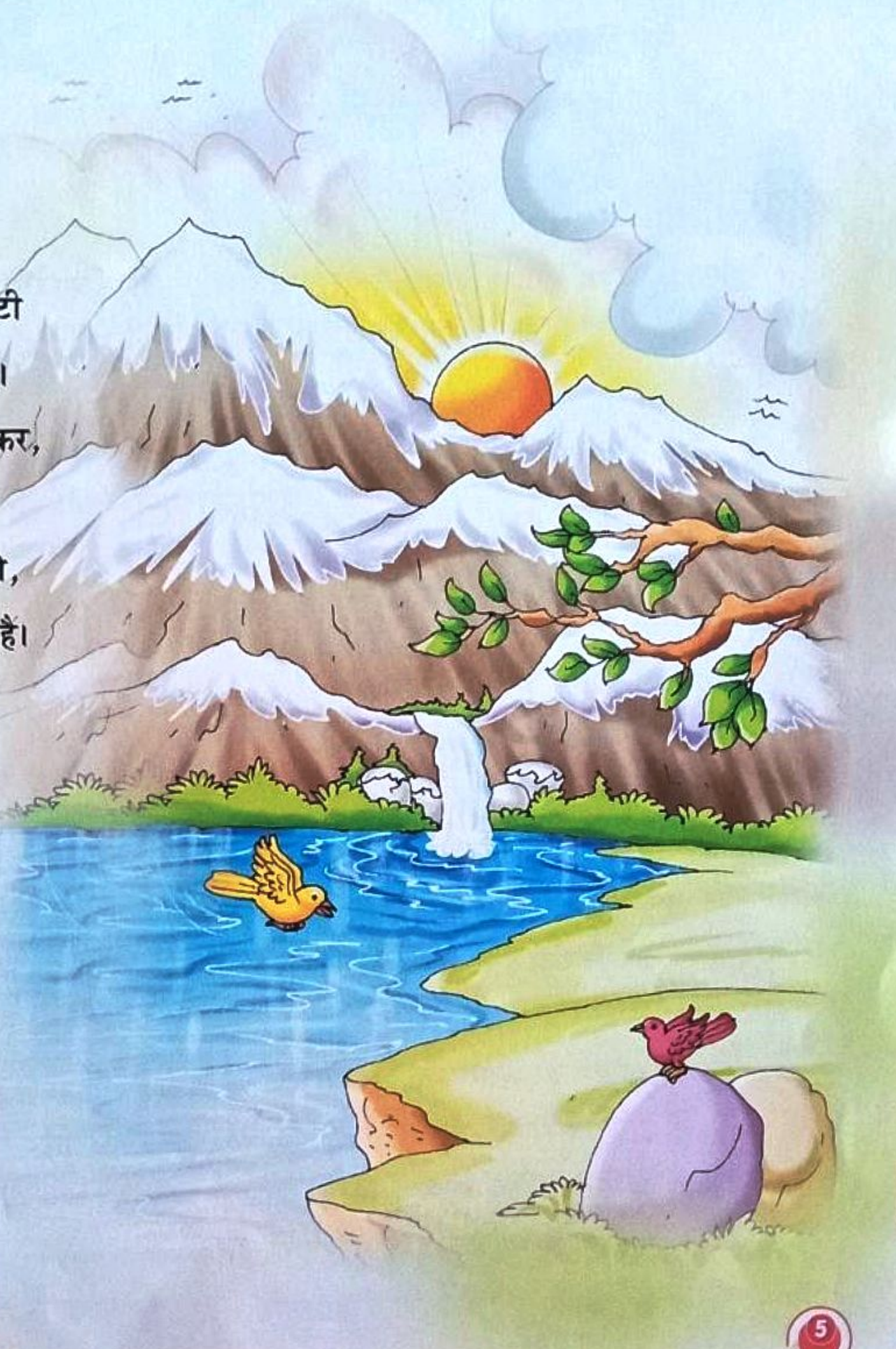

गंगा जिसकी जेठी बेटी
बड़ा हिमालय बेटा है।
रत्नों का अंबार सजाकर,
सिंधु चरन में लेटा है।
नंगी-भूखी दुनिया को,
युग-युग से देता दान है।
मेरा हिंदुस्तान है।

रातों चंदा दूध परोसे,
सूरज बोता सोना है।
लहर-लहर हर खेत लहराता,
महके कोना-कोना है।
चिड़ियों का कलरव लगता नित,
सामवेद का गान है,
मेरा हिंदुस्तान है।

जिसको ठुकराया दुनिया ने,
हमने बाँटा मधु प्यार है।
सत्य, अहिंसा, समता-ममता
का मेरा व्यवहार है।
विश्वविजयिनी रहे पताका,
वंदे मातरम् गान है।
मेरा हिंदुस्तान है।

–मंगल प्रसाद सिंह 'मंगलेश'

शब्दार्थ

माटी = मिट्टी; कलख = मीठी आवाज; द्वारे = दरवाजा; समता = बराबरी; जेठी = बड़ी; ममता = प्यार; अंबार = ढेर; विजयिनी = जीतने वाली; चरन = पैर; पताका = झंडा; सिंधु = समुद्र।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि ने हर द्वारे किसे कहा है?

____

(ख) कवि ने हिंदुस्तान की जेठी बेटी किसे बताया है?

____

(ग) कवि ने चंदा व सूरज की विशेषता किस प्रकार प्रकट की है?

____

(घ) चिड़ियों का कलरव कैसा लगता है?

____

2. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) मत समझो ______________,
हर द्वारे ______________।

(ख) ______________ जेठी बेटी,

______________ बेटा है।

(ग) चिड़ियों का ______________ नित,

सामवेद का ______________,

मेरा ______________ है।

5. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

(क) रत्नों का अंबार सजाकर,
सिंधु चरन में लेटा है।
नंगी-भूखी दुनिया को,
युग-युग से देता दान है।
मेरा हिंदुस्तान है।

(ख) सत्य, अहिंसा, समता-ममता
का मेरा व्यवहार है।
विश्वविजयिनी रहे पताका,
वंदे मातरम् गान है।
मेरा हिंदुस्तान है।

(क) संदर्भ ______________

व्याख्या ______________

____

____

____

(ख) संदर्भ ______________

व्याख्या ______________

____

____

____

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए-

घर = ____________ पताका = ____________

बेटी = ____________ मधु = ____________

दुनिया = ____________ नित = ____________

दूध = ____________ चंदा = ____________

सत्य = ____________ सूरज = ____________

2. उदाहरण को पढ़कर कविता में से युग्म शब्द छाँटकर लिखिए-

लाख-लाख ____________

____________ ____________

____________ ____________

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) भगवान = ____________

(ख) सामवेद = ____________

(ग) व्यवहार = ____________

(घ) हिमालय = ____________

योग्यता-विस्तार

❖ कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को सही करके लिखिए-

लेटा है चरन में सिंधु, ____________

दुनिया को भूखी-नंगी, ____________

देता है दान युग-युग से ____________

है हिंदुस्तान मेरा। ____________

शिक्षण-संकेत

छात्रों से कविता का सस्वर वाचन करवाएँ तथा प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझाएँ।

2 झूठ की सजा

मनुष्य गलतियों का पुतला है परंतु यदि सभी गलतियाँ अनजाने में हों तो वे कम अपराध की श्रेणी में आती हैं। लेकिन जान-बूझकर की गई गलती अक्षम्य है। झूठ बोलना इस अक्षम्य अपराध की श्रेणी में आता है इसलिए इसकी सजा अवश्य मिलनी चाहिए।

कमल और विमल दो भाई थे। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। बड़ा भाई कमल पाँचवीं में पढ़ता था और छोटा विमल तीसरी में। कमल हर रोज स्कूल जाता था। वह पढ़ाई और खेलकूद में बहुत अच्छा था और बड़ों का कहना मानता था।

पढ़ाई और खेलकूद में विमल भी बुरा नहीं था। लेकिन वह स्कूल जाने से जी चुराता था। इसके लिए वह बहाने बनाता था और झूठ बोलता था। इस बात पर उसे कई बार डाँट भी पड़ती थी। फिर भी वह मानता नहीं था।

हर साल की तरह इस बार भी स्कूल में पंद्रह अगस्त की छुट्टी थी। इसलिए स्कूल में आजादी की सालगिरह चौदह अगस्त को ही मनाई जा रही थी। हेडमास्टर जी ने बच्चों से आजादी की लड़ाई पर भाषण लिखकर लाने के लिए कहा था। सबसे अच्छा भाषण लिखने वाले बच्चे को उन्होंने इनाम देने की बात भी कही थी।

कमल ने भी बड़े मन से एक भाषण लिखा था। वह बड़ी बेचैनी से चौदह अगस्त के दिन का इंतजार कर रहा था। चौदह अगस्त वाले दिन वह थोड़ा जल्दी उठ गया। उसने विमल को भी जल्दी उठने को कहा।

इस बीच उनके पापा भी तैयार हो चुके थे। माँ नाश्ता बना चुकी थीं। पापा को देर हो रही थी। इसलिए वह जल्दी-जल्दी नाश्ता करके ऑफिस चले गए। कमल, विमल का इंतजार करने लगा।

विमल को जब इत्मीनान हो गया कि पापा जा चुके हैं, तो वह धीरे-धीरे चलकर नाश्ते की मेज पर पहुँचा। कमल ने तो जल्दी-जल्दी नाश्ता कर लिया, लेकिन विमल धीरे-धीरे टूँगता रहा।

''क्या बात है विमल, तुम ठीक से नाश्ता क्यों नहीं कर रहे हो?'' विमल को सुस्त देखकर माँ ने पूछ ही लिया।

माँ फौरन उसका बहाना समझ गई लेकिन उन्होंने सोचा कि उसकी यह आदत किसी न किसी तरह तो छुड़ानी ही होगी। इसलिए गुस्सा होने के बजाय उन्होंने विमल का माथा छुआ, ''अरे! तुम्हें तो बुखार भी है!''

''हाँ माँ...'' विमल मन-ही-मन खुश हुआ कि चलो दो-चार दिन की छुट्टी मिली।

लेकिन, माँ कहाँ पीछा छोड़ने वाली थीं, ''चलो तुम्हें डॉक्टर को दिखाकर दवा दिला दूँ।''

माँ ने सोचा कि शायद वह डॉक्टर के नाम से डर जाए। लेकिन, विमल बोला, ''हाँ माँ, चलो।''

उधर कमल को देर हो रही थी। जब उसने देखा कि विमल किसी भी तरह स्कूल जाने को तैयार नहीं है, तो उसने बस्ता उठाया और पूछा, ''माँ, मैं जाऊँ?''

''हाँ, तुम जाओ और विमल के मास्टर जी से बता देना कि वह बीमार है।'' माँ ने कहा।

''अच्छा माँ!'' कहकर कमल स्कूल चला गया।

थोड़ी देर बाद माँ विमल को लेकर डॉक्टर के पास पहुँची। उन्होंने डॉक्टर से कुछ ऐसा कहा कि डॉक्टर ने विमल को सुई लगा दी। वह इंजेक्शन से बहुत डरता था। उसने बहुत आनाकानी की। लेकिन, उसकी एक नहीं चली।

डॉक्टर ने तीन-चार तरह की गोलियाँ व एक मिक्सचर भी दिया और एक हफ्ते के लिए उसका खाना-पीना, खेलना-कूदना सब बंद कर दिया।

घर आकर माँ ने उसे दवाइयाँ खिलाईं। वे भी बहुत कड़वी थीं। फिर माँ ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। थोड़ी देर तो वह आराम से लेटा रहा। फिर उसका मन बाहर रंग-बिरंगी पतंगों को देखने का करने लगा। लेकिन माँ के डर से वह बाहर नहीं जा सका।

थोड़ी देर बाद उसे भूख लगने लगी। फिर भी वह चुपचाप लेटा रहा। धीरे-धीरे उसकी भूख बढ़ती गई। किसी तरह दोपहर तक का समय उसने इसी तरह बिताया। जब भूख उससे सहन नहीं हुई तो उसने माँ से कहा, ''माँ, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।''

माँ ने फिर उसका माथा छुआ, ''नहीं, तुम अभी ठीक नहीं हो...तुम्हारा बुखार अभी उतरा नहीं है, इसलिए चुपचाप लेटे रहो।''

इसके बाद माँ भी आराम करने चली गईं। जब उसे माँ की कोई आहट नहीं मिली, तो वह चुपचाप उठा और रसोई की ओर गया। उसने सोचा था कि जो कुछ मिलेगा, खा लेगा। लेकिन रसोई पर ताला लगा हुआ था।

उसे गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था। इसलिए चुपचाप आकर फिर लेट गया और सोचने लगा कि अब तक कमल क्यों नहीं आया। स्कूल की तो कब की छुट्टी हो गई होगी!

किसी तरह शाम हुई। माँ आराम करके उठ चुकी थीं। तभी खुशी से भरा कमल घर पहुँचा। उसने आते ही पूछा, ''मां, विमल कैसा है?''

''अभी ठीक नहीं है, आराम कर रहा है।'' माँ ने बताया।

बस्ता रखकर कमल, विमल के पास आया और बोला, ''जानता है विमल, आज स्कूल में बड़ा मजा आया...पढ़ाई तो बिल्कुल भी नहीं हुई, मैं बेकार ही बस्ता ले गया।''

फिर उसने इनाम में मिली कहानियों की किताब विमल को दिखाई। उसने बताया कि स्कूल में तिरंगा झंडा फहराने के बाद सबको मिठाइयाँ बाँटी गईं। उसके बाद आजादी के तराने गाए गए, भाषण हुए, खेलकूद हुआ और फिर सब लोग पिकनिक मनाने गए, लेकिन तेरे बिना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा...!

इस बीच उनके पापा भी आ गए। वह अपने साथ मिठाई और पतंग-डोर लाए थे। माँ को मिठाई और पतंग-डोर देते हुए उन्होंने कहा, ''कमल-विमल को मिठाई खिलाओ, आज हम शहर की रोशनी देखने चलेंगे और कल पतंग उड़ाएँगे।''

''विमल की तो तबीयत खराब है, इसलिए उसे कुछ नहीं मिलेगा... आप कमल को रोशनी दिखा लाइए, विमल तो जा नहीं सकता... '' सारी चीजें लेते हुए माँ ने कहा।

माँ ने अपनी बात अभी पूरी ही की थी कि विमल जोर-जोर से रोने लगा। उसे रोता देख पापा ने पूछा, ''क्या बात है?''

माँ ने पापा को सारी बात बताई। सुनकर पापा ने विमल की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''देख लिया झूठ का नतीजा!'' फिर माँ से बोले, ''इसे इसके झूठ की काफी सजा मिल चुकी है, इसे मिठाई दे दो।''

माँ मंद-मंद मुस्कुराने लगीं और विमल ने सबके सामने कान पकड़कर फिर कभी बहाना न बनाने और झूठ न बोलने की कसम खाई।

शब्दार्थ

इत्मीनान = भरोसा; टूँगना = थोड़ा-थोड़ा करके खाना; तराने = गाने; बेकार = व्यर्थ; मंद-मंद = धीरे-धीरे।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कमल और विमल कौन थे तथा वे कौन-कौन सी कक्षा में पढ़ते थे?

____

(ख) मास्टरजी ने बच्चों से क्या लाने को कहा और क्यों?

____

(ग) विमल ने माँ से क्या बहाना बनाया?

____

(घ) माँ ने विमल का माथा छूकर क्या कहा?

____

(ङ) विमल को झूठ बोलने की क्या सजा मिली?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

- झूठ
- पढ़ाई
- खेलकूद
- नाश्ता
- ऑफिस
- भाषण
- सालगिरह

(क) ______ और ______ में विमल भी बुरा नहीं था।

(ख) स्कूल में आजादी की ______ चौदह अगस्त को ही मनाई जा रही थी।

(ग) कमल ने भी बड़े मन से एक ______ लिखा था।

(घ) पापा जल्दी-जल्दी ______ करके ______ चले गए।

(ङ) विमल ने सबके सामने कान पकड़कर ______ न बोलने की कसम खाई।

3. किसने कहा? किससे कहा?

(क) "तुम ठीक से नाश्ता क्यों नहीं कर रहे हो।" ______ ने ______ से

(ख) "माँ, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" ______ ने ______ से

(ग) "माँ मैं जाऊँ।" ______ ने ______ से

(घ) "तेरे बिना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।" ______ ने ______ से

(ङ) "इसे इसके झूठ की काफी सजा मिल चुकी है।" ______ ने ______ से

कारण बताओ-

(क) स्कूल में पंद्रह अगस्त की छुट्टी क्यों थी?

(ख) विमल स्कूल क्यों नहीं गया?

व्याकरण-ज्ञान

1. पाठ में आए अंग्रेजी शब्दों को छाँटकर लिखिए-

स्कूल	______
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

आजादी = ____________ शहर = ____________

इनाम = ____________ रोता = ____________

खुश = ____________ झूठ = ____________

कड़वी = ____________ खराब = ____________

बाहर = ____________ रोशनी = ____________

3. हिंदी भाषा में 'र' वर्ण का विविध रूप में प्रचलन पाया जाता है, जो रेफ से जाना जाता है; जैसे–

तरह = त् + अ + र् + अ + ह् + अ = (र् स्वर सहित)

पंद्रह = प् + अ + अं + द् + र् + ह् + अ (र् स्वर सहित)

दर्द = द् + र् + द् + अ (र् स्वर सहित)

राष्ट्र = र् + आ + ष् + ट् + र् (र् स्वर सहित)

कृष्ण = क् + ऋ + ष् + ण् + अ (र् स्वर सहित)

श्री = श् + र् + ई (र् स्वर सहित)

4. निम्नलिखित संयुक्त व्यंजन से दो-दो शब्द बनाइए–

स्त अगस्त स्तर

च्च = ____________ ____________

स्क = ____________ ____________

क्स = ____________ ____________

ल्द = ____________ ____________

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) भाषण = ____________

(ख) बहाना = ____________

(ग) इंजेक्शन = ____________

(घ) बेचैनी = ____________

(ङ) आहट = ____________

योग्यता-विस्तार

✤ पाठ से मिलने वाली शिक्षा पर मित्रों से चर्चा करें।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को सत्यता से जुड़ी लघु कथाएँ तथा झूठ पर सत्य की विजय से संबंधित दृष्टांत दें।

3 बगीचे में खजाना

ईश्वर द्वारा रची गई इस सृष्टि में मनुष्य सबसे महान् अपनी बुद्धि के कारण ही है क्योंकि अन्य किसी प्राणी में न तो इतनी विकसित बुद्धि है और न ही बोल पाने की क्षमता। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने मुनष्य की इसी योग्यता और उससे समस्या के समाधान का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है।

बिहार राज्य का एक हिस्सा मिथिलांचल कहलाता है। गोनू झा का परिवार यहीं निवास करता था। वे बचपन से ही बड़े प्रखर बुद्धि और हाजिरजवाब थे। बड़ी-से-बड़ी समस्या को वह मजाकिया तरीके से और आसानी से सुलझा देते थे। मुसीबत में भी वे नहीं घबराते थे। वे संस्कृत के माने हुए विद्वान थे। इतना ही नहीं, वे मिथिला-नरेश के बेहद प्रिय दरबारियों में से एक थे। उनके हँसोड़ किस्से सारे उत्तर और पूर्वी भारत में अभी भी लोग बड़े शौक से सुनते और सुनाते हैं।

गोनू झा के पास एक छोटा-सा बगीचा था। वह उनका अपना बगीचा था। उसमें कभी-कभी वह साग-सब्जी उगा लिया करते थे। मगर अधिकतर वह यों ही खाली पड़ा रहता था।

गोनू झा उसमें बहुत कम मेहनत करते थे। उन्हें बागवानी में कोई खास रुचि नहीं थी। कई-कई दिन तक बगीचा यों ही पड़ा रहता था। वह उधर का रुख भी नहीं करते थे।

मगर गोनू झा की पत्नी को बगीचे से बड़ा मोह था। वह उनसे बगीचे में कुछ-न-कुछ उगाने के लिए बराबर कहती रहती थी। गोनू झा उनकी बात पर ध्यान नहीं देते थे। हमेशा हँसकर आगे के लिए कहकर टाल जाते थे। इसी तरह समय बीतता गया।

लगभग एक साल तक बगीचा ऐसे ही पड़ा रहा। उसमें छोटी-छोटी झाड़ियाँ उग आईं। साग-सब्जी या और कोई अनाज उगाने की बात तो दूर रही।

एक दिन की बात है, गोनू झा अपने यजमान के घर से लौटे। उन्हें उस दिन काफी धन दक्षिणा के रूप में मिला था। वह बड़े प्रसन्न थे। उस धन के बारे में कुछ चोरों को भनक लग गई। फिर क्या था, वे पीछे लग गए।

यह बात गोनू झा को भी पता चल गई।

मगर चोर यह नहीं जानते थे कि गोनू झा ने अपना सारा धन कहाँ छुपा रखा है? वे धन का पता लगाने के लिए शाम को ही घर के पिछवाड़े आकर झाड़ियों में छुप गए।

उस समय गोनू झा अपनी पत्नी के साथ घर में ही थे। दोनों ने घर के पिछवाड़े चोरों की खुसर-फुसर सुन ली। पत्नी तो डर गई, मगर गोनू झा मुसकरा पड़े। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, ''अरी भागवान सुनो, तुम्हें बताना भूल गया था। आज मुझे दक्षिणा में सोने की ढेर सारी अशर्फियाँ मिली हैं। उन्हें मैंने अपने बगीचे में एक सुरक्षित जगह में गाड़ दिया है। उन्हें उसी जगह गाड़ा है, जहाँ पहले से ही हमने अपना ढेर सारा धन गाड़कर छिपा रखा था। सब मिलाकर अब हमारे पास काफी धन हो गया। अब हमारे बगीचे के खजाने में अच्छी बढ़ोत्तरी हो गई है।''

चोरों ने गोनू झा की यह बात सुन ली।

अब क्या था, वे जान गए कि गोनू झा के बगीचे में उनका सारा खजाना गड़ा पड़ा है और झट अपनी जगह से उठे। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। तब तक काफी अँधेरा भी हो गया था।

सब चोर कुदाल लेकर बगीचे में पहुँच गए और बगीचे की जमीन खोदने में लग गए। वे सारी रात कुदाल चलाते रहे। उन्होंने बगीचे की सारी जमीन खोद डाली। सारा झाड़-झंखाड़ उखाड़कर फेंक दिया। सुबह होने को आई। मगर गोनू झा के बगीचे में खजाने का पता न चला।

चोर थककर चूर हो गए।

गोनू झा अपने घर की खिड़की से उनकी सारी मेहनत देख रहे थे। उन्होंने कहा, ''प्यारे भाइयो! सुबह हो गई है, अपने-अपने घर जाओ। मेरा खजाना बहुत नीचे गाड़कर रखा गया है। वह आसानी से नहीं मिलने वाला है।''

यह सुनते ही चोर भाग खड़े हुए। अगले दिन गोनू झा ने बगीचे में मनपसंद साग-सब्जी लगा दी। इस तरह उन्होंने चोरों से मुफ्त में मजदूरी करवा ली।

-राजनारायण प्रसाद

शब्दार्थ

हिस्सा = भाग; प्रखर = तेज; हाजिर जवाब = तुरंत उत्तर देना; भनक लगाना = किसी गुप्त बात का पता चल जाना; अशर्फियाँ = सोने के सिक्के।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) गोनू झा कौन थे तथा वे किसके यहाँ दरबारी थे?

____

(ख) यजमान के घर से आते हुए गोनू झा के पीछे कौन लग गए?

____

(ग) चोरों को सुनाने के लिए गोनू झा ने अपनी पत्नी से क्या कहा?

____

(घ) अँधेरा होने पर चोरों ने क्या किया?

____

(ङ) सुबह होने पर गोनू झा ने चोरों से क्या कहा?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) गोनू झा की __________ में कोई खास रुचि नहीं थी।

(ख) बगीचे में छोटी-छोटी __________ उग आईं।

(ग) सब चोर __________ लेकर बगीचे में पहुँच गए।

(घ) गोनू झा ने बगीचे में __________ साग-सब्जी लगा दी।

- मनपसंद
- झाड़ियाँ
- बागवानी
- कुदाल

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए-

(क) मिथिलांचल उत्तर प्रदेश में है।

(ख) गोनू झा संस्कृत के माने हुए विद्वान थे।

(ग) गोनू झा ने धन बगीचे में छुपा रखा था।

(घ) गोनू झा की पत्नी को बागवानी में रुचि थी।

(ङ) चोरों को धन मिल गया था।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

बचपन	=	________	चोर कहाँ छिपे हुए	=	________
प्रिय	=	________	सुबह	=	________
विद्वान	=	________	आसानी	=	________
उत्तर	=	________	सुरक्षित	=	________

2. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम को रेखांकित कर उनके भेद लिखिए–

(क) गोनू झा का परिवार यहीं निवास करता था। ________

(ख) वह बड़े प्रसन्न थे। ________

(ग) अब क्या था? ________

(घ) उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। ________

(ङ) वे सारी रात कुदाल चलाते रहे। ________

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन निर्धारित कीजिए–

वे	=	________	सब्जी	=	________
मेरा	=	________	चोर	=	________
झाड़ियों	=	________	बगीचा	=	________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) हाजिरजवाब = ________

(ख) खुसुर-फुसर = ________

(ग) समस्या = ________

(घ) मुफ्त = ________

(ङ) दक्षिणा = ________

योग्यता-विस्तार

✤ निम्नलिखित पाठ के अन्य संभावित शीर्षक लिखिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को प्रस्तुत कहानी का सार संक्षिप्त में समझाएँ।

आज देश के इस स्वतंत्र वातावरण की हमें शायद कीमत न मालूम हो परंतु यह उन लोगों के बलिदानों के बदले हमें मिली है, जिन्हें गुलामी की जिंदगी जीना कतई मंजूर न था। उन्हीं में से एक थे- महान क्रांतिकारी राजगुरु। प्रस्तुत पाठ उन्हीं का एक परिचय स्वरूप है।

4 अमर क्रांतिकारी —राजगुरु

महाराष्ट्र के पुणे जिले के खेड़ गाँव में रहने वाले नारायण और पार्वती देवी की पाँच संतानें हुईं। उन्हीं में से एक शिवराम आगे चलकर क्रांतिकारी राजगुरु के रूप में प्रख्यात हुए, जिन्होंने 23 साल की छोटी-सी उम्र में देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनकी इस शहादत को पूरा देश आज भी याद करता है। आज से लगभग एक सौ दो साल पहले शिवराम हरि राजगुरु का जन्म 24 अगस्त, 1908 को खेड़ गाँव के एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में हुआ।

शिवराम बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे लेकिन अधीर और उत्साही स्वभाव के थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की ही मराठी प्राथमिक शाला में हुई। बाद में उन्हें पूना के न्यू इंग्लिश हाई स्कूल में भर्ती करा दिया गया। लेकिन वहाँ पढ़ाई में उनका मन नहीं लगा। राजगुरु को शारीरिक व्यायाम आदि करने में बहुत आनंद आता था। अपने गाँव से बहने वाली भीमा नदी में तैरकर उन्होंने अपने शरीर को बलिष्ठ बनाया। वहीं पर वह मित्रों के साथ गुलेल से निशाना लगाने का खेल खेलते थे। तब उन्हें क्या पता था कि यहाँ गुलेल से सीखी उनकी निशानेबाजी बाद में अंग्रेज अधिकारी पर बंदूक से सटीक निशाना लगाने में काम आएगी।

बचपन से ही शिवराम के कोमल मन पर शिवाजी और शंकराचार्य की शिक्षाओं का प्रभाव पड़ा। शिवाजी के छुपकर अचानक हमले करने वाले यानी छापामार युद्ध के वे प्रशंसक थे। एक बार जगद्गुरु शंकराचार्य की सवारी उनके गाँव में से गुजरी तो वे भी उनके दर्शनों को पहुँचे। आदिगुरु की शिक्षाओं से अभिभूत बालक शिवराम ने मन की शुद्धि और बुद्धि तथा बल की वृद्धि के लिए पाँच दिन तक अन्न-जल त्याग कर उपवास किया। यह शायद अपनी सामर्थ्य की परीक्षा का उनका तरीका था। इस तरह के कठोर व्रत ने ही उन्हें अंग्रेजों की कड़ी यातनाओं के आगे न झुकने और देश की स्वतंत्रता की वेदी पर हँसते-हँसते चढ़ जाने का सामर्थ्य और आत्मविश्वास दिया।

एक बार उनके गाँव में किसी अंग्रेज अफसर के आने का कार्यक्रम था। सब तरफ चहल-पहल और तैयारियाँ हो रही थीं। आस-पास के गाँवों के लोग भी गोरों को देखने के लिए उस जगह इकट्ठा हो रहे थे। शिवराम भी उत्सुकतावश वहाँ पहुँचे। लेकिन उस फिरंगी के स्वागत के दौरान वहाँ मौजूद हिंदुस्तानियों का तिरस्कार बालक शिवराम की नजरों से छुपा नहीं रह पाया। एकाध अन्य अवसरों पर भी उन्होंने अंग्रेजों के हाथों सरल भारतीयों का अपमान होते देखा। इन घटनाओं ने उनके मन में अंग्रेजों के प्रति नफरत भर दी।

उस समय देश भर में अंग्रेजों के दमन के खिलाफ मोर्चे बन रहे थे। कांग्रेस सहित कई दल सक्रिय थे जो देश को आजाद कराने के एकमात्र लक्ष्य को लेकर तेजी से आगे बढ़ रहे थे। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक और दूसरे नेताओं की चर्चा घर-घर हो रही थी। फिर भला शिवराम कैसे अछूते रहते। तिलक एक सभा में शामिल होने खेड़ गाँव पहुँचे तो शिवराम ने भी उनका भाषण गंभीरता से सुना। उनके मन पर इन सबका गहरा असर पड़ रहा था।

लेकिन उनके बड़े भाई दिनकर अंग्रेज सरकार के कर्मचारी थे। इसलिए उन्हें शिवराम की ये हरकतें पसंद नहीं थीं। वे चाहते थे कि वह भी अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेज सरकार के मुलाजिम बने। पर शिवराम के मन में कुछ और ही चल रहा था। सोलह वर्ष की कम आयु में उन्होंने काशी जाकर संस्कृत का अध्ययन करने का फैसला कर लिया। उनकी याददाश्त बहुत तेज थी। वहीं उन्होंने 'लघु सिद्धांत कौमुदी' कंठस्थ कर ली। यहाँ भी उन्होंने कई व्यायामशालाओं में नियमित जाकर अपना शारीरिक अभ्यास जारी रखा।

काशी यानी वाराणसी में पहली बार वह क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और यहीं उन्होंने क्रांति की बलिवेदी पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने का प्रण किया। उनकी मुलाकात क्रांतिकारी सावरगांवकर, वैशंपायन और चंद्रशेखर आजाद से हुई। कुछ ही समय में वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सक्रिय सदस्य बन गए। यहाँ उन्हें दद्‌यनाम 'रघुनाथ' के नाम से जाना गया। अब उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था–भारतमाता की आजादी, जिसके लिए कोई भी बलिदान छोटा था। वह हमेशा कहा करते थे कि भारतमाता को आजाद कराने के लिए हर लड़ाई में मैं सबसे आगे चलूँगा। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों में चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और जतिन दास उनके करीबी साथी थे। इनका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश और पंजाब था।

जाने-माने राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय 20 अक्टूबर, 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में एक शांतिपूर्ण जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। पुलिस ने बर्बरता से जुलूस पर लाठी चार्ज किया जिससे लालाजी के सिर पर प्राणघातक चोट लगी और 17 नवंबर को उनकी मृत्यु हो गई। तब के पुलिस अधीक्षक स्कॉट के प्रति सभी के मन में आक्रोश था। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी ने चंद्रशेखर आजाद, शिवराम राजगुरु, भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त और जयगोपाल को लालाजी की हत्या का बदला लेने की जिम्मेदारी दी। 17 दिसंबर, 1928 को एक गुप्त योजना के तहत भगतसिंह और राजगुरु सांडर्स के घर के सामने टहलने लगे। बटुकेश्वर दत्त अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गए मानो वह खराब हो गई हो। जयगोपाल को स्कॉट के आने का इशारा करना था। गलती से उसने उप पुलिस अधीक्षक जे० पी० सांडर्स के आने पर इशारा कर दिया। नतीजन वही मारा गया।

सभी क्रांतिकारी बच निकले और गुप्त रूप से रहने लगे। राजगुरु भगत सिंह के नौकर का भेष धारण कर लाहौर से निकल भागे और उन्हें लखनऊ में छोड़कर खुद भूमिगत हो गए। वह कुछ समय मुंबई और पुणे में भी रहे और वहाँ छिपकर अपनी गतिविधियाँ चलाते रहे। बाद में एक अन्य क्रांतिकारी घटना-असेंबली बम कांड में भगत सिंह और उनके कुछ साथी पकड़े गए। तब उस मामले की सुनवाई और जाँच के दौरान अंग्रेजों के सामने सांडर्स की हत्या का राज खुला और पुलिस ने 30 सितंबर, 1929 को पूना में राजगुरु को गिरफ्तार कर लिया।

वहाँ से उन्हें लाहौर भेज दिया गया। उसी जेल में भगतसिंह और सुखदेव भी बंदी थे। यहाँ इन तीनों ने राजनीतिक बंदी होने के नाते अपने कुछ हक माँगे और उन्हें न माने जाने पर भूख हड़ताल कर दी। वे अपने लिए अच्छा खाना, अखबार, कागज, कलम, शाम को ज्यादा देर तक कोठरियों से बाहर रहने जैसी सुविधाएँ माँग रहे थे। लंबी हड़ताल के बाद आखिर अंग्रेजों को उनकी माँगें माननी पड़ीं।

राजगुरु ने अपने मामले की पैरवी खुद की। सात अक्टूबर, 1930 को भगतसिंह और सुखदेव के सा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई और इसके लिए 24 मार्च, 1931 का दिन तय किया गया। आम तौर प फाँसी के लिए सुबह का समय तय होता था। लेकिन अंग्रेज अधिकारी इन तीनों से इतने डरे हुए थे कि निश्चि समय से एक दिन पहले 23 मार्च की शाम सात बजकर 33 मिनट के आसपास उन तीनों को चुपचाप जेल भीतर फाँसी पर चढ़ा दिया गया। फाँसी का फंदा चूमने के ठीक पहले तक भी इन तीनों वीरों के मुँह से निक 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे पूरी जेल में गूँज रहे थे।

शब्दार्थ

प्रख्यात = प्रसिद्ध; उपवास = व्रत; सर्वस्व = सबकुछ; तिरस्कार = अनादर; न्यौछावर = बलिदान; कंठस्थ =याद; कुशाग्र =तेज; बलिष्ठ =बलवान।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) राजगुरु का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ख) बचपन से ही राजगुरु पर किसका प्रभाव पड़ा?

(ग) आदिगुरु की शिक्षाओं से अभिभूत बालक शिवराम ने क्या किया?

(घ) लालाजी की मृत्यु कब और कैसे हुई?

(ङ) राजगुरु, भगतसिंह व सुखदेव को एक दिन पहले फाँसी क्यों दी गई?

२. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

- पूना
- पैरवी
- कर्मचारी
- कुशाग्र
- भीमा

(क) शिवराम बचपन से ही __________ बुद्धि के थे।

(ख) गाँव से बहने वाली __________ नदी में तैरकर राजगुरु ने अपने शरीर को बलिष्ठ बनाया।

(ग) राजगुरु के बड़े भाई दिनकर अंग्रेज सरकार के __________ थे।

(घ) 30 सितंबर, 1929 को __________ में राजगुरु को गिरफ्तार किया गया।

(ङ) राजगुरु ने अपने मामले की __________ खुद की।

३. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) राजगुरु के माता-पिता का नाम नारायण और पार्वती देवी था। ◯

(ख) राजगुरु मित्रों के साथ कबड्डी खेलते थे। ◯

(ग) राजगुरु एक समाज-सुधारक थे। ◯

(घ) लालाजी की मृत्यु सिर पर प्राणघातक चोट लगने से हुई। ◯

(ङ) राजगुरु, सुखदेव व चंद्रशेखर ने अंग्रेज अध्यक्ष जे० पी० सांडर्स की हत्या की। ◯

४. सही जोड़े बनाइए–

* राजगुरु की प्रारंभिक शिक्षा	* त्याग कर उपवास किया।
* राजगुरु को शारीरिक	* का इशारा करना था।
* पाँच दिन तक अन्न-जल	* रिपब्लिकन आर्मी
* जयगोपाल को स्कॉट के आने	* व्यायाम आदि करने में बहुत आनंद आता था।
* हिंदुस्तान सोशलिस्ट	* गाँव की ही मराठी प्राथमिक शाला में हुई।

व्याकरण-ज्ञान

१. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए–

सरवसव	=	__________	शुदधी	=	__________
राजगूरु	=	__________	जगत् गुरु	=	__________
शँकराचाग्र	=	__________	रिपबलिकन	=	__________
कनठसथ	=	__________	सामरथय	=	__________

२. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए–

कम शब्दों के माध्यम से अधिकाधिक अर्थ को व्यक्त करने की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की जानकारी आवश्यक है; जैसे–

जो कभी न मरे	अमर
क्रांति करने वाला	क्रांतिकारी
(क) जिसकी बराबरी कोई दूसरा न कर सके	__________

(ख) जो कार्य छोड़ा न जा सके ____________

(ग) जिसका नाम न हो ____________

3. निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए–

कर = ____________ ____________ ____________

कण = ____________ ____________ ____________

गुरु = ____________ ____________ ____________

पत्र = ____________ ____________ ____________

आन = ____________ ____________ ____________

दंड = ____________ ____________ ____________

4. निम्नलिखित वाक्यों के सामने उनके काल लिखिए–

(क) राजगुरु को शारीरिक व्यायाम करने में बड़ा मजा आता था।

(ख) आज गुरु, शिष्यों को पढ़ाएँगे। ____________

(ग) शंकराचार्य भाषण दे रहे हैं। ____________

(घ) उसी जेल में सुखदेव व भगतसिंह बंद थे। ____________

(ङ) राजगुरु को आज भी याद किया जाता है। ____________

(च) अपराधियों को कल सजा सुनाई जाएगी। ____________

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) मध्यवर्गीय = ____________________________

(ख) प्रख्यात = ____________________________

(ग) उपवास = ____________________________

(घ) नेतृत्व = ____________________________

(ङ) हड़ताल = ____________________________

योग्यता-विस्तार

- पुस्तकालय में जाकर अन्य क्रांतिकारियों की जीवनी पढ़िए व अपने मित्रों से चर्चा कीजिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को 'लाल-बाल-पाल' के नाम से प्रसिद्ध स्वाधीनता-संग्राम के इन नेताओं की जानकारी दें।

5 विमल इंदु की विशाल किरणें

चंद्रमा की रोशनी जिसे चाँदनी भी कहते हैं, अत्यंत शीतल व मन को आनंद प्रदान करने वाली होती है। प्रस्तुत कविता में कवि जयशंकर प्रसाद उन्हीं का वर्णन अपने शब्दों में बिल्कुल अलग ही रूप में कर रहे हैं।

विमल इंदु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनंत माया,
जगत् को लीला दिखा रही हैं।।

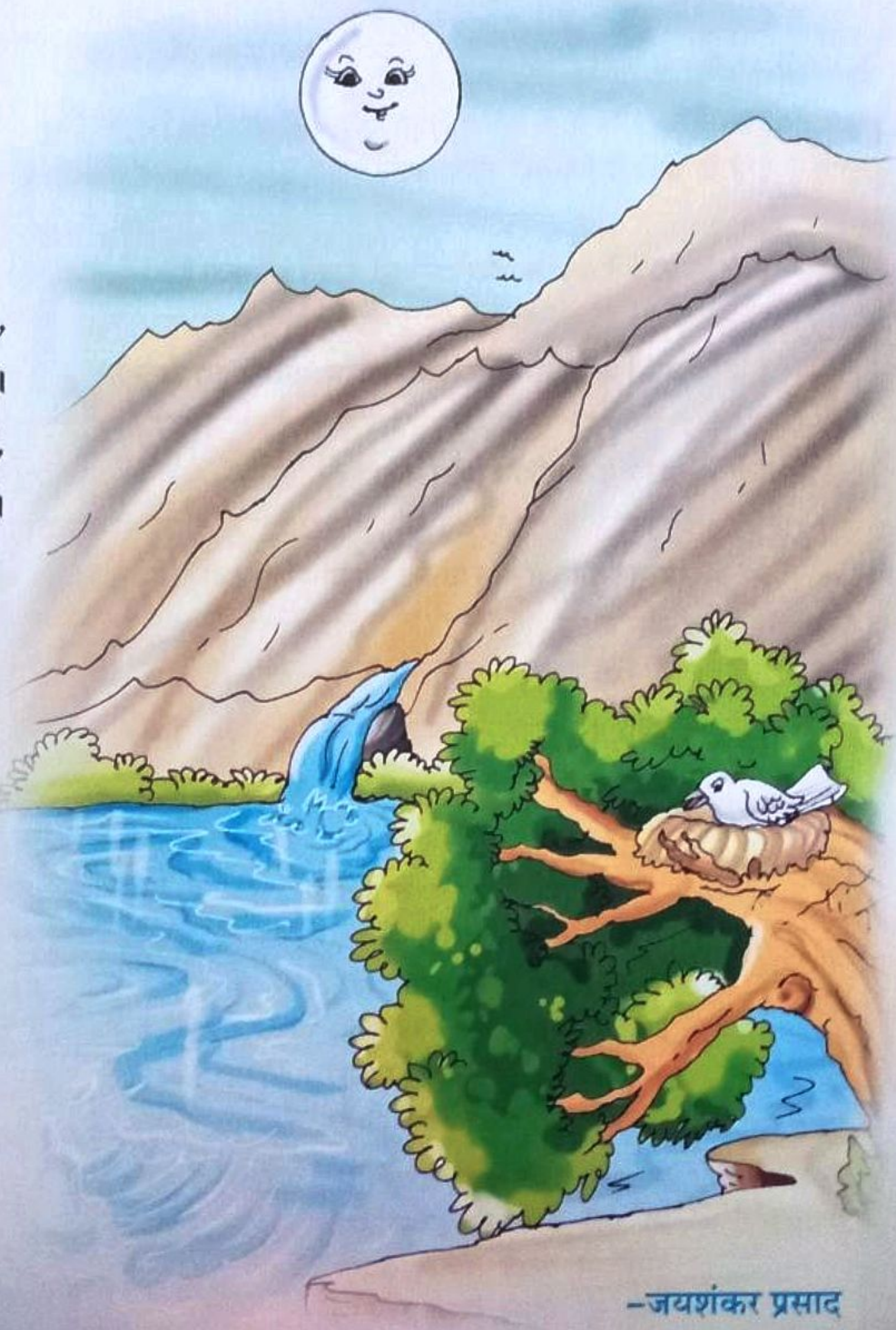

प्रसार तेरी दया का कितना,
ये देखना हो तो देखे सागर।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंग-मालाएँ गा रही हैं।

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना
वो देख सकता है चंद्रिका को।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ,
निनाद करती ही जा रही हैं।।

जो तेरी होवे दया दयानिधि
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही हैं।

–जयशंकर प्रसाद

शब्दार्थ

अनादि = जिसका कोई आरंभ न हो; अनंत = जिसका कोई अंत न हो; जगत् = संसार; सागर = समुद्र; प्रशंसा = बड़ाई; त[illegible] मालाएँ = लहरों का समूह; स्मित = मंद-मंद हँसना; चंद्रिका = चाँदनी; निनाद = गुंजार, ध्वनि; दयानिधि = दया का भंडा[illegible] मनोरथ = इच्छा, अभिलाषा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कवि ने किसकी लीला अनंत बताई है?

____

(ख) कवि ने दया का फैलाव कहाँ देखने को कहा है?

____

(ग) कवि के अनुसार किसका मनोरथ अवश्य पूरा होता है?

____

(घ) कवि ने दयानिधि किसे कहा है?

____

(ङ) प्रस्तुत कविता के रचयिता का नाम लिखिए।

____

2. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए-

प्रसार तेरी ______________
ये देखना ______________ ।
______________ प्यारे,
______________ गा रही हैं॥

3. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

(क) विमल इंदु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनंत माया,
जगत् को लीला दिखा रही हैं।

(ख) जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही हैं॥

संदर्भ (क) ____________________

व्याख्या ____________________

____

____

संदर्भ (ख) ____________________

व्याख्या ____________________

____

____

सही जोड़े बनाइए–

* तुम्हारा स्मित हो	* जा रही हैं।
* वो देख सकता है	* धुन में नदियाँ।
* तुम्हारे हँसने की	* जिसे निरखना।
* निनाद करती ही	* चंद्रिका को।

याकरण-ज्ञान

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

जगत्	= ______	सागर	= ______
नदी	= ______	दयानिधि	= ______
मनोरथ	= ______	प्रकाश	= ______

निम्नलिखित स्वरों की मात्राओं के दो-दो शब्द लिखिए–

आ	(ा)	______	______
इ	(ि)	______	______
ई	(ी)	______	______
उ	(ु)	______	______
ऊ	(ू)	______	______
ऋ	(ृ)	______	______
ए	(े)	______	______
ऐ	(ै)		

ोग्यता-विस्तार

✤ आकाश में चंद्रमा अथवा लहराते हुए सागर का चित्र बनाइए।

ाक्षण-संकेत

ात्रों को जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी पुस्तकों से अवगत कराएँ।

नोबेल पुरस्कार विजेता मैडम क्यूरी क
समर्पित यह पाठ हमें उनके जीवन के कु
पहलुओं से परिचित करा रहा है। मैड
क्यूरी की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी क
है। उनकी सेवाओं के लिए यह संसार स
उनका ऋणी रहेगा।

6 मैडम क्यूरी

विज्ञान जगत् मैडम क्यूरी को सदैव याद रखेगा। मानव-कल्याण के लिए उन्होंने रेडियम तत्त्व की खोज की। फलस्वरूप सन् 1902 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मैडम क्यूरी का बचपन का नाम मान्या था। उनके पिता सुविख्यात वैज्ञानिक थे। मान्या अत्यंत जिज्ञासु स्वभाव की बालिका थीं। वह प्रायः अपने पिता की पुस्तकों और वैज्ञानिक वस्तुओं को उलट-पलट कर देखतीं और पिता से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछतीं कि यह क्या है? ऐसा क्यों है? ऐसा क्यों नहीं है?

उनके पिता सहज ढंग से मान्या को हर प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देते और प्यार से अधिक सीखने लिए प्रोत्साहित करते।

बाल्यावस्था में मान्या को पढ़ने-लिखने और सीखने की सभी सुविधाएँ प्राप्त थीं, किंतु बालिका उच्च शिक्षा देने के लिए उनके पिता के पास पर्याप्त धन नहीं था। मान्या विज्ञान की शिक्षा पूरी कर चाहती थीं। इसके लिए उन्होंने बच्चों को पढ़ाकर धन एकत्रित किया। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने फ्रांस सोबर्न विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। फ्रांस में उनका नाम मारिया पड़ गया। अब मारिया अ अध्ययन में लगन और श्रम से ऐसी जुटीं कि समय बीतने का पता ही न चलता। हर समय वह पुस्तकों अ परीक्षणों में अपना समय व्यतीत करने लगीं। अध्ययन के साथ-साथ वह अतिरिक्त काम करके अप पढ़ाई का खर्च भी पूरा करती थीं। उनका रहन-सहन बड़ा सादा था। सुविधाओं की चिंता किए बिना निरंतर परिश्रम करती रहीं। प्रयोगशाला में वैज्ञानिक उपकरणों के द्वारा नए-नए परीक्षण करतीं और उन परिणाम से कभी खुश होतीं और कभी फिर प्रयास करने के लिए अधूरा छोड़ देतीं। उन्हें कई ब असफलताओं का सामना भी करना पड़ा, किंतु वह निराश कभी नहीं हुईं। प्रयोगशाला में वह भट्टी मिट्टी के बरतनों में कोई-न-कोई द्रव्य पिघलाती हुई परीक्षणों में लगी रहतीं और उन्हें बड़े ध्यानपू देखकर अपनी कॉपी में कुछ लिखतीं।

इस प्रकार वह परिश्रम से गणित, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान का अध्ययन करती रहीं। प वर्ष उन्होंने भौतिक विज्ञान में प्रथम स्थान प्राप्त किया और दूसरे वर्ष गणित में द्वितीय स्थान प्राप्त कि मारिया को अपनी पढ़ाई के लिए हमेशा धनाभाव का सामना करना पड़ता था। किंतु उन्हें वैज्ञानिक ब का मार्ग खुला दिखाई देता था। इससे वह बहुत प्रसन्न थीं। अपने खर्चे की पूर्ति के लिए उन्हें कु अतिरिक्त कार्य भी करना पड़ता था।

इसी बीच मारिया का विवाह पेरिस में प्रोफेसर पियरे क्यूरी, जो एक प्रतिभावान वैज्ञानिक थे, से हो गया। विज्ञान में रुचि रखने वाली मारिया से विवाह करके वे बहुत प्रसन्न थे। दोनों वैज्ञानिक साथ-साथ अपना समय शोध-कार्यों में लगाने लगे। एक-दूसरे के सहयोग से वे प्रगति के मार्ग पर आगे-ही-आगे बढ़ते रहे। मारिया प्रोफेसर पियरे क्यूरी के साथ वैज्ञानिक खोजों के अतिरिक्त अपना कुछ समय घर के कार्यों में भी व्यतीत करती थीं। उनका रहन-सहन बहुत साधारण था। वह एक मामूली कमरे में रहती थीं। घर का सारा काम, साफ-सफाई तथा भोजन बनाना स्वयं अपने हाथों से करती थीं। विवाह के दो वर्षों बाद क्यूरी ने एक कन्या को जन्म दिया। अब उनका कार्यक्षेत्र कुछ अधिक बढ़ गया। घर के कार्यों के अतिरिक्त कन्या की देखभाल के लिए उन्हें पर्याप्त समय देना पड़ता था। फिर भी वह प्रोफेसर पियरे क्यूरी के साथ वैज्ञानिक खोजों

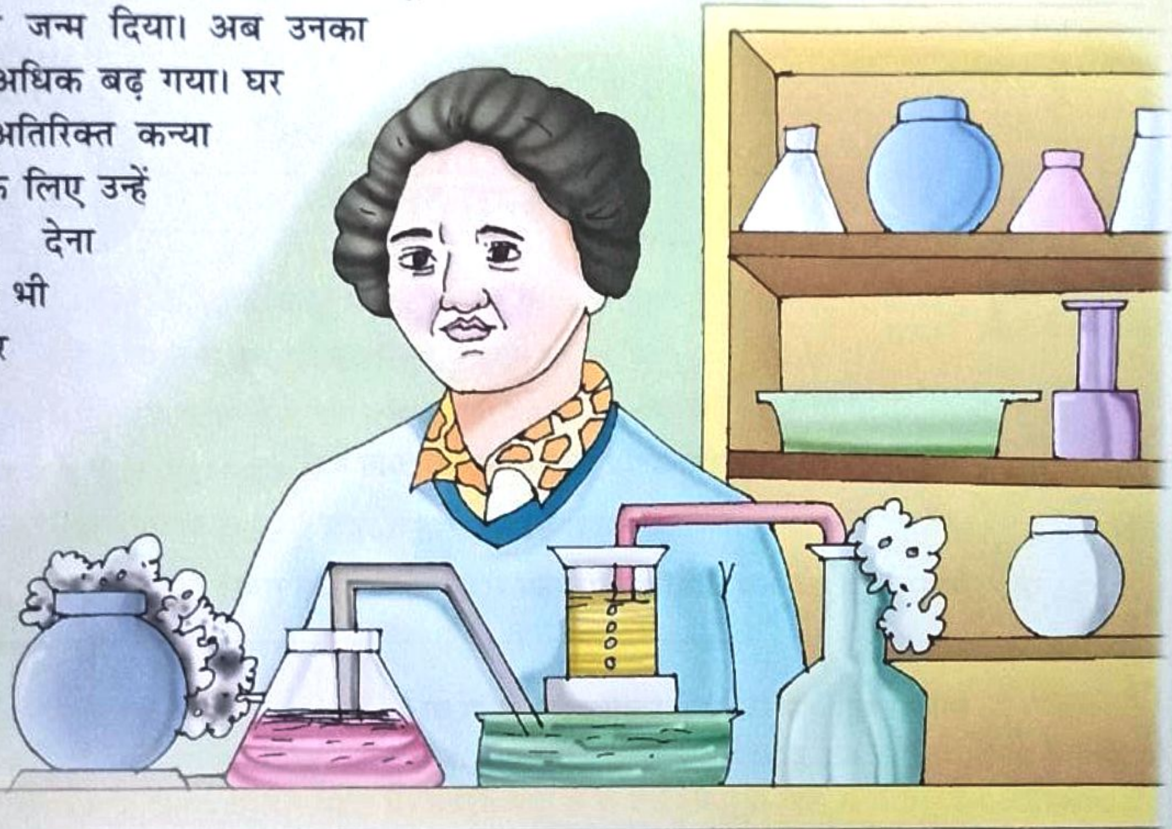

में निरंतर सहयोग देती रहीं। उन दिनों यूरेनियम से निकलने वाली किरणों के विषय में वैज्ञानिक जगत् में बड़ी चर्चा थी। कोई वैज्ञानिक यह नहीं समझ पा रहा था कि यूरेनियम से निकलने वाले प्रकाश का रहस्य क्या है? मारिया और प्रोफेसर क्यूरी ने भी कच्चे यूरेनियम से निकलने वाली प्रकाश-किरणों का रहस्य खोजने का शोध-कार्य प्रारंभ कर दिया। कुछ समय पश्चात् घोर श्रम और लगन के फलस्वरूप उन्हें अपने कार्य में सफलता प्राप्त हो गई। सन् 1902 ई० में उन्होंने यूरेनियम से नए तत्त्व रेडियम की खोज कर ली। रेडियम अत्यंत उपयोगी तत्त्व है जिसका उपयोग कैंसर जैसे असाध्य रोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ। इस खोज से मारिया और प्रोफेसर क्यूरी का नाम संसार भर में फैल गया। सन् 1903 में इस वैज्ञानिक खोज के लिए क्यूरी दंपत्ति को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

फ्रांस के एक व्यापारी ने रेडियम तत्त्व से औषधि निर्माण का अधिकार प्राप्त करने के लिए क्यूरी दंपत्ति को पर्याप्त धन देना चाहा, किंतु उन्होंने मानव-समाज की सेवा के लिए बिना कुछ मूल्य लिए उस

व्यापारी को रेडियम तत्त्व से औषधि निर्माण का अधिकार दे दिया। मानव-समाज के लिए कल्याण वैज्ञानिक खोज के लिए सारा संसार क्यूरी दंपत्ति को सदा याद रखेगा।

शब्दार्थ

कल्याण = भलाई; जिज्ञासु = जानने की इच्छा; बाल्यावस्था = बचपन; द्वितीय = दूसरा; प्रतिभावान = तीव्र बुद्धि वा
शोध-कार्य = किसी विषय पर खोज करना।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) मैडम क्यूरी कौन थीं तथा उनके बचपन का क्या नाम था?

____

(ख) मैडम क्यूरी को कब और किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

____

(ग) मारिया को किस विषय में प्रथम स्थान मिला था?

____

(घ) मारिया का विवाह किसके साथ हुआ?

____

(ङ) मारिया दंपत्ति ने रेडियम तत्त्व की खोज कब की?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) मान्या अत्यंत __________ स्वभाव की बालिका थीं।

(ख) मान्या के पिता उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर __________ से देते थे।

(ग) मैडम क्यूरी अतिरिक्त काम करके अपनी __________ का खर्च भी पूरा करती थीं।

(घ) मारिया का विवाह __________ में प्रोफेसर पियरे क्यूरी से हुआ।

(ङ) क्यूरी दंपत्ति को __________ पुरस्कार से सम्मानित किया।

- पढ़ाई
- संतोष
- जिज्ञा
- नोबेल
- पेरि

3. निम्नलिखित वाक्यों को पाठ के क्रमानुसार लिखिए–

(क) मारिया का विवाह पेरिस में प्रोफेसर पियरे क्यूरी, जो एक प्रतिभावान वैज्ञानिक थे, से हो गया।

(ख) मानव-कल्याण के लिए उन्होंने रेडियम तत्त्व की खोज की।

(ग) बाल्यावस्था में मान्या को पढ़ने-लिखने और सीखने की सभी सुविधाएँ प्राप्त थीं।

(घ) मैडम क्यूरी का बचपन का नाम मान्या था।

(ङ) विज्ञान जगत् मैडम क्यूरी को सदैव याद रखेगा।

____

____

____

____

____

सही वाक्य पर (✓) तथा गलत वाक्य पर (✗) का निशान लगाइए–

(क) मैडम क्यूरी का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। ◯

(ख) मैडम क्यूरी एक महान् वैज्ञानिक बनना चाहती थीं। ◯

(ग) क्यूरी के पिता एक वकील थे। ◯

(घ) क्यूरी दंपत्ति ने सन् 1902 में रेडियम तत्त्व की खोज की। ◯

याकरण-ज्ञान

पहला पद नाम पद

हिंदी में शब्द की आवृत्ति से घर-घर, हाथों-हाथ, घड़ी-घड़ी जैसे अव्ययीभाव समास बहुत बनते हैं और इस भाषा की यही समास-क्रिया बहुत समृद्ध है। प्रस्तुत पाठ में से ऐसे आवृत्ति वाले शब्द छाँटकर लिखिए–

______________ ______________

______________ ______________

______________ ______________

______________ ______________

______________ ______________

निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द छाँटकर अलग लिखिए–

(क) मान्या अत्यंत जिज्ञासु स्वभाव की बालिका थीं। ______________

(ख) वह परीक्षणों में अपना समय व्यतीत करने लगीं। ______________

(ग) विज्ञान जगत् मैडम क्यूरी को सदैव याद रखेगा। ______________

(घ) प्रोफेसर पियरे क्यूरी के साथ वैज्ञानिक खोजों में निरंतर सहयोग देती रहीं। ______________

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए व संधि का नाम लिखिए–

	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
धनाभाव =	________	________
पुस्तकालय =	________	________
अल्पायु =	________	________
बाल्यावस्था =	________	________
विद्यालय =	________	________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) पर्याप्त = ________

(ख) प्रयोगशाला = ________

(ग) परिणाम = ________

(घ) जिज्ञासु = ________

(ङ) द्वितीय=

योग्यता-विस्तार

✣ कुछ आविष्कार व आविष्कारकों की सूची बनाइए–

आविष्कार	आविष्कारक
________	________
________	________
________	________
________	________
________	________
________	________

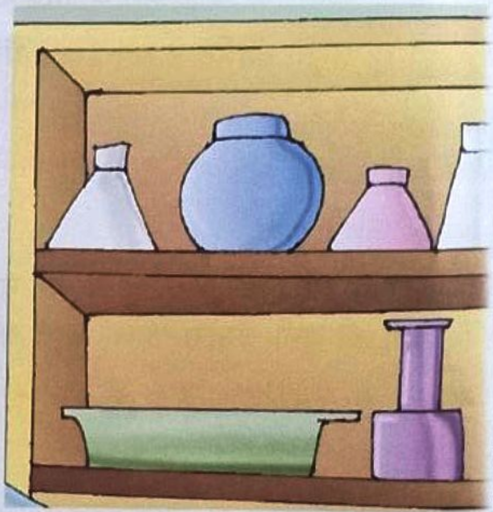

शिक्षण-संकेत

छात्रों को उन भारतीय वैज्ञानिकों की जानकारी प्रदान करें जिन्हें विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

7 आगरा की सैर

"सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ। जिंदगानी गर रही तो, नौजवानी फिर कहाँ।। मशहूर शायर की ये पंक्तियाँ जितनी सुंदर हैं, उतनी ही सही भी हैं। घूमने-फिरने का अपना अलग ही आनंद है। अलग-अलग दर्शनीय स्थलों की यात्रा में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धन भी होता है। प्रस्तुत पाठ में देश के मशहूर शहर आगरा की सैर का वर्णन है।

रामाकृष्ण पुरम, नई दिल्ली

दिनांक : 14 जून, 2010

प्रिय मित्र सुमित,

आशा है तुम स्वस्थ और सुखी होगे। पिछले सप्ताह 7 जून, 2010 को हम सपरिवार आगरा की सैर पर ाए थे। आगरा की सैर का हमने खूब आनंद लिया। उस यात्रा का वृत्तांत तुम्हारे लिए पत्र में लिख रहा हूँ।

दिनांक 7 जून, 2010 को प्रातः तैयार होकर टैक्सी द्वारा हम हजरत निजामुद्दीन स्टेशन के लिए वाना हुए। परंतु रास्ते में टैक्सी के टायर ने धोखा दे दिया। ड्राइवर ने बहुत जल्दी टायर बदल दिया। हम ाब गाड़ी छूट जाने के डर से परेशान थे। गाड़ी छूटने से दो मिनट पहले ही हम पहुँचे। हमारी सीटें आरक्षित ीं। जैसे ही हमने रेल के डिब्बे में प्रवेश किया, गाड़ी चल पड़ी। सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। ाबने चैन की साँस ली।

ताज एक्सप्रेस के डिब्बे सुंदर और उसकी ीटें गद्देदार थीं। दीदी तो पत्रिका पढ़ने लगी। मैं ाहर के दृश्यों का आनंद उठाने लगा। हरे-भरे ृक्ष दौड़ते दिखाई दिए। खेतों में हरियाली थी। ख के खेत भी पीछे की तरफ भाग रहे थे।

हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से चलकर गाड़ी थुरा जंक्शन पर रुकी। खोमचेवालों की भीड़ डब्बे के सामने जम गई। मथुरा के पेड़े बहुत वादिष्ट होते हैं। किसी ने करारी आवाज लगाई, मथुरा के पेड़े', दीदी उछल पड़ी। पत्रिका को सने एक ओर पटक दिया। हमने मथुरा के पेड़ों का एक डिब्बा लिया।

मम्मी ने खोमचेवाले को पैसे दिए। दीदी ने सबको पेड़े दिए। हमने बड़े-मजे से मथुरा के पेड़े खाए। गाड़ी चल पड़ी, रास्ते में मथुरा के कई

मंदिर भी पड़े। किसी मंदिर में भजनों का कैसेट बजता सुनाई पड़ा तो किसी में प्रवचन की आवाजें।

शीघ्र ही गाड़ी आगरा छावनी के स्टेशन पर रुकी। पिताजी ने दिनभर के लिए एक टैक्सी किराये प
ली और सबसे पहले हम ताजमहल को देखने पहुँच गए।

'ताजमहल' विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इसकी ऊँचाई ने इसे और भी भव्य ब
दिया है। ताजमहल का मध्य वाला गुंबद ताजमहल की सुंदरता में चार चाँद लगा देता है। ताजमहल
प्रांगण में हरी घास और सुंदर पौधों के बीच फव्वारों का आनंद तो बस देखकर ही लिया जा सकता है। इ
बनवाने में बीस हजार मजदूर व शिल्पकार 22 वर्ष तक लगे रहे एवं साढ़े तीन करोड़ रुपये खर्च हुए।

यहाँ विदेशी पर्यटकों की भीड़ थी। एक जापानी पर्यटक से हमने अंग्रेजी भाषा में बातें कीं। दीदी ने उ
बताया कि मुगल सम्राट शाहजहाँ ने इसे अपनी बेगम मुमताज़ महल की स्मृति में बनवाया था। बादश
अपनी बेगम को बहुत प्रेम करता था। कहते हैं ताजमहल चाँदनी रात में बहुत सुंदर दिखता है। सच मान
मित्र दिन में सूर्य कि किरणों से ताजमहल नगीने-सा चमकता रहता है। यह इतना सुंदर है कि इसका चि
या मॉडल भी इसकी सुंदरता की समानता नहीं कर सकता। इसके सामने अन्य सभी भवनों का सौंद
फीका पड़ जाता है।

इसके पश्चात् टैक्सी द्वारा हम आगरा का किला देखने गए, जिसे बादशाह अकबर ने यमुना नदी के किनारे बनवाया था। यह धनुष के आकार का है। यह लाल पत्थरों की इमारत है।

इस किले में 'जहाँगीरी महल' अकबर की कला का नमूना है। 'खासमहल' सफेद संगमरमर से बना शाहजहाँ की कला का आदर्श है। खासमहल के पास ही शीशमहल है। यह शीशे से निर्मित सुंदर महल है। इन महलों में की गई चित्रकारी व नक्काशी बड़ी मनमोहक है।

आगरा के किले का एक अन्य आकर्षण मोती मस्जिद है। यह भी संगमरमर से बनी और सजी है। इ
पर कुरान शरीफ की आयतें भी अंकित हैं। पच्चीकारी और नक्काशी से बने बेलबूटे इसे और भी सुं
बना देते हैं। हम सभी इन महलों को देखकर दंग रह गए।

सैर-सपाटा करते-करते अब ह
सचमुच थक गए थे। थके-हारे टैक्सी
पास आए। रास्ते में एक होटल में जलपा
किया और फतेहपुर सीकरी के लिए रवा
हो गए। यहाँ सूफी संत शेख सलीम चिश
की मजार पर कुछ लोग कव्वाली गा रहे
हमने यहाँ कुछ देर रुककर कव्वाली क
आनंद लिया। पंच-महल और हवामहल भ

बहुत सुंदर हैं। लौटते हुए हम राधा-स्वामी मंदिर देखने गए। यहीं पास में पर्यटकों के लिए भेंट-वस्तुओं की कई दुकानें हैं। यहाँ 'ताजमहल' के बहुत सुंदर नमूने मिलते हैं। नाचती गुड़िया भी मनमोहक होती है। बच्चों के खिलौनों से दुकानें भरी पड़ी हैं। मम्मी-पापा से कहकर तुम्हारे लिए ताजमहल का एक सुंदर-सा नमूना (मॉडल) खरीद लिया है। तुम्हारी छोटी बहन मिनी के लिए ढोल बजाता भालू और नाचता बंदर भी ले लिया है।

इन्हें हम तुम्हारे जन्मदिन पर देहरादून लेकर आएँगे। शेष मंगल है, विस्तृत बातें मिलने पर होंगी।

तुम्हारा प्रिय मित्र
यश चौधरी

सेवा में, सुमित कुमार, डी 52, राजपुर रोड, देहरादून (उत्तराखंड)

शब्दार्थ

सपरिवार = परिवार के सभी सदस्य; यात्रा वृत्तांत = यात्रा का वर्णन; आरक्षित = किसी के लिए पहले से निश्चित किया हुआ; दृश्यों = नजारों; भव्य = बड़ा, विशाल; मध्य = बीच; प्रांगण = आँगन; पर्यटक = मौज-मस्ती के लिए यात्रा करने वाले लोग; स्मृति = याद; आयतें = कुरान के वाक्य; स्वादिष्ट = जायकेदार।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) ताजमहल किस बादशाह ने और क्यों बनवाया था?

____

(ख) ताजमहल बनवाने में कितने मजदूर व शिल्पकार लगे?

____

(ग) ताजमहल बनवाने में कितना खर्च आया था?

____

(घ) आगरा का किला किस नदी के किनारे है तथा यह किस आकार का है?

____

(ङ) फतेहपुर सीकरी में किसकी मजार है?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) रास्ते में टैक्सी के ________ ने धोखा दे दिया।

(ख) गाड़ी छूटने से ________ मिनट पहले ही हम पहुँचे।

(ग) हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से चलकर गाड़ी ________ जंक्शन पर रुकी।

(घ) सूर्य की किरणों से ताजमहल ________ सा चमकता रहता है।

(ङ) खासमहल के पास ________ है।

- मथुरा
- शीशमहल
- टायर
- नगीने
- दो

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) यश ने यह पत्र अपने मित्र सुमित को लिखा। ◯

(ख) पत्र में कानपुर की सैर का वर्णन किया गया है। ◯

(ग) यश ने सुमित की बहन के लिए ढोल बजाता भालू खरीदा। ◯

(घ) हमनें जापानी पर्यटक से हिंदी में बातें की। ◯

4. सही जोड़े बनाइए–

* हमने बड़े मजे से	* एक माना जाता है।
* ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से	* धनुष के आकार का है।
* अकबर द्वारा बनवाया गया 'आगरा का किला'	* नई राजधानी का निर्माण करवाया।
* अकबर ने फतेहपुर सीकरी में	* मथुरा के पेड़े खाए।

व्याकरण-ज्ञान

1. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

सुसज्जा = सुसज्जित   प्रकाश = ________

प्रवाह = ________   अंक = ________

2. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए–

सौन्दरय = ________   आर्कषण = ________

परयटक = ________   पथ्थरों = ________

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

गुड़ियाँ = ________   गाड़ी = ________

खिलौना = ________   किला = ________

दुकानें = ________   मस्जिद = ________

योग्यता-विस्तार

✤ 'ताजमहल' आधुनिक विश्व के आश्चर्यों में से एक है। अपने अध्यापक व माता-पिता की सहायता से विश्व अन्य आश्चर्यों की जानकारी प्राप्त कीजिए।

शिक्षण-संकेत

सभी छात्रों से पूछें कि वे कौन-कौन से पर्यटक स्थलों पर गए हैं तथा उनसे वहाँ के बारे में प्रश्न पूछें।

8 गुलाब सिंह

वीर कभी नहीं मरते, वे सदा के लिए अमर हो जाते हैं और जब ऐसे वीरों की कथा को शब्द मिल जाएँ तो वे जन जन की कहानी बन जाते हैं। प्रस्तुत पाठ में सुप्रसिद्ध लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान ने हमें ऐसे ही एक वीर बालक से परिचित कराया है।

दिन और तारीख की जरूरत नहीं। जब हम अमर अंत की कहानी कहने वाले हैं तब एक दिन और एक रीख को पकड़कर क्यों चलें?

उसके घर में माता-पिता और एक गुड़िया-सी बहन थी। वह सारे घर का दुलारा था।

एक दिन की बात है। वह बीमार पड़ा। माँ ने उसका खाना बिल्कुल बंद कर दिया था। पर उसका बार-र कुछ खाने को माँगना, छोटी बहन से न सहा गया। वह चुपके से गुड़ और चने चुरा लाई और खिला या अपने भाई को। उसके बाद भैया का बुखार बढ़ गया पर वह तो खिला चुकी थी। अपने भाई के तोष के लिए वह माँ-बाप का गुस्सा भी सहने को तैयार थी। पर भाई ने गुड़-चने की बात किसी को न ताई। धीरे-धीरे रोग चला गया पर भाई के मन पर बहन के प्रेम की छाप छप गई।

ऐसी एक नहीं, अनेक ातें-बहन की, माँ की, ाता की, उसके मन पर पी थीं। वह कभी उनसे ड़ता-झगड़ता भी, पर ाँखों के आँसू और मन ; रंग, उसके मन पर पी इन तस्वीरों को धो न के।

एक दिन ऐसी हवा बही कि मुरझाए हुए दिलों में नई जान आ गई। यह हवा उमंगों की हवा थी। बड़ा ारी जुलूस निकलना था। कौमी झंडे का जुलूस था वह। पर बादशाह का हुक्म था कि जुलूस न निकले। हर में आतंक छा गया। बड़ा अत्याचारी था वह बादशाह!

''बड़ा आया बादशाह! क्यों न निकले जुलूस? क्यों न निकले हमारा झंडा!'' भाई ने बहन से कहा।

बहन बोली, ''कौन है यह बादशाह?''

भैया ने कहा, ''ऊँह, होगा कोई!''

बहन ने पूछा, ''क्यों न निकले जुलूस? क्यों न निकले झंडा?''

भाई कटु स्वर में बोला, ''हमारा देश बादशाह का गुलाम जो है।''

उत्तर था–"तब तो जरूर निकले जुलूस! हम जरूर फहराएँगे अपना झंडा! देखते हैं कौन रोकता है हमें!"

झंडे की तैयारी होने लगी। बहन ने अपनी पुरानी ओढ़नी फाड़कर झंडा बना लिया।

लाल-हरा रंग भी चढ़ गया। भाई ने उसे खेलने के डंडे से बाँध लिया। झंडा तैयार था।

अब भाई झंडा लेकर चला। "अरे भाई! जाते कहाँ हो? हम भी साथ चलेंगे।" बहन आग्रह से बोली।

"पर बहन, बड़ी दूर जाना है। तुम थक जाओगी।"

"नहीं भैया!"

"नहीं बहन!"

"जुलूस कौन बनाएगा? तुम झंडा उठाना, हम जुलूस बनाकर पीछे-पीछे चलेंगे।"

"नहीं रानी, तुम जुलूस नहीं....तुम एक काम करो। हमें रोली का तिलक लगाकर विदा करो ज राजकुमारी अपने भाई राजकुमार को विदा करती है।"

बहन ने खुशी से किलकारी के साथ ताली बजाई और दौड़कर थोड़ी-सी रोली, थोड़े-से चावल स लाई। थाली में एक दीया भी जल रहा था। भाई की आरती उतारने लगी। मुँह के चारों तरफ घूमती था एक आभामंडल बनाने लगी। उसने देवी-देवताओं के चित्रों में भी वैसा ही आभामंडल देखा था। भाई चारों तरफ वैसा ही आभामंडल देखकर वह बहुत खुश हुई।

भाई के माथे पर तिलक लगाया, चावल बिखराए। तब भाई ने बहन के पैर छुए और विदा ली। बहन भाई के सिर पर हाथ फेरा और बलैयाँ लीं।

अब वह झंडा लेकर चला। बहन दरवाजे पर खड़ी देखती रह गई। कहानियों में राजकुमारी इसी त विदा करती है। वह झंडे को लहराते हुए ले जाते भाई को दूर तक देखती रही।

कुछ दूर जाने पर बादशाह के सिपाहियों ने झंडेवाले को रोका। वह न रुका। बादशाह के सिपाहियों गोली चला दी। वह गिरा। झंडा न गिरा। वह उसके हाथ में था। गोली चलते देख कोई उसके पास न आ बहन ने भाई को गिरते देखा, वह दौड़ पड़ी। भाई खून से लथपथ पड़ा था। वह पुकारती रही, "भैं भैया!"

भाई के प्राण मानो यह अमृतवाणी सुनकर लौट पड़े। वह बोला, "तू आ गई, यह झंडा ले!"

बहन ने झंडा थाम लिया। भाई चला गया। बहुत रोई पर झंडा हाथ में उठाए रही। बादशाह के सिपा मानो गढ़ जीतकर चले गए। लोग भागे आए। उन्होंने भाई की देह उठाई। आगे-आगे झंडा लिए बहन चल लगी।

बादशाह का हुक्म था–जुलूस नहीं निकलेगा। जुलूस निकला। झंडा नहीं निकलेगा। झंडा निकला और बड़ी शान से निकला।

यह बालक था–गुलाब सिंह, जो अपनी सुगंध बिखेरकर चला गया।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

दुलारा = प्यारा; ओढ़नी = चुनरी; उमंगों = खुशियों; आग्रह = निवेदन; बादशाह = राजा; किलकारी = हँसी; हुक्म = आदेश; आभामंडल = प्रकाश; कटु = कड़वे; कौमी = स्वदेशी।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) माँ लड़के को खाना क्यों नहीं दे रही थी?

____

(ख) लड़के को खाना किसने खिलाया और उसका क्या परिणाम हुआ?

____

(ग) बादशाह का क्या हुक्म था?

____

(घ) बहन ने जुलूस के लिए झंडा कैसे बनाया?

____

(ङ) जुलूस किसने निकाला?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

(क) वह सारे घर का ______________ था।

(ख) पर भाई ने ______________ की बात किसी को न बताई।

(ग) शहर में ______________ छा गया।

(घ) बहन ने खुशी से ______________ के साथ ताली बजाई।

(ङ) भाई के प्राण मानो यह ______________ सुनकर लौट पड़े।

- अमृतवाणी
- किलकारी
- गुड़-चने
- आतंक
- दुलारा

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) लड़का बीमारी का नाटक कर रहा था।

(ख) कौमी झंडे का जुलूस था।
(ग) झंडा माँ ने बनाया था।
(घ) जुलूस में जाने से पहले बहन ने भाई को तिलक लगाया।
(ङ) लड़के को गोली आतंकवादियों ने मारी थी।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

बादशाह = ________ गुड़िया = ________
बहन = ________ राजकुमार = ________
माता = ________ बालक = ________

2. पढ़िए, समझिए व लिखिए–

झंडा = झण्डा सुगंध = ________
डंडे = ________ अंत = ________
संतोष = ________ बसंत = ________

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

माँ = ________ ________ ________
झंडा = ________ ________ ________
अमृत = ________ ________ ________
बादशाह = ________ ________ ________
आँख = ________ ________ ________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) आभामंडल = ________
(ख) अमृतवाणी = ________
(ग) जुलूस = ________
(घ) दुलारा = ________
(ङ) संतोष = ________

योग्यता-विस्तार

✤ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले कुछ वीर बालकों के नामों की सूची बनाइए।

शिक्षण संकेत

छात्रों को सुभद्राकुमारी चौहान की वीररस की कविताओं के साथ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराएँ।

9 साहसी कुलूमू

दूसरों की सेवा करने के लिए मन में सेवा भाव और साहस अवश्य होने चाहिए क्योंकि सेवा या सहयोग का अर्थ मात्र आर्थिक सहायता ही नहीं है अपितु किसी को मुसीबत से बचाना भी इसी श्रेणी की सेवा है। प्रस्तुत पाठ ऐसे ही एक नवयुवक की कहानी है।

एक समय की बात है। अफ्रीका के बलाका गाँव में कुलूमू नामक एक युवक रहता था। दूसरों की मदद करना उसका स्वाभाविक गुण था। गाँव के लोग उसे बहुत आदर देते थे। जब भी संकट की घड़ी उनके सामने आती थी, निःसंकोच उसके पास चले जाते थे। वह भी उनके दुःखों को सुनता तथा उनकी मदद करता था। इसी कारण उसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी।

वहाँ का सरदार इस बात से बहुत नाराज था। वह एक स्वार्थी एवं लोभी व्यक्ति था। कुलूमू की लोकप्रियता को बढ़ते देखकर सरदार ने अपने लोगों से कहा, ''कुलूमू की लोकप्रियता को बढ़ने से रोकना होगा, नहीं तो यह एक दिन गाँव का सरदार बनकर बैठ जाएगा। हमारी शक्ति और सत्ता खत्म हो जाएगी।''

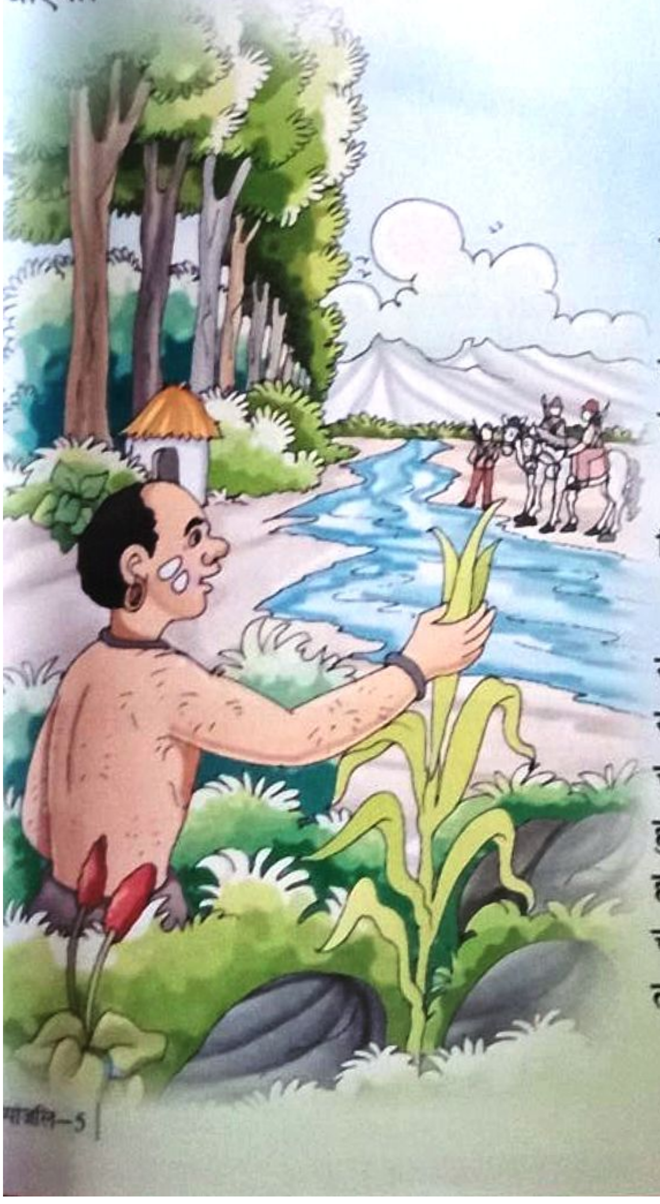

''हम भला इसमें क्या कर सकते हैं?'' लोगों ने कहा।

''तुम क्या नहीं कर सकते? हिम्मत ही जीवन है। तुम लोग साहस रखो।

मुझे सहयोग दो। जैसा मैं कहता हूँ, करते जाओ। एक दिन हम उसको पकड़कर खत्म कर देंगे और हमारा रास्ता साफ हो जाएगा, '' सरदार ने कहा।

सरदार की इस बात पर लोगों ने उसका साथ निभाने का वचन दिया।

सरदार ने आगे कहा, ''बहुत अच्छा। तो मेरी बात सुनो। इस समय बलाका गाँव के सभी लोग प्रसन्न और संतुष्ट दिखाई दे रहे हैं। मक्की काटने का समय हो चुका है। इस वर्ष अच्छी वर्षा होने से फसल भी अच्छी हुई है। वे लोग फसल के लोभ में वहीं पर होंगे। यही हमारे लिए सही समय है। हमें उन पर धावा बोल देना चाहिए। नहीं तो वे फसल इकट्ठा करके आम दिनों की तरह शिकार करने के लिए झाड़ियों में छिप जाएँगे।''

कुलूमू को इस घटना का पता चल गया। उसे बड़ा दुःख हुआ। वह मन-ही-मन बोला, ''यह जुल्मी सरदार बेकसूर लोगों की जान का दुश्मन बन गया है। मेरा क्या अपराध है जो मुझे मारना चाहता है? मुझे अपनी जीवनरक्षा करनी चाहिए। इसके लिए मुझे गाँव छोड़ देना चाहिए अन्यथा अपनी जान गँवानी पड़ेगी।'' उसने गाँव पर एक नजर डाली और उसे छोड़कर चला गया।

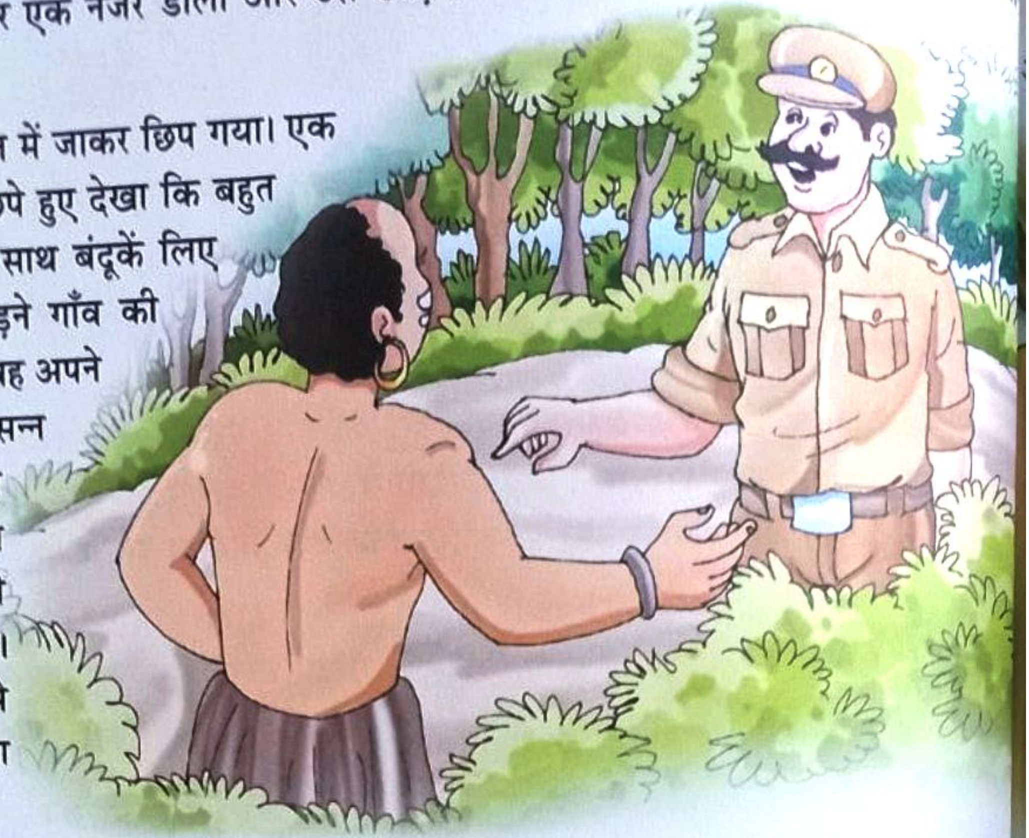

वह एक घने जंगल में जाकर छिप गया। एक दिन उसने झाड़ी में छिपे हुए देखा कि बहुत से व्यक्ति सरदार के साथ बंदूकें लिए हुए गुलामों को पकड़ने गाँव की ओर कूच कर रहे हैं। वह अपने निर्णय से बहुत प्रसन्न हुआ और सोचने लगा, 'कितना अच्छा हुआ जो मैं पहले ही गाँव से निकल आया। नहीं तो आज मुझे जान से हाथ धोना पड़ता।'

कुछ ही क्षणों में उसके दिमाग में उस सरदार के घिनौने कर्म घूमने लगे। वह गाँव की विनाश-ली की सोच में डूब गया। ये दरिंदे गाँव की बस्ती पर टूट पड़ेंगे। मर्दों, औरतों और बच्चों को पकड़कर रस्सियों से बाँध देंगे। जानवरों की दुर्दशा होगी। माता-पिता, भाई-बहन, बेटे-बेटियाँ, पति-पत्नी सब सब एक-दूसरे से अलग कर दिए जाएँगे। उन्हें जहाजों में भरकर समुद्र के पार ले जाया जाएगा और आजीवन गुलामी की जिंदगी जीनी पड़ेगी। सारा गाँव वीरान हो जाएगा।

गाँव के वीरान होने की कल्पना से उसका खून खौल उठा। उसने सोचा कि उसे कुछ-न-कुछ क चाहिए। केवल अपने स्वार्थ के कारण गाँव को वीरान नहीं बनने देना चाहिए। अपने लिए जीना कोई जी है? जो दूसरों के लिए जीते हैं, वे ही इंसान कहलाते हैं।

बस! वह साहसी कुलूमू झाड़ियों में से बाहर आया। वह गुलाम पकड़ने वालों के सामने सीना तान खड़ा हो गया। वे उस पर लपक पड़े और उसे अपने कब्जे में ले लिया।

जीत के नशे में झूमते हुए सरदार ने कहा, ''वाह! यह तो ताजा, मोटा और जानदार जवान है। इसकी बहुत कीमत मिल जाएगी।'' वह उससे प्रश्न करने लगा।

''तू किस गाँव का रहनेवाला है?''

''बलाका।''

बलाका नाम सुनते ही सरदार के कान खड़े हो गए और बोला, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है कुलूमू।"

कुलूमू नाम सुनकर सरदार बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोला, "तो क्या बलाका में तुम्हारे जैसे हृष्ट-पुष्ट और जानदार लोग रहते हैं? जल्दी से बलाका की ओर चलो।" इतना कहकर सरदार के आदमी उसे गाँव की ओर घसीटने लगे।

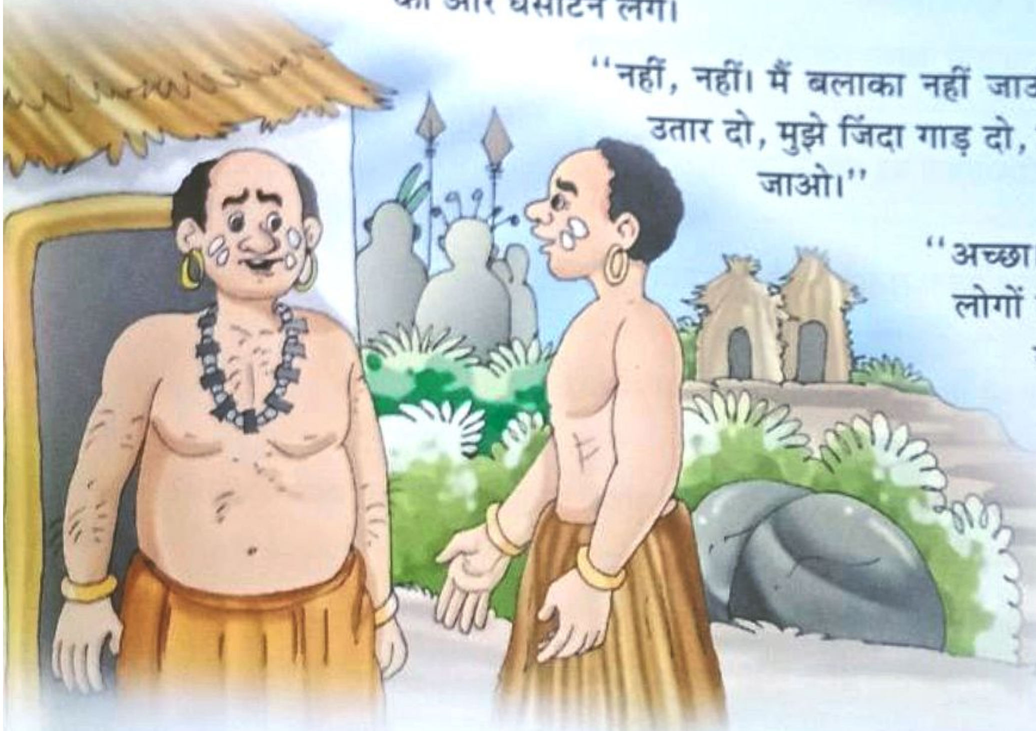

"नहीं, नहीं। मैं बलाका नहीं जाऊँगा, तुम चाहे मेरी खाल उतार दो, मुझे जिंदा गाड़ दो, परंतु मुझे बलाका मत ले जाओ।"

"अच्छा। कल तक तुम वहाँ के लोगों की मदद करने का नाटक करते थे। आज वहाँ चलने में तुम्हें क्या हर्ज है? तुम वहाँ के लोकप्रिय सरदार बनना चाह रहे थे। बताता हूँ तुम्हें कि सरदार कैसे बनते हैं।"

"नहीं, नहीं। आप मुझे गाँव मत ले जाइए," कुलूमू सहमकर चीख उठा।

"क्यों?" सरदार ने हैरानी से पूछा।

उसने काँपती जुबान से उत्तर दिया, "मैं प्लेग से मरना नहीं चाहता। गाँव में प्लेग फैला हुआ है। लोग मर रहे हैं। मैं तो जैसे-तैसे अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग निकला हूँ।"

प्लेग का नाम सुनकर सरदार और उसके सहयोगियों के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। साँस ऊपर-नीचे होने लगी। अपनी जान को खतरे में जानकर वे बोले, "इसे यहीं छोड़ दो और भाग चलो, नहीं तो इसके कारण हमें भी यह बीमारी लग जाएगी।"

वे उसे वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए। कुलूम अपनी सफलता पर प्रसन्न हुआ और अपने गाँव की ओर चल दिया।

शब्दार्थ

स्वार्थी = केवल अपने बारे में सोचने वाला; दुर्दशा = बुरी दशा; विनाश = समाप्त; आजीवन = पूरा जीवन; व्यतीत = बिताना; सहयोगी = साथ देने वाले; संकट = मुसीबत, परेशानी; घिनौने = बुरे; दरिंदे = हैवान; वीरान = सुनसान; सहमकर = डरकर; प्लेग = छूत की बीमारी (जो चूहों के मरने से फैलती है)।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कुलूमू कौन था तथा उसका स्वाभाविक गुण क्या था?

____

(ख) कुलूमू की लोकप्रियता का क्या कारण था?

____

(ग) कुलूमू की लोकप्रियता से सरदार को क्या खतरा हुआ?

____

(घ) कुलूमू ने गाँव की विनाशलीला के बारे में क्या सोचा?

____

(ङ) प्लेग बीमारी का नाम सुनकर सरदार व उसके आदमी कुलूमू को छोड़कर क्यों भाग गए?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

- वचन
- लोभी
- स्वार्थ
- प्लेग
- कल्प
- सीना

(क) सरदार एक ________ और ________ व्यक्ति था।

(ख) सरदार की बात पर लोगों ने उसका साथ निभाने का ________ दिया।

(ग) गाँव के वीरान होने की ________ से उसका खून खौल उठा।

(घ) कुलूमू गुलाम पकड़ने वालों के सामने ________ तानकर खड़ा हो गया।

(ङ) ________ का नाम सुनकर सरदार और उसके सहयोगियों के पैरों के नीचे से जमीन खिसक ग

3. किसने कहा? किससे कहा?

(क) ''मेरा क्या अपराध है।'' ________ ने ________

(ख) ''तू किस गाँव का रहने वाला है।'' ________ ने ________

(ग) ''मैं प्लेग से मरना नहीं चाहता।'' ________ ने ________

(घ) ''एक दिन हम उसको पकड़कर खत्म कर देंगे। ________ ने ________

व्याकरण-ज्ञान

लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता, सरसता व भाषा के अर्थ एवं भाव का स्पष्टीकरण होता ही है, साथ ही हृदय में उठे हुए भावों का भी पूर्णतः ज्ञान हो जाता है।

उदाहरण : खून खौल उठा। जिसका अर्थ है–अत्यधिक क्रोध आना।

पाठ में आए कुछ मुहावरों को छाँटकर यहाँ लिखिए व अर्थ भी स्पष्ट कीजिए–

मुहावरे	अर्थ
______	______
______	______
______	______

निम्नलिखित संयुक्ताक्षरों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द लिखिए–

क् + ष = क्ष = ______ ______

त् + र = त्र = ______ ______

श् + र = श्र = ______ ______

ज् + ञ = ज्ञ = ______ ______

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

जमीन = ______ ______

संकट = ______ ______

खून = ______ ______

दुश्मन = ______ ______

दिन = ______ ______

निम्नलिखित समान उच्चारित शब्दों के अंतर वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए–

(क) की = ______

कि = ______

(ख) उत्तर = ______

उत्तर = ______

(ग) है = ______

हैं = ______

(घ) दीन = ______

दिन = ______

योग्यता-विस्तार

- आपके जीवन में भी ऐसा समय आया होगा जब आपने सूझ-बूझ से काम लिया होगा। उसी घटना को संक्षेप में लिखिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को ऐसे ही किसी अन्य व्यक्ति के विषय में जानकारी प्रदान करें।

10 बरसो बरखा रानी

वर्षा में बरसते पानी को कवि
ने अलग-अलग उपमाएँ दी
और यह प्रक्रिया निरंतर
भी चल रही है। वर्षा के
और उसके कारण प्रकृति
शृंगार का कवि ने प्रस्तुत क
में बड़ा ही सुंदर वर्णन किया

ऐसे बरसो बरखा रानी,
बरस-बरस बरसाओ पानी।

सूख गए हैं कंठ हमारे,
प्यासी धरती तुम्हें पुकारे।

ढम-ढम ढोल बजाती आओ,
काले-काले बादल लाओ।

मिल खाएँगे हम गुड़धानी,
ऐसे बरसो बरखा रानी।

खेतों में पानी बरसाओ,
खेतिहरों को ना तरसाओ।

'ले लो पानी अब ना तरसो',
कहकर यह तुम जी भर बरसो।

गाएँ नाना नाचे नानी,
ऐसे बरसो बरखा रानी।

झूमें तोते नाचें मोर,
जंगल में मच जाए शोर।

ताल-तलैया सब भर जाएँ,
गली-गली में बच्चे गाएँ।

करो न देर बरसाओ पानी,
ऐसे बरसो बरखा रानी।

लहराएँगे खेत हमारे,
नदियाँ, कुएँ और मछुआरे।

गलियाँ पानी से भर जाएँ,
कागज की हम नाव चलाएँ।

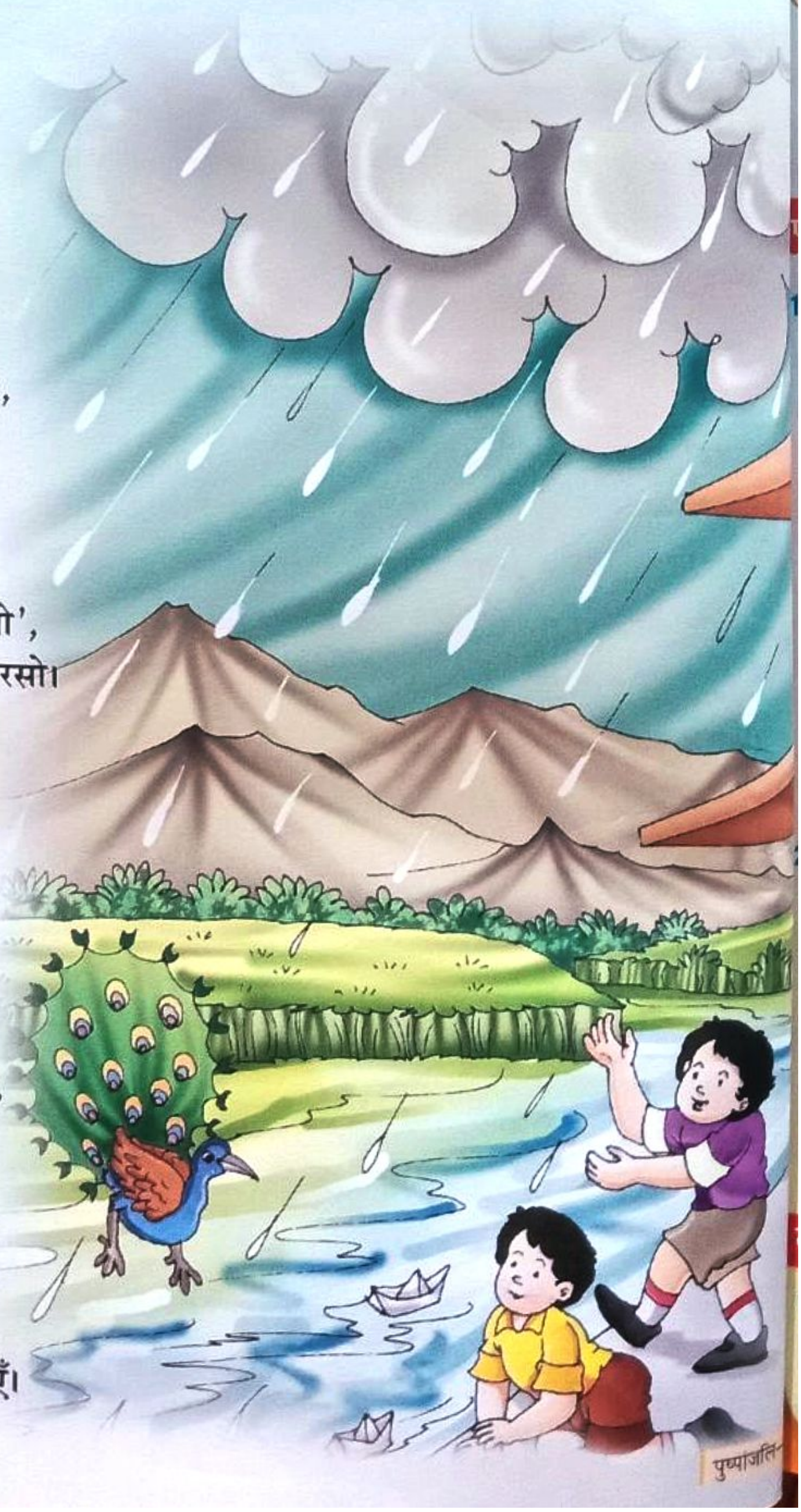

बन जाएगी एक कहानी,
ऐसे बरसो बरखा रानी।

–अशोक लव

शब्दार्थ

कंठ = गला; खेतिहर = किसान; ताल-तलैया = नदी-तालाब; बरखा = वर्षा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि ने वर्षा को किस नाम से संबोधित किया है?

______

(ख) कवि ने वर्षा को क्या बजाते आने के लिए कहा है?

______

(ग) यदि वर्षा हो जाए तो क्या-क्या होगा?

______

(घ) जब गलियों में पानी भर जाएगा तो बच्चे क्या करेंगे?

______

(ङ) प्रस्तुत कविता के रचयिता का नाम लिखिए व कविता का शीर्षक भी लिखिए।

______

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए–

सूख ______

प्यासी ______

ढम-ढम ______

काले-काले ______

______ गुड़धानी

______ बरखा रानी।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द कविता में से छाँटकर लिखिए–

रानी = ______ बरसाओ = ______

हमारे = ____________ मोर = ____________

आओ = ____________ जाएँ = ____________

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

रानी = ____________ ____________ ____________

पानी = ____________ ____________ ____________

बादल = ____________ ____________ ____________

बरखा = ____________ ____________ ____________

3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।
प्रमुख कारक चिह्न हैं–ने, को, से, के लिए, में, पर, का, के, की आदि।
कविता में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए, जिनमें निम्नलिखित कारक प्रयुक्त हुए हैं–

(क) में ____________

(ख) को ____________

(ग) से ____________

(घ) की ____________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

कंठ = ____________

जंगल = ____________

मोर = ____________

कागज = ____________

योग्यता-विस्तार

✤ अधिक वर्षा होने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं? पाँच वाक्य लिखिए–

____

____

____

____

____

शिक्षण-संकेत

छात्रों से कविता का सस्वर वाचन करवाएँ।

11 अलादीन और जादू का दीपक

प्रस्तुत कहानी अरब देशों के प्रसिद्ध कहानी संग्रह अरेबियन नाइट्स से ली गई इसमें एक लड़के अलादीन और उसके जादुई चिराग का रोचक वर्णन है।

मुस्तफा दर्जी जितना परिश्रमी था, उसका बेटा अलादीन उतना ही आलसी और मनमौजी। मुस्तफा ने अलादीन को काम-धंधे में लगाने का बहुत यत्न किया, पर उसका मन किसी कार्य में न लग सका। मुस्तफा की मृत्यु के बाद भी अलादीन के स्वभाव में कोई अंतर नहीं आया। उसकी बूढ़ी माँ ही इधर-उधर मेहनत-मजदूरी कर अपना काम चलाती रही।

एक दिन अलादीन गली में खेल रहा था कि एक अपरिचित व्यक्ति ने आकर उससे कहा, ''मैं तुम्हारा चाचा हूँ और तुम्हारी माँ से मिलना चाहता हूँ।'' यह सुनकर अलादीन उसे अपने घर ले गया।

घर पहुँचने पर उस व्यक्ति ने बताया कि मैं मुस्तफा का छोटा भाई हूँ। बचपन में ही मैं घर से चला गया था। अलादीन की माँ को अपने पति के इस भाई के बारे में कुछ भी पता नहीं था। वह इस विषय में सोच ही रही थी कि उस अपरिचित व्यक्ति ने बड़े अपनेपन से पूछा, ''अलादीन कुछ काम-धंधा भी करता है या नहीं?''

''काम-धंधा? भाई, यह बहुत ही मनमौजी और लापरवाह है। दिनभर खेलता रहता है,'' दुःखी स्वर में अलादीन की माँ ने कहा। इस पर बड़ी चिंता प्रकट करते हुए उसने कहा, ''कोई बात नहीं भाभी, इसे मैं अपने साथ ले जाऊँगा और किसी-न-किसी कार्य में लगा दूँगा।'' फिर उसने अलादीन की माँ को कुछ रुपये दिए और अगले दिन आने को कहकर चला गया।

दूसरे दिन वही व्यक्ति अलादीन के लिए नए-नए कपड़े लेकर उसे अपने साथ ले जाने के लिए आया। नए कपड़े पहन और अपनी माँ से विदा लेकर अलादीन खुशी-खुशी उसके साथ चल पड़ा।

वास्तव में यह व्यक्ति अलादीन का चाचा नहीं, एक जादूगर था। वह अलादीन को एक विशेष कार्य के लिए अपने साथ ले जा रहा था।

अलादीन को साथ लिए हुए

जादूगर एक बाग में पहुँचा और एक स्थान से भारी पत्थर हटाकर उसे एक गड्ढे का मुँह दिखाते हुए बो "देखो बेटा, इस गड्ढे के अंदर एक चबूतरा है और उस पर एक जलता हुआ दीपक। यदि तुम दीपक बुझाकर मेरे पास ले आओ तो हम मालामाल हो जाएँगे। तुम छोटे हो, इसलिए तुम ही इसमें घुस सकते लो, यह अँगूठी पहन लो इससे तुम्हें कोई खतरा नहीं रहेगा।"

अँगूठी अंगुली में पहनकर अलादीन धड़कते हृदय से उस तंग गड्ढे में उतर गया और जादूगर की बताई हुई जगह पर जा पहुँचा, फिर दीपक बुझाकर उसे जेब में डाल, गड्ढे के मुँह पर आकर बोला, "चाचा, मैं आ गया हूँ, मुझे गड्ढे से बाहर निकाल लीजिए।"

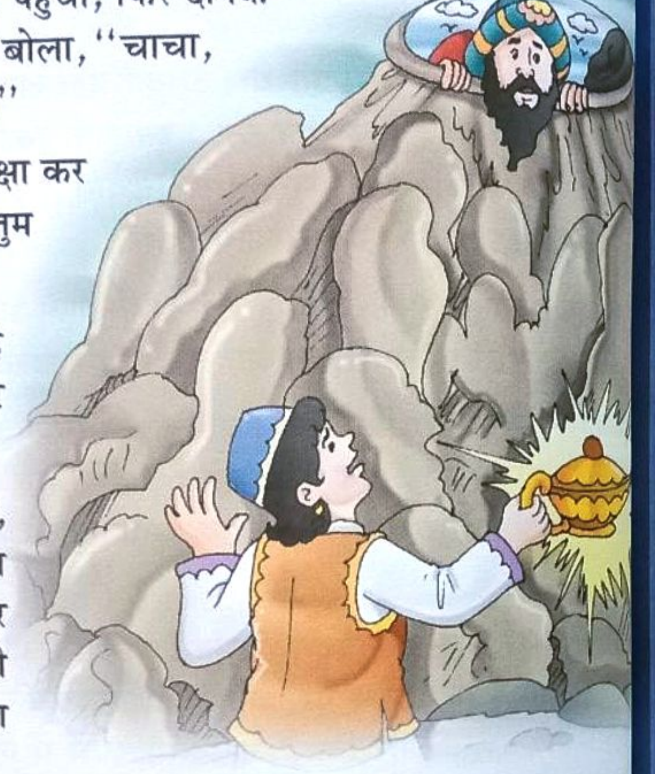

जादूगर, जो बड़ी बेचैनी से अलादीन की प्रतीक्षा कर रहा था, उस गड्ढे में झाँककर बोला, "शाबाश! तुम आ गए? लाओ, दीपक मुझे दे दो।"

"दीपक जेब में है और यहाँ जगह इतनी तंग है कि मैं उसे निकाल नहीं सकता; बाहर आने पर दूँगा," अलादीन ने उत्तर दिया।

परंतु जादूगर को तो दीपक से मतलब था, अलादीन से नहीं। वह उससे बार-बार यही कहता रहा कि पहले दीपक दे दो, तब तुम्हें बाहर निकालूँगा। पर अलादीन विवश था। वह यही कहता रहा कि जगह तंग है बाहर निकले बिना दीपक नहीं दिया जा सकता।

कुछ देर तक दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। जब अलादीन किसी तरह भी राजी न हुअ जादूगर को बड़ा गुस्सा आया और एक भारी पत्थर से गड्ढे का मुँह बंद कर वह चलता बना। बे अलादीन बड़ी मुसीबत में फँस गया। अंदर चारों ओर गहरा अंधकार, जाए तो कहाँ जाए!

वह हाथों को इधर-उधर घुमाकर रास्ता टटोलने लगा। उसके हाथ की अँगूठी एक पत्थर से ट एकदम प्रकाश हो गया और एक बहुत बड़ा जिन्न उसके सामने आ खड़ा हुआ। "मैं इस अँगूठी का दा बताइए, मेरे लिए क्या आज्ञा है," जिन्न ने कहा।

जिन्न को देखते ही अलादीन के होश उड़ गए। पर साहस करके वह बोला, "मुझे घर पहुँचा दो।" उसके मुँ यह शब्द निकले ही थे कि वह अपने घर में खड़ा था और उसकी माँ आश्चर्य से उसे देख रही थी।

अलादीन ने अपनी माँ को सारी बात बता दी। घर में उस समय खाने के लिए लिए कुछ भी नहीं यह देख अलादीन ने जेब से दीपक निकालकर माँ को दे दिया और कहा कि इसे बाजार में बेच आ दीपक बहुत पुराना और मैला था। माँ उसे मिट्टी से रगड़कर साफ करने लगी कि अचानक एक बहुत जिन्न उसके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "मैं इस दीपक का दास हूँ। मेरे लिए क्या आज्ञा है

माँ तो जिन्न को देखकर घबरा गई, पर अलादीन बोला, ''जाओ, हमारे लिए खाना लाओ।'' कहने की देर थी कि वह जिन्न बहुत-सा खाना लिए हाजिर हो गया और सब चीजें एक ओर रख गायब हो गया। अब माँ-बेटे दोनों दीपक की सहायता से बड़े आराम से रहने लगे।

एक दिन अलादीन की नजर शहजादी बदर पर पड़ी। उसने शहजादी से शादी करने का निश्चय कर लिया और दीपक के जिन्न की सहायता से बहुत-से बहुमूल्य उपहार देकर अपनी माँ को बादशाह के पास भेज दिया। उपहारों को देख बादशाह बड़े आश्चर्य में पड़ गया और बोला, ''अगर तुम्हारा बेटा मेरी बेटी के लिए मेरे महल जैसे महल बनवा दे तो मुझे यह संबंध स्वीकार है।''

माँ ने घर आकर अलादीन को सारी बात बता दी। अलादीन के लिए कुछ भी असंभव न था। दीपक के जिन्न को आज्ञा देने की देर थी कि एक विशाल और सुंदर महल तैयार था। बादशाह को विश्वास हो गया कि अलादीन के पास अपार संपत्ति है। उसने शहजादी बदर की शादी उसके साथ कर दी। अब अलादीन बड़ी शान के साथ महल में रहने लगा।

जब बूढ़े जादूगर को अलादीन के बारे में मालूम हुआ तो उसे यह समझते देर न लगी कि अलादीन ने दीपक के जिन्न को अपने वश में कर लिया है। उसने उस दीपक को हथियाने का निश्चय कर लिया।

अगले दिन अलादीन के महल के नीचे एक बूढ़ा व्यापारी आवाज लगा रहा था, ''पुराने दीपकों के बदले नए दीपक ले लो!'' अलादीन महल में नहीं था। शहजादी ने अपने पुराने दीपक के बदले नया दीपक ले लिया। यह व्यापारी जादूगर ही था। इस तरह उसकी इच्छा पूरी हुई। दीपक का जिन्न अब उसके वश में था। जादूगर ने दीपक के जिन्न को आज्ञा दी, ''शहजादी समेत अलादीन के महल को अफ्रीका के जंगलों में ले चलो।'' जिन्न ऐसा ही किया।

जब अलादीन लौटकर आया तो अपने महल को वहाँ न पाकर बड़ा चिंतित हुआ। तभी उसे अँगूठी का ध्यान आया। उसने अँगूठी के जिन्न को बुलाकर आज्ञा दी, ''मुझे अपने महल में पहुँचाओ।'' जिन्न ने ऐसा ही किया।

अलादीन महल में पहुँचकर एक जगह छिप गया और जब जादूगर बाहर चला गया तो शहजादी के सामने आ खड़ा हुआ।

अलादीन को देखकर शहजादी बड़ी खुश हुई। अब वे जादूगर से पीछा छुड़ाने की तरकीब सोचने लगे। अलादीन ने शहजादी को एक पुड़िया देते हुए कहा कि यह दवा जादूगर के भोजन में मिला देना। यह कहकर वह फिर महल में छिप गया।

शहजादी ने उस दिन बड़ा स्वादिष्ट भोजन बनाया। जादूगर ने खूब डटकर भोजन किया। थोड़ी देर बाद उसे नींद लगी और वह वहीं लेट गया। यह उसकी अंतिम

नींद थी। जादूगर को मरा देख अलादीन ने उसकी जेब से दीपक निकाल लिया और उसके जिन्न की सहायता से अपने महल को पहली जगह वापस ले आया।

इसके बाद वे आनंदपूर्वक जीवन बिताने लगे।

शब्दार्थ

परिश्रमी = मेहनती; मनमौजी = अपने मन की करने वाला; अपरिचित = अजनबी; जादूगर = जादू दिखाने वाला; विवश = मजबूर; साहस = हिम्मत; बहुमूल्य = कीमती; हथियाना = अपने कब्जे में करना।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) अलादीन कौन था तथा उसका स्वभाव कैसा था?

____

(ख) अपरिचित व्यक्ति ने अलादीन को अपना क्या परिचय दिया?

____

(ग) जादूगर अलादीन को बाग में किस कार्य के लिए ले गया?

____

(घ) शहजादी बदर के पिता ने अलादीन की माँ के सामने क्या शर्त रखी?

____

(ङ) जादूगर ने दीपक कैसे प्राप्त किया?

____

(च) अलादीन ने शहजादी और दीपक कैसे प्राप्त किया?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) मुस्तफा की मृत्यु के बाद भी अलादीन के ______ में कोई अंतर नहीं आया।

(ख) वास्तव में अपरिचित व्यक्ति अलादीन का चाचा नहीं एक ______ था।

(ग) अलादीन धड़कते हृदय से उस तंग ______ में उतर गया।

(घ) अलादीन ने शहजादी ______ से शादी करने का निश्चय किया।

(ङ) अलादीन ने शहजादी को एक ______ दी।

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) अलादीन के पिता दर्जी थे। ◯

(ख) अलादीन जादूगर था। ◯

(ग) दीपक में से एक जिन्न निकला। ◯

(घ) अलादीन ने दीपक जादूगर को दे दिया। ◯

4. किसने कहा? किससे कहा?

(क) "मैं तुम्हारा चाचा हूँ।" __________ ने __________ से

(ख) "इसे मैं अपने साथ ले जाऊँगा।" __________ ने __________ से

(ग) "दीपक जेब में है।" __________ ने __________ से

(घ) "मैं इस दीपक का दास हूँ।" __________ ने __________ से

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाकर लिखिए–

चाचा = __________ बुद्धि = __________

स्वभाव = __________ चमक = __________

धन = __________ गुण = __________

2. पढ़िए, समझिए व लिखिए–

श्रम = परिश्रम श्रमदान श्रमिक

स्व = __________ __________ __________

पन = __________ __________ __________

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) अपरिचित = __________

(ख) मनमौजी = __________

(ग) असंभव = __________

(घ) जादूगर = __________

योग्यता-विस्तार

✤ 'अलादीन और जादू का दीपक' कहानी का सार संक्षेप में लिखिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को अन्य रोचक कहानियाँ सुनाइए; जैसे—'अलीबाबा चालीस चोर' आदि की।

12 सुखमय जीवन का आधार: स्वास्थ्य

कहते हैं कि "पहला सुख नीरोगी काया" अर्थात् जीवन के सभी सुखों में स्वास्थ्य सबसे प्रमुख है। स्वस्थ व्यक्ति जीवन के सभी सुखों का भोग कर सकता है। वह देश और समाज की उन्नति में भी सहयोग कर सकता है। प्रस्तुत पाठ उसी स्वास्थ्य की महत्ता पर प्रकाश डाल रहा है।

अपने शरीर को स्वच्छ तथा स्वस्थ रखना हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है, क्योंकि स्वस्थ व स्वच्छ व्यक्ति के ही चेहरे पर चमक आती है, जिससे वह तेजस्वी और आकर्षक लगता है तथा उसका चित्त भी प्रसन्न रहता है। स्वच्छ वातावरण में हमारा मन उमंग और उल्लास से भरा रहता है। हम दुगुने उत्साह के साथ कठिन-से-कठिन काम करने के लिए तत्पर रहते हैं।

इसके विपरीत, अस्वस्थ रहने से हम उदास-से रहते हैं। हमारा स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और किसी भी काम में मन नहीं लगता। इसीलिए कहा गया है कि स्वस्थ तन में स्वस्थ मन और मस्तिष्क का निवास होता है।

अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि स्वस्थ कैसे रहा जाए? तो इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि स्वच्छता का ध्यान रखकर ही हम स्वस्थ रह सकते हैं। स्वच्छता केवल तन की ही काफी नहीं वरन् मन की, घर की और बाहर की सभी स्थानों की होनी चाहिए।

अब जरा तन अर्थात् शरीर की स्वच्छता को देखें। हमारी त्वचा में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं। इन छिद्रों से होकर ही पसीना बाहर निकलता है। स्वच्छता का ध्यान न रखने पर इन पर धूल-मिट्टी जम जाती है और छिद्र बंद हो जाते हैं। यदि प्रतिदिन स्नान करके हम अपने शरीर की त्वचा के इन छिद्रों को खुला न रखें तो इनसे पसीना निकलने में रुकावट होती है और शरीर की गंदगी बाहर नहीं निकल पाती। शरीर के भीतर की यह गंदगी अनेक रोगों को जन्म देती है।

शरीर की सफाई के लिए प्रतिदिन अच्छी तरह स्नान करना चाहिए। यहाँ स्नान करने का अर्थ यह नहीं है कि शरीर पर पानी उड़ेल लिया और हो गया स्नान। वास्तव में यह सही स्नान नहीं है। स्नान के लिए मौसम के अनुसार ठंडा या हल्का

गर्म पानी लेकर पूरे शरीर पर अच्छी प्रकार साबुन लगाना चाहिए। स्नान के बाद हमें साफ तौलिये से रगड़-रगड़कर शरीर को पोंछना चाहिए। इससे छिद्रों के मुख पर जमा हुआ मैल साफ हो जाता है और छिद्र खुल जाते हैं। स्नान आदि में सदैव अपना ही तौलिया प्रयोग में लाना चाहिए, क्योंकि दूसरों का तौलिया प्रयोग में लाने से उनके शरीर के कीटाणु अपने शरीर में भी लगने का भय बना रहता है।

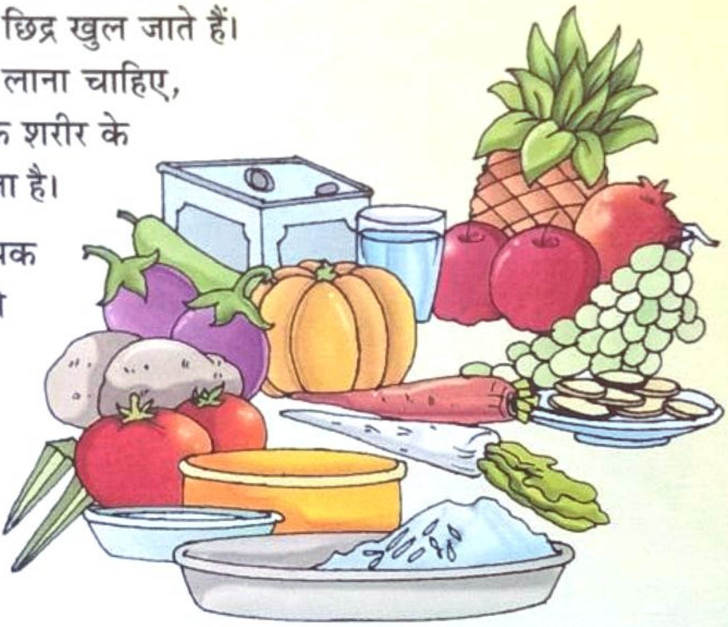

तन की सफाई में साफ कपड़े पहनना आवश्यक है, क्योंकि गंदे कपड़े पहनने से त्वचा के बहुत-से रोग हो जाते हैं।

घर की सफाई का भी हमारे स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। हमें घर को हमेशा साफ-सुथरा रखना चाहिए। घर में नित्य झाड़ू लगाकर फर्श को गीले तौलिये से पोंछना चाहिए, फर्नीचर के सभी सामान भी नरम स्वच्छ कपड़े से साफ करने आवश्यक हैं। नालियाँ साफ रखनी चाहिए और उनमें फिनायल डालनी चाहिए। इससे मक्खी-मच्छरों से बचाव होता है।

घर के बाहर भी हमें अपने आसपास की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कूड़ा-करकट ढक्कनदार डिब्बे में डालना चाहिए। गड्ढों में पानी इकट्ठा नहीं होने देना चाहिए। हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि मुहल्ले की नालियाँ साफ रहें। गंदे और ठहरे हुए पानी में मच्छर पैदा होते हैं। इससे मलेरिया जैसे अनेक रोग फैलते हैं। गंदगी में मक्खियाँ उत्पन्न होती हैं, जिनसे हैजा जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

स्वास्थ्य के लिए दूसरी आवश्यक वस्तु है–स्वच्छ जल। हमें स्वच्छ जल ही पीना चाहिए। यदि पानी की शुद्धता के बारे में जरा भी संदेह हो तो पीने से पहले उसे उबाल लेना चाहिए। जो लोग कुओं का पानी पीते हैं, उन्हें ऐसे कुओं का पानी पीना चाहिए जो बराबर साफ किए जाते हों और जिनमें लाल दवा (पोटैशियम परमैंगनेट) डाली जाती हो। कुओं की जगत इतनी ऊँची होनी चाहिए कि उनमें आसपास की गंदगी न जा सके। कुएँ छतरी से ढके होने चाहिए, जिससे उनमें ऊपर से कोई गंदगी न गिरे। तालाब का पानी तो कभी पीना ही नहीं चाहिए।

पौष्टिक और संतुलित भोजन अच्छे स्वास्थ्य की अनिवार्य शर्त है। हमारे भोजन में अनाज, दाल, सब्जी, गुड़, शक्कर, घी, तेल, दूध, दही, अंडा, मांस-मछली आदि सम्मिलित होते हैं। हमें दूध, दही और हरी सब्जियाँ अधिक मात्रा में खानी चाहिए। बच्चों को दूध, दही पर्याप्त मात्रा में सदैव लेना चाहिए, क्योंकि इनमें पौष्टिक तत्त्व अधिक मात्रा में होते हैं।

खाने-पीने की वस्तुओं को साफ रखना बहुत जरूरी है। उन्हें सदैव ढककर रखना चाहिए एवं अच्छी तरह धोकर खाना चाहिए। हमें ऐसी चीजें नहीं खानी चाहिए जिन पर धूल जमी हो या मक्खियाँ बैठी हों।

ऐसी चीजें खाने-पीने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं।

स्वच्छता के साथ ही खेलकूद और व्यायाम पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इनसे शरीर फुर्तीला एवं शक्तिशाली बनता है। खुली हवा में व्यायाम करने से मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और शरीर में स्फूर्ति आती है। योगाभ्यास भी स्वास्थ्य के लिए बड़ा लाभदायक है।

ऊपर बताई गई सभी बातें होने पर भी स्वच्छ हवा के बिना मनुष्य का शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। इसके लिए घरों में खिड़कियाँ और रोशनदान होने चाहिए, जिससे बाहर की साफ हवा अंदर आ सके और अंदर की दूषित हवा बाहर जा सके। प्रातः काल खुली हवा में टहलना चाहिए। गांधी जी का कहना था, "खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। सैर करना भी एक प्रकार का व्यायाम ही है।" आजकल बच्चे प्रायः बंद कमरों में बैठकर वीडियो गेम्स खेलते हैं और टी० वी० के कार्यक्रमों से अपना मनोरंजन करते हैं। यह उन्हें पर्याप्त ऑक्सीजन जो कि खुली हवा में ही होती है, से वंचित करते हैं।

इस प्रकार हमें अपने अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक उचित उपाय अपनाने चाहिए। हमें यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि अच्छा स्वास्थ्य ही सुखमय जीवन का मुख्य आधार है।

शब्दार्थ

स्वच्छ = साफ; चित्त = मन; मस्तिष्क = दिमाग; उमंग = जोश; तत्पर = तैयार; असंख्य = अनगिनत; संदेह = शंका; जगत = कुएँ के मुँह पर चारों ओर बना लकड़ी का या सीमेंट का चबूतरा; दूषित = गंदा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य क्या है?

____

(ख) स्वस्थ तन में क्या निवास करता है?

____

(ग) स्वच्छता का स्वास्थ्य से क्या संबंध है?

____

(घ) हमें प्रतिदिन स्नान क्यों करना चाहिए?

____

(ङ) मनोरंजन हमारे लिए क्यों आवश्यक है?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

(क) स्वच्छ ____________ में हमारा मन उमंग और उल्लास से भरा रहता है।

(ख) हमारी त्वचा में छोटे-छोटे ____________ होते हैं।

(ग) स्नान करने का यह अर्थ नहीं है कि शरीर पर ____________ उड़ेल लिया।

(घ) गंदे और ठहरे हुए पानी में ____________ पनपते हैं।

(ङ) पौष्टिक और ____________ भोजन अच्छे स्वास्थ्य की अनिवार्य शर्त है।

- संतुलित
- मच्छर
- वातावरण
- पानी
- छिद्र

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) खुली हवा में घूमना हानिकारक होता है। ◯

(ख) खाने-पीने की सभी वस्तुओं को हमें ढककर रखना चाहिए। ◯

(ग) स्वास्थ्य ही सुखमय जीवन का आधार है। ◯

(घ) प्रतिदिन स्नान करने से हम बीमार हो जाते हैं। ◯

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

आवश्यक = ______ पर्याप्त = ______

स्वच्छ = ______ लाभदायक = ______

अर्थ = ______ साफ = ______

2. पढ़िए, समझिए व लिखिए–

चमक + ई = चमकी

निवास + ______ = ______

भीतर + ______ = ______

मौसम + ______ = ______

पान + ______ = ______

रोग + ______ = ______

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

दूध = ______ ______ ______

तालाब = ______ ______ ______

अनाज = ______ ______ ______

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) सुखमय = ______

(ख) सम्मिलित = ______

(ग) फुर्तीला = ______

(घ) योगाभ्यास = ______

(ङ) अनिवार्य = ______

योग्यता-विस्तार

✤ पोषक तत्त्वों एवं उनसे प्राप्त संतुलित आहार का चार्ट बनाकर कक्षा में टाँगिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को उनकी आयु के अनुसार बताएँ कि उन्हें कितनी कैलोरी की आवश्यकता है।

13 अपना स्थान स्वयं बनाइए

सच्चाई, लगन और ईमानदारी ये व्यक्ति के चरित्र के ऐसे गुण हैं जिनसे युक्त व्यक्ति किसी भी पद पर कार्यरत हो परिणाम हमेशा सकारात्मक और उत्तम ही होगा। साथ ही वह व्यक्ति निश्चित ही सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने ऐसी ही विचारधारा को एक सुंदर कहानी के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

बादशाह ने एक दिन अपने मंत्री से कहा, ''मुझे अपने लिए एक आदमी की जरूरत है। कोई तुम्हारी निगाह में चढ़े तो लाना, पर इतना ध्यान रखना कि आदमी अच्छा हो।''

बहुत दिनों की जाँच-पड़ताल के बाद मंत्री को एक आदमी अच्छा लगा। उसने उसकी नौकरी छुड़ा दी और उन्नति का आश्वासन दे, बादशाह के सामने पेश किया। बहुत देर तक तो बादशाह को अपनी बात ही याद न आई, बाद में बोले, ''हाँ, उस समय शायद कोई बात मन में थी, पर अब तो कोई बात नहीं है।''

मंत्री ने कहा, ''हुजूर, मैंने इसे हजारों में से छाँटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर इसे लाया हूँ।''

बादशाह ने जरा सोचकर कहा, ''हमारे पास तो इस समय कोई काम नहीं है, पर तुम बहुत कह रहे हो, तो हम अपने निजी कार्यालय में चपरासी रख सकते हैं। वेतन पंद्रह रुपये मिलेगा।''

मंत्री को बुरा लगा, पर उस युवक ने कहा, ''मेरे लिए सबसे बड़ा वेतन यह है कि मुझे अपने बादशाह की सेवा करने का मौका मिलेगा।'' और वह तैयार हो गया। मंत्री जब उसे कार्यालय में छोड़ने गया, तो वहाँ धूल-ही-धूल थी क्योंकि बादशाह वहाँ न कभी जाते थे और न काम करते थे। मंत्री दुःखी हुआ, पर युवक खुश था। उसने अच्छा स्थान दिलाने के लिए मंत्री के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की।

उसने लगातार कई दिनों तक उस कार्यालय को साफ किया और उसे शाही कार्यालय का रूप दिया।

उस दफ्तर में एक छोटी-सी कोठरी थी। युवक ने उसकी जाँच-पड़ताल की तो पता चला कि पिछले सालों में बादशाह के पास जो निजी पत्र आए थे, उनके लिफाफों का ढेर उस कोठरी में था। उसमें से बहुत-

से लिफाफों पर सोने की पच्चीकारी थी और रत्न जड़े थे। ये वे लिफाफे थे, जो विवाह आदि के शु अवसरों पर दूसरे बादशाहों और अमीर-उमरावों के यहाँ से आए थे। युवक ने कारीगर लगाकर सब कीम सामान लिफाफों से उतरवा लिया और बाजार में बेच दिया।

इससे कई हजार रुपये मिले। उनमें से कुछ रुपयों से तो उसने कार्यालय के लिए सामान खरीदा औ बाकी सरकारी खजाने में जमा कर दिए। जहाँ वह सामान बिका, उसकी भी रसीद उसने ली और जहाँ से यह सामान खरीदा गया, उसकी भी। राजा का निजी कार्यालय सचमुच शाही कार्यालय हो गया चुगलखोरों ने बादशाह से उसकी शिकायत की कि वह रुपया लुटा रहा है। एक दिन बादशाह गुस्से में भ कार्यालय गए। साफ-सुथरा कार्यालय देखकर दंग रह गए, फिर भी उन्होंने तेज आवाज में पूछा, ''तुमने यह सजावट किसके रुपयों से की?''

''कार्यालय के रुपयों से हुजूर!'' कहकर उसने रद्दी लिफाफों की कहानी सुनाई और खजाँची से गवाही दिलाई कि कार्यालय का सामान खरीदने के बाद बचा हुआ रुपया खजाने में जमा किया गया है। बादशाह रीझ गए और उस युवक को उन्होंने अपने राज्य का वित्तमंत्री बना दिया। दूसरे मंत्री इससे परेशान हुए, क्योंकि न वह बेईमानी करता था, न करने देता था। जो भी मंत्री बादशाह के पास जाता, किसी-न-किसी बहाने उस युवक की शिकायत करता, जिससे कि वह बादशाह की नजरों में गिर जाए।

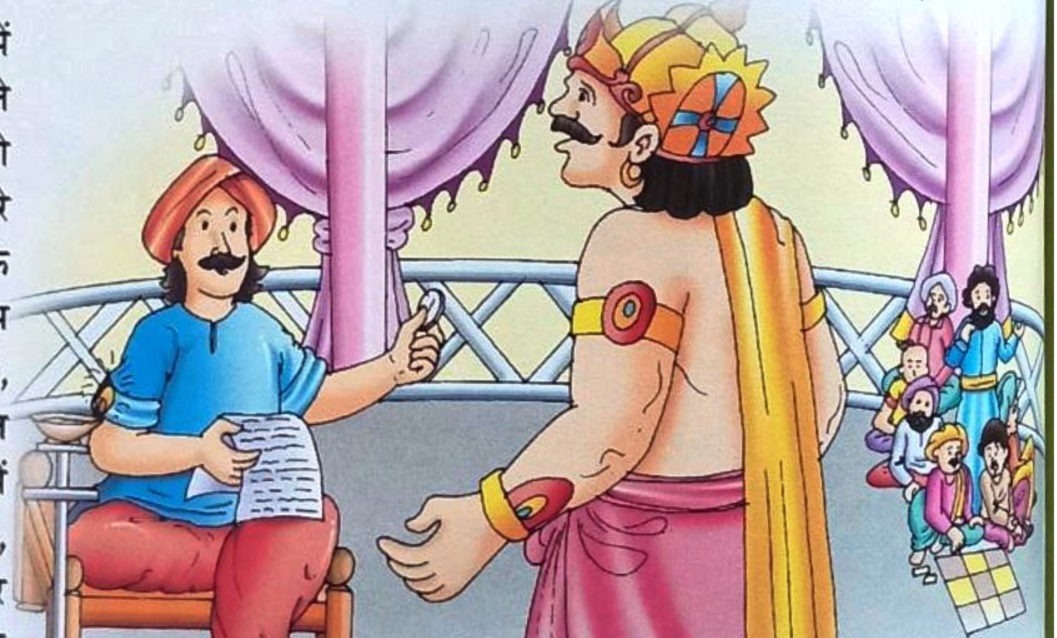

एक दिन रात में दो बजे बादशाह ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा, ''हमारे सब मंत्रियों को उनके घरों से उठाकर इस कमरे में ले आओ, लेकिन वे जिस हालत में हों, उसी हालत में लाए जाएँ। समझ लो, हमारे हुक्म को! अगर कोई पलंग पर सो रहा हो, तो उसे पलंग सहित ज्यों-का-त्यों लाया जाए और कोई कालीन पर बैठा चौपड़ खेल रहा हो तो उसे कालीन समेत लाया जाए।''

कोई एक घंटे में सब बादशाह के बड़े कमरे में आ गए। आठ में से सात मंत्री नशे में थे। उनमें से कुछ जुआ खेल रहे थे। वित्तमंत्री एक चौकी पर बैठे दीये की रोशनी में कोई कागज देख रहे थे। सब मंत्री बहुत लज्जित हुए। तब बादशाह ने वित्तमंत्री से पूछा, ''जनाब, रात के दो बजे किस कागज में उलझे हुए थे?'' उसने उत्तर दिया, ''हुजूर, दूर के इलाके से इस साल का जो राज-कर आया है, उसमें पिछले साल से एक पैसा कम है, तो बार-बार देख रहा था कि जोड़ में भूल है या सचमुच पैसा कम है।''

बादशाह ने अपनी जेब से एक पैसा फेंककर कहा, ''लो, अब हिसाब ठीक कर दो और जाओ आराम करो!'' वित्तमंत्री ने नम्रता के साथ पैसा वापस करते हुए कहा, ''हुजूर, पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि पैसा कम है और उसके लिए पूछताछ न हुई, तो इससे अफसरों में ढील और बेईमानी पैदा होगी।''

बादशाह बहुत खुश हुए और उन्होंने इस युवक को अपना प्रधानमंत्री बना दिया।

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

शब्दार्थ

आश्वासन = सांत्वना, धैर्य; निगाह = दृष्टि; उन्नति = उत्थान; कृतज्ञता = अहसान मानना; निजी = व्यक्तिगत; पच्चीकारी = नक्काशी; उमराव = प्रतिष्ठित लोग, सागंत; खजाँची = धन का हिसाब रखने वाला।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बादशाह ने अपने मंत्री से क्या कहा?

____

(ख) बादशाह ने युवक को किस पद पर नियुक्त किया?

____

(ग) निजी कार्यालय का चपरासी बनकर युवक ने क्या किया?

____

(घ) जब बादशाह गुस्से से भरकर कार्यालय आए तो दंग क्यों रह गए?

____

(ङ) राजा ने वित्त मंत्री को प्रधानमंत्री क्यों बना दिया?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

(क) युवक ने अच्छा स्थान दिलाने के लिए मंत्री के प्रति __________ भी प्रकट की।

(ख) युवक को बादशाह ने राज्य का __________ बना दिया।

(ग) आठ में से सात __________ नशे में थे।

(घ) वित्तमंत्री एक चौकी पर बैठे __________ की रोशनी में कोई कागज देख रहे थे।

(ङ) सब मंत्री बहुत __________ हुए।

- लज्जित
- दीये
- वित्तमंत्री
- कृतज्ञता
- मंत्री

3. किसने कहा? किससे कहा?

(क) "उस समय शायद कोई बात मन में थी।" ______ ने ______

(ख) "मैंने इसे हजारों में से छाँटा है।" ______ ने ______

(ग) "कार्यालय के रुपयों से हुजूर।" ______ ने ______

(घ) "वे जिस हालत में हों, उसी हालत में लाए जाएँ।" ______ ने ______

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) मंत्री को एक आदमी अच्छा लगा।

______

(ख) दफ्तर में छोटी-सी कोठरी थी।

______

(ग) उसने मंत्री के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की।

______

2. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए–

पराधनमनत्री = ______   कार्यलय = ______

बादसाह = ______   जांच = ______

3. पढ़िए, समझिए व लिखिए–

कार्य + आलय = कार्यालय   विद्या + ______ = ______

हिम + ______ = ______   मेघ + ______ = ______

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) कार्यालय = ______

(ख) ज्यों का त्यों = ______

(ग) प्रधानमंत्री = ______

(घ) लज्जित = ______

योग्यता-विस्तार

- इस कहानी को नाटक के रूप में तैयार करके मंचन करने का प्रयास करो। साथ ही कहानी के लिए पात्रों और आवश्यक वस्तुओं की सूची तैयार करो।

शिक्षण-संकेत

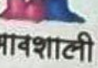

इस कहानी को प्रभावशाली ढंग से पढ़ने के बाद छात्रों से छोटे-छोटे प्रश्न पूछें।

14 पद और सवैया

भक्तिकाल में ईश्वर को लेकर जितनी रचनाएँ लिखी गईं, वे सभी हमारे प्राचीन साहित्य की धरोहर हैं। प्रस्तुत पाठ में उसी धरोहर से कुछ पंक्तियाँ संकलित की गई हैं।

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।।
भोर भयो गैयन के पीछे मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसी बट भटक्यों साँझ परे घर आयो।।

मैं बालक बहियन को छोटो छीकों केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लिपटायो।।

तू जननी मन की अति भोरी इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि हैं जानि परायो जायो।।

यह ले अपनी लकुटि कमरिया बहुतहिं नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि यशोदा लैं उर कंठ लगायो।।

–सूरदास

मानुस हौं तो वही रसखान,
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो,
चरौं नित नंद की धेनुमंझारन।

पाहन हौं तो वही गिरि को,
जो धर्यो कर होय पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं,
मिलि कालिंदी फूल कदंब की डारन।

–रसखान

शब्दार्थ

मैया = माँ; मानस = मानव; भोर = सुबह, सवेरा; गिरि = पर्वत; मधुबन = जंगल; पुरंदर = इंद्र; पठायो = भेजा; ख = पक्षी; भटक्यों = भटकता रहा; कालिंदी = यमुना; बहियन = हाथों; कूल = किनारा; बरबस = जबरदस्ती; जस = माता; भोरी = भोली; पतियायो = विश्वास; लकुटि = लंगोटी; कंठ = गला।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) प्रथम तीन पंक्तियों में कृष्ण मैया से क्या कह रहे हैं?

____

(ख) छींके तक हाथ न जाने का कृष्ण ने मैया को क्या कारण बताया है?

____

(ग) मैया किस बात से द्रवित होकर कृष्ण को गले लगा लेती है?

____

(घ) रसखान किन-किन रूपों में ब्रजभूमि में रहने का वर्णन कर रहे हैं?

____

2. निम्नलिखित दोहों को पूरा कीजिए–

भोर भयो गैयन के पीछे ______________

चार पहर बंसी बट भटक्यों ______________

मैं बालक बहियन को छोटो ______________

ग्वाल बाल सब बैर परे हैं ______________

3. निम्नलिखित दोहों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) तू जननी मन की अति भोरी इनके कहे पतियायो।

जिय तेरे कछु भेद उपजि हैं जानि परायो जायो॥

संदर्भ– ______________________

व्याख्या– ______________________

____

(ख) पाहन हौं तो वही गिरि को,

जो धर्‍यो कर होय पुरंदर कारन।

संदर्भ– ______________________

व्याख्या– ______________________

____

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए–

पाछे = ____________ गैयन = ____________

बैर = ____________ बहियन = ____________

2. निम्नलिखित शब्दों में 'निर्' लगाकर नए शब्द बनाकर लिखिए–

जल = निर्जल बल = ____________

धन = ____________ भय = ____________

भर = ____________ जन = ____________

3. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए–

पठायो = ____________ नचायो = ____________

आयो = ____________ करत = ____________

योग्यता-विस्तार

✤ 'कृष्ण-भक्त' कवियों की सूची तैयार कीजिए तथा पुस्तकालय में जाकर 'मीराबाई' का जीवन परिचय पढ़िए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को भक्तिकाल के अन्य प्रसिद्ध कवियों के बारे में बताएँ।

15 पंच परमेश्वर

बिना कोई स्पष्ट कारण जाने किसी के
में कोई राय बना लेना किसी भी प्रकार
समझदारी नहीं है। व्यक्ति को अपनी
का अहसास तब होता है जब वैसी
उसके सामने आती है। तब उसके
पछताने और अपनी गलती मानने के
कोई और विकल्प नहीं रह जाता।

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन-देन में भी साझा था। दानों को एक-दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन के भरोसे अपना घर छोड़ देते थे। इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था, जब दोनों बालक ही थे और जुम्मन के पिता जुमराती उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे।

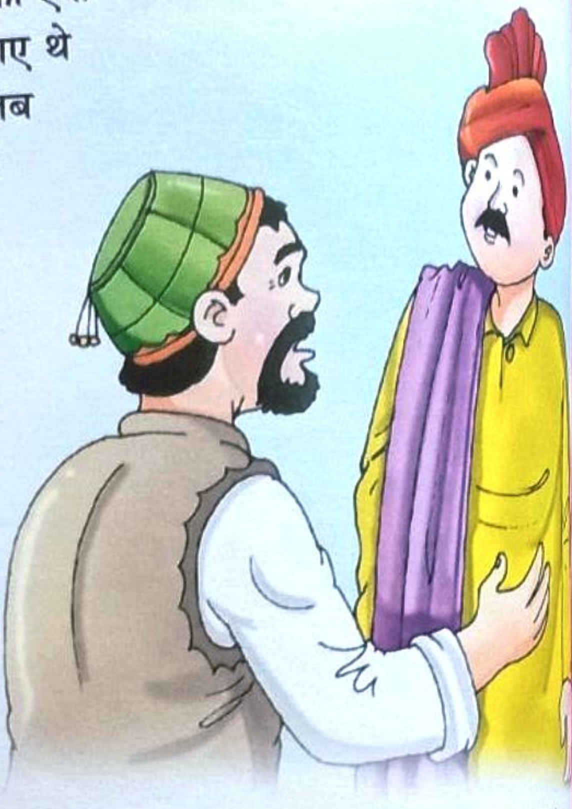

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थीं। उनके पास थोड़ी-सी जायदाद थी परंतु उनके निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे-चोड़े वायदे करके वह जायदाद अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री नहीं हुई, तब तक खाला की खूब खातिरदारी हुई। स्वादिष्ट पदार्थ खिलाए गए। रजिस्ट्री की मुहर लगते ही इस खातिरदारी पर भी मुहर लग गई। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियाँ देने के साथ कड़वी बातें भी सुनाने लगी। जुम्मन शेख भी निष्ठुर हो गए।

कुछ दिन खाला ने सब सुना और सहा, पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन गृहस्वामिनी के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा।

कुछ दिन तक और यों ही रो-धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन खाला ने कहा, ''बेटा साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लूँगी।''

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, ''रुपये क्या यहाँ फलते हैं?'' खाला बिगड़ गईं। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन बोले, ''हाँ, जरूर पंचायत कर लो। फैसला हो जाए। मुझे भी रात-दिन की खटपट पसंद नहीं।''

एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा प्रबंध रखा था। पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की, ''पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने

सारी जायदाद अपने भांजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। जुम्मन ने रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। सालभर तो मैंने रो-धोकर इसके साथ काटा, पर अब सहा नहीं जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा। मैं बेसहारा हूँ। तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह चलूँ। मैं पंचों की बात सिर-माथे चढ़ाऊँगी।''

सरपंच किसे बनाया जाए, इस प्रश्न पर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहा-सुनी हो गई। अंत में खाला बोलीं, ''बेटा, पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच मानती हूँ।'' जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे, परंतु मन के भावों को छिपाकर बोले, ''चलो, अलगू चौधरी ही सही।''

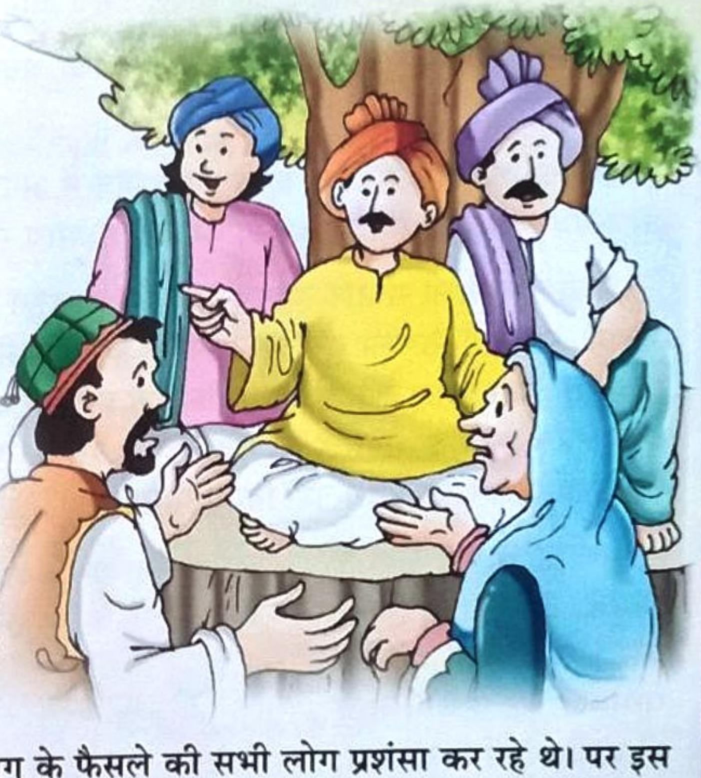

अलगू चौधरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा, ''शेख जुम्मन! हम-तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।'' जुम्मन ने कहा, ''खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाजान को कोई तकलीफ नहीं दी।''

अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया है? अभी तो यह मेरे साथ बैठे थे। अब इतने प्रश्न मुझसे क्यों पूछते हैं? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फैसला सुनाया, ''जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया है। उन्हें यह उचित मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए। बस यही हमारा फैसला है। अगर खर्च देना मंजूर न हो तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।''

फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फैसले की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे। पर इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा। वह इस ताक में था कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का? गाँव में समझू साहू थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौधरी से बैल खरीद लिया।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। न चारे की फिक्र, न पानी की। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। एक दिन साहू ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने जोर लगाया, पर वह आधे रास्ते में ही धरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

इस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब बैल का दाम माँगते, तब साहू-सहुवाइन दोनों ही झल्ला उठते। कहते मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं!

इसी तरह कई बार झगड़े हुए पर साहू जी ने बैल का दाम न चुकाया। लोगों ने साहू जी को समझाया, ''भाई पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए उसे स्वीकार कर लो।'' साहू जी राजी हो गए तथा अलगू ने भी हामी भर ली।

उसी वृक्ष के नीचे पंचायत शुरू हुई। रामधन ने कहा, ''चौधरी, बोलो किसको पंच मानते हो?'' अलगू ने कहा, ''समझू साहू ही चुन लें।''

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले, ''मेरी ओर से जुम्मन शेख।''

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू का कलेजा धक-धक करने लगा। फिर भी उन्होंने कहा, ''ठीक है, मुझे स्वीकार है।''

सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा, ''मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। सत्य से जौ-भर भी टलना मेरे लिए उचित ही नहीं है।

पंचों ने दोनों से सवाल-जवाब शुरू किया। बहुत देर तक दोनों अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया, ''अलगू चौधरी और समझू साहू! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होंने बैल लिया था, उस समय उसे कोई बीमारी न थी। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का प्रबंध नहीं किया गया।''

अलगू चौधरी फूले न समाये, उठ खड़े हुए और जोर से बोले, ''पंच परमेश्वर की जय''। साथ ही सभी लोगों ने दुहराया, ''पंच परमेश्वर की जय।''

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आया और उसके गले से लिपट गया। अलगू रोने लगा। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

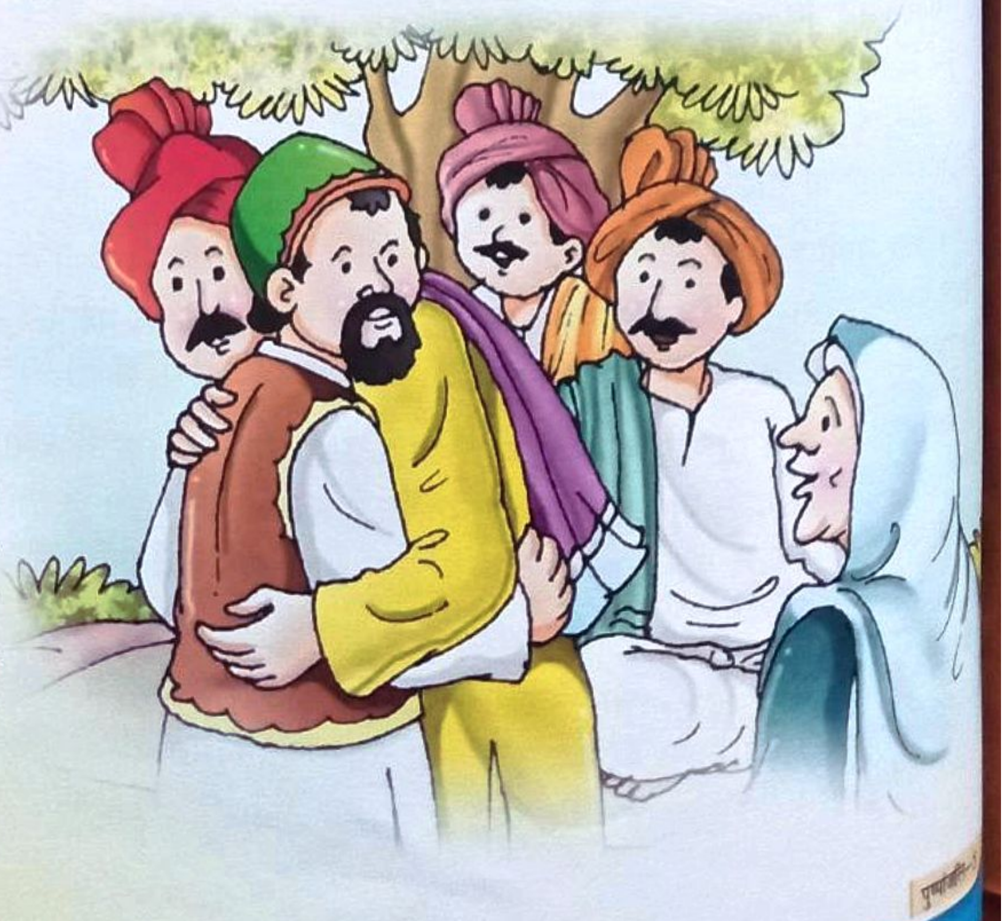

शब्दार्थ

खाला = मौसी; गृहस्वामिनी = घर की मालकिन; स्वादिष्ट = जायकेदार; निष्ठुर = कठोर, बेरहम; धृष्टता = ढिठाई; माहावार = मासिक; निगाह = नजर; जिरह = बहस; दैवयोग = ईश्वर की इच्छा,; ग्रहण = स्वीकार, सर्वोच्च = सबसे ऊँचा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) जुम्मन शेख व उसकी पत्नी ने खाला की खातिरदारी क्यों की?

______

(ख) खाला ने पंचायत क्यों बुलाई?

______

(ग) अलगू चौधरी और जुम्मन की मित्रता में दरार क्यों आ गई?

______

(घ) बैल कैसे मर गया?

______

(ङ) सरपंच का आसन ग्रहण करते ही जुम्मन में कौन-सा भाव पैदा हुआ?

______

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) जुम्मन ने लंबे-चौड़े वायदे करके ______ अपने नाम लिखवा ली थी।

(ख) जुम्मन ने ______ के प्रबंध में दखल देना उचित नहीं समझा।

(ग) आज तक मैंने ______ को कोई तकलीफ नहीं दी।

(घ) अलगू के फैसले की सभी लोग ______ कर रहे थे

(ङ) सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी ______ का भाव पैदा हुआ।

- गृहस्वामिनी
- जिम्मेदारी
- जायदाद
- खालाजान
- प्रशंसा

3. किसने कहा? किससे कहा?

(क) ''तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी पर चलूँ।'' ______ ने ______ से

(ख) ''फैसला हो जाए। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसंद नहीं।'' ______ ने ______ से

(ग) ''पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन।'' ______ ने ______ से

(घ) ''समझू साहू के लिए उचित है कि बैल का पूरा दाम चुका दें।'' ______ ने ______ से

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

निबाह = ____________ किसान = ____________

पहर = ____________ घर = ____________

निष्ठुर = ____________ रात = ____________

हाथ = ____________ ऊँचा = ____________

2. पाठ में से मुहावरे छाँटकर लिखिए तथा उनके अर्थ भी लिखिए-

मुहावरे	अर्थ
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए-

विनती = ____________ विश्वास = ____________

तन = ____________ जायदाद = ____________

खातिरदारी = ____________ सवाल = ____________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए

(क) गाढ़ी मित्रता = ____________

(ख) अटल विश्वास = ____________

(ग) कठिन परिश्रम = ____________

(घ) आठों पहर = ____________

(ङ) दखल देना = ____________

योग्यता-विस्तार

✤ 'सरपंच' में कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? पाँच वाक्य लिखिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों और अन्य रचनाओं के बारे में जानकारी दें।

> अपना संपूर्ण जीवन दीन-दुखियों की सेवा में समर्पित करने वाली भारत रत्न और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मदर टेरेसा को समर्पित यह पाठ उस महान् विभूति से हमारा परिचय करा रहा है। लेखक ने उन्हें प्रेम की मूर्ति कहा है जो पूर्णतया सही है।

16 प्रेम की मूर्ति

कुछ वर्ष पहले भारत की राजधानी दिल्ली में एक महासभा का आयोजन किया गया था। अपार जनसमूह वहाँ एकत्रित था। थोड़ी देर में एक श्वेत साड़ी पहने सीधी-सादी सरल महिला मंच पर आईं। उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं था किंतु उनके व्यक्तित्व में इतना तेज था कि उनके प्रवेश करते ही जनता भाव-विभोर हो उठी। तालियों से सारा वातावरण गूँजने लगा।

उनकी कोमल मधुर वाणी ने सबको शांत कर दिया। उन्होंने सहज भाव से सबको समझाया कि प्रेम ही जीवन का मूल मंत्र है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना रखने से ही संसार में सुख और शांति की स्थापना हो सकती है। उनके सरल शब्दों ने वहाँ उपस्थित सभी के हृदयों को छू लिया और बहुत-से लोगों ने उन्हें निर्धनों की सहायता के लिए धन दिया।

एक विद्यार्थी ने उन्हें अपनी घड़ी उतार कर दी और कहा, ''मेरे पास इसके अलावा और कोई मूल्यवान वस्तु नहीं है। कृपया इसे बेचकर रोगियों के लिए दवाइयाँ खरीद लीजिएगा।''

एक वृद्ध व्यक्ति ने मटमैले रूमाल में से दो सौ रुपये निकाले और कहा, ''यह मेरे जीवन-भर की कमाई है। इसे आप स्वीकार कीजिए।'' उसकी दयनीय अवस्था देखकर उन्होंने उसे रोकना भी चाहा किंतु वह नहीं माना। केवल हाथ जोड़े और मौन धारण किए उनके सामने तब तक खड़ा रहा जब तक उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई।

ऐसे मार्मिक दृश्यों की प्रेरक, इस महान् प्रभावशाली महिला का नाम है–मदर टेरेसा। उन्हें माँ की पद्वी इसलिए दी गई क्योंकि उनके हृदय में छोटे-बड़े सभी के लिए असीम प्रेम था। उनके अद्‌भुत आकर्षण का कारण था उनकी जीवन-भर की तपस्या उन लोगों के लिए, जिन्हें समाज ने सदैव घृणा की दृष्टि से देखा है। निर्धन, रोगी, असहाय और निम्न जाति के लोगों को उन्होंने प्रेम और आदर दिया,अपने हाथों से उनकी सेवा की। सबसे महत्त्वपूर्ण, उन्हें हँसकर जीने का अवसर दिया।

मदर टेरेसा का जन्म यूगोस्लाविया में 27 अगस्त, 1910 को एक धार्मिक परिवार में हुआ। उनका नाम

एगनिस बोजाक्शा रखा गया। जीवन के प्रथम वर्ष माता-पिता के प्यार भरे संरक्षण में सुख से व्यतीत हुए। जब वह थोड़ी बड़ी हुईं तो धार्मिक क्रिया-कलापों में उनकी रुचि जाग्रत हुई। उनके नगर से कुछ धर्म प्रचारक निर्धनों की सेवा के लिए भारत आए थे। उनके पत्रों से कोलकाता के गरीबों की दयनीय स्थिति का समाचार उन्हें मिलता रहता था। उनका कोमल हृदय इन करुण कहानियों को सुनकर व्याकुल हो उठा और उन्होंने अपने जीवन को निर्धनों की सेवा में समर्पित करने का निश्चय ले लिया। इन्हीं दिनों उन्हें कोलकाता की 'लॉरेटो सिस्टर्ज' के बारे में पता चला और उनके कार्य से प्रभावित होकर वह उनकी संस्था में सम्मिलित हो गईं। प्रशिक्षण के बाद उन्हें कोलकाता भेजा गया जहाँ उनका मानव सेवा का स्वप्न साकार हुआ।

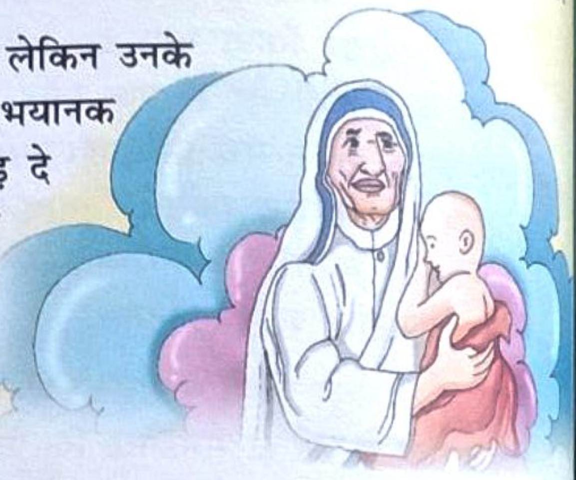

पंद्रह वर्षों तक वह लॉरेटो विद्यालय में पढ़ाती रहीं लेकिन उनके सेवा-भाव को पूरा संतोष नहीं मिला। एक दिन उन्होंने ऐसा भयानक दृश्य देखा जिसने उनके जीवन की दिशा को नया मोड़ दे दिया। एक स्त्री सड़क पर लेटी हुई थी। उसके शरीर पर अनेक घाव थे और वह दर्द से कराह रही थी। उसकी करुण पुकार सुनकर उनका हृदय पिघल गया। उन्होंने उसे उठा लिया और अंतिम समय तक उसकी सेवा करती रहीं।

इस घटना के बाद उन्हें अपने जीवन का सही उद्देश्य समझ में आ गया। उन्हें यह लगा कि ईश्वर समाज से ठुकराए और रोगों से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए उन्हें प्रेरित कर रहे हैं। लॉरेटो संघ त्याग कर उन्होंने एक नई संस्था की स्थापना की जो आज 'मिशनरी सिस्टर्ज ऑफ चैरिटी' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें उन्होंने उन सभी को आश्रय दिया जिन्हें समाज ने घृणा की दृष्टि से देखा था। सरकार से अनुरोध करके उन्होंने वृद्ध व्यक्तियों के लिए भी एक विश्राम-गृह बनवाया जिसे 'निर्मल हृदय' नाम दिया गया। उनकी लगन व उच्चकोटि की जनसेवा को सम्मानित करने के लिए उन्हें अनेक पुरस्कार दिए गए जिनमें सबसे प्रसिद्ध हैं 'नोबल शांति पुरस्कार' और 'भारत रत्न' की उपाधि।

यद्यपि उन्हें संसार के हर देश में प्रसिद्धि मिली फिर भी असहाय और पीड़ितों के लिए उनके मन में तड़प सदैव बनी रही। एक शाम कोलकाता के बड़े बाजार से वह गुजर रही थीं। एक स्थान पर लोगों का जमघट लगा हुआ था। वह भी आगे बढ़ीं। उन्होंने देखा कि एक कूड़ेदान में कूड़े के ढेर पर एक नन्हा शिशु पड़ा था। भीड़ में सभी लोग इस दृश्य को देख रहे थे और तरह-तरह की बातें कर रहे थे पर किसी ने उस बच्चे को उठाने का साहस नहीं किया। मदर टेरेसा ने एक पल गँवाए बिना लपक कर उसे उठा लिया और अपने साथ ले गईं।

इस प्रकार की निष्कपट सेवा द्वारा दया, करुणा और प्रेम का जो बीज मदर टेरेसा ने बोया था, वह आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उसकी शाखाएँ न केवल भारत में वरन् सारे संसार में फैल चुकी हैं। आज उनकी संस्था में बहुत-सी नारियाँ उनसे प्रेरणा पाकर निःसहाय लोगों की सहायता कर रही हैं। वास्तव में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि ईश्वर की भक्ति मंदिर-मस्जिद में नहीं, मानव सेवा में ही निहित है।

शब्दार्थ

श्वेत = सफेद; मार्मिक = मन को छूने वाला; असीम = अत्यधिक; अनुरोध = विनती; समर्पित = न्यौछावर; विश्राम-गृह = आराम घर; जमघट = भीड़।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

____

(ख) मदर टेरेसा को 'माँ' की पदवी क्यों दी गई?

____

(ग) किस दृश्य ने मदर टेरेसा के जीवन की दिशा को नया मोड़ दिया?

____

(घ) मदर टेरेसा ने जीवन का मूल मंत्र क्या बताया ?

____

(ङ) मदर टेरेसा को किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) थोड़ी देर में एक _______ साड़ी पहने सीधा- सादी सरल महिला मंच पर आईं।

(ख) मटर टेरेसा के बचपन का नाम _______ था।

(ग) _______ वर्षों तक मदर टेरेसा लॉरेटो विश्वविद्यालय में पढ़ाती रहीं।

(घ) मदर टेरेसा के हृदय में छोटे-बड़े सभी के लिए _______ प्रेम था।

- असीम
- एगनिस
- बोजाक्शा
- श्वेत
- पंद्रह

3. सही जोड़े बनाइए-

* वृद्ध व्यक्ति ने रूमाल में से	* नन्हा शिशु पड़ा था।
* विद्यार्थी ने अपनी घड़ी	* मानव-सेवा का स्वप्न साकार हुआ।
* कोलकाता जाकर उनका	* मानव सेवा में ही निहित है।
* कूड़े के ढेर पर एक	* दो सौ रुपये निकाले।
* ईश्वर की भक्ति मंदिर-मस्जिद में नहीं	* उतार कर दे दी।

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए-

(क) मदर टेरेसा का जन्म यूगोस्लाविया में 27 अगस्त, 1910 को हुआ था।

(ख) मदर टेरेसा ईश्वर-भक्ति में लीन रहती थीं।

(ग) मदर टेरेसा सदैव श्वेत रंग की साड़ी पहनती थीं।

(घ) घृणा ही जीवन का मूल मंत्र है।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग लिखिए-

संतोष = ______ कहानी = ______

शरीर = ______ दवाइयाँ = ______

तालियाँ = ______ वृद्ध = ______

प्रेम = ______ शाखाएँ = ______

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

श्वेत = ______ निश्चय = ______

निम्न = ______ संतोष = ______

निर्धन = ______ घृणा = ______

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) करुण = ______

(ख) निष्कपट = ______

(ग) मार्मिक = ______

(घ) जमघट = ______

(ङ) आभूषण = ______

योग्यता-विस्तार

✤ किसी अन्य समाज सुधारक/सुधारिका का चित्र चिपकाइए व उसके बारे में चार वाक्य लिखिए।

______

______

______

______

शिक्षण-संकेत

छात्रों को अन्य समाज-सुधारकों के जीवन-परिचय से अवगत कराइए।

17 चरित्रवान् बनो

जीवन में उद्देश्यों की सफलता के लिए व्यक्ति का चरित्रवान् होना जरूरी है। अतः आवश्यक है नैतिकता और धार्मिकता के सहारे चरित्र का निर्माण किया जाए। ईमानदारी, सत्यवादिता, संयम, प्रेम, आस्तिकता आदि गुण उत्तम चरित्र के निर्माण में सहायक हैं।

मानव सदा ऐसे नियमों की खोज करता आया है, जिनसे वह अपने उद्देश्य में सफल हो। उद्देश्य की सफलता सच्चरित्रता पर निर्भर करती है।

चरित्रवान् व्यक्ति वह है जो ईमानदार हो, किसी को धोखा न देता हो, सदा सच बोलता हो, चोरी न करता हो, परिश्रम की कमाई खाता हो, किसी से घृणा न करता हो, ईश्वर में विश्वास रखता हो और ऐसा कोई भी कार्य न करता हो जिसे लोग बुरा समझते हों।

धोखेबाज, झूठे, मक्कार, जाल-साज, जुआरी, शराबी व्यक्तियों का चरित्र नहीं होता। चाहे मनुष्य कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, चाहे कितना धनवान और शक्तिशाली क्यों न हो, यह आवश्यक नहीं कि वह चरित्रवान् होगा। यदि वह झूठ बोलता है, लोगों को ठगता है, दूसरों को इज्जत की दृष्टि से नहीं देखता, ऐसा व्यक्ति चरित्रहीन होता है। ऐसे मनुष्य का समाज में आदर नहीं होता।

चरित्रवान् व्यक्ति चाहे निर्धन, अशिक्षित या दुर्बल क्यों न हो तो भी समाज में वह सम्मान पाता है। लोग उस पर विश्वास करते हैं। चरित्रवान व्यक्ति ही महान् बन सकता है।

प्यारे बच्चो! छत्रपति शिवाजी एक चरित्रवान् व्यक्ति थे। अपने इसी गुण के कारण वह मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा होकर भी महाराज बने। उनकी माता जीजाबाई ने उनको चरित्रवान् बनाने में सहयोग दिया। बचपन में शिवाजी को उनकी माता महान् पुरुषों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। एक बार शिवाजी का सेनापति मुगलों को हराकर एक बंद पालकी में शिवाजी के लिए उपहार लेकर आया। पालकी को दरबार में लाकर रख दिया गया। सेनापति मन-ही-मन बहुत प्रसन्न था। उसे आशा थी कि शिवाजी इस उपहार को पाकर बहुत प्रसन्न होंगे और उसको कुछ इनाम देंगे।

जब पालकी का पर्दा हटाया गया तो शिवाजी ने एक बहुत ही सुंदर मुसलमान महिला को देखा। शिवाजी ने अभिवादन करते हुए कहा, ''क्या ही अच्छा होता यदि मैं इस महिला का पुत्र होता!'' शिवाजी ने उससे माता जैसा व्यवहार किया। शिवाजी अपने सेनापति से बहुत नाराज हुए। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया कि उन्हें सम्मानपूर्वक उनके पति के पास पहुँचा दिया जाए। इतने महान् थे छत्रपति शिवाजी!

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की आजादी के लिए जीवन-भर संघर्ष किया। वह कई बार जेल भी गए। एक बार जब आजादी के बाद पंडित नेहरू इंग्लैंड गए तो चर्चिल ने उनसे हाथ मिलाते समय कहा था, ''यह कैसा चरित्रवान् व्यक्ति है जिसे न किसी से भय लगा, न किसी से घृणा हुई!'' इससे बड़ी श्रद्धांजलि पंडित नेहरू के लिए क्या हो सकती है?

शेक्सपीयर अंग्रेजी के महान् नाटककार हुए हैं। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि चरित्र से ही भाग्य का निर्माण होता है।

एक बार एक धनी व्यक्ति रिक्शा पर बैठकर बस स्टैंड की ओर जा रहा था। उसके पास काफ़ी सामान था। मार्ग में ही उसे बस मिल गई जिस पर वह जाना चाहता था। वह अपना सामान लेकर बस में चढ़ गया। रिक्शावाले को पैसे देते समय उसका थैला रिक्शा में ही रह गया। रिक्शावाले की दृष्टि जब थैले पर पड़ी तब तक बस आँखों से ओझल हो चुकी थी। रिक्शावाले ने थैले के सामान को देखा। वह देखकर हैरान रह गया कि उसमें पाँच हजार रुपये, कुछ आवश्यक कागज तथा डायरी थी। डायरी में उस व्यक्ति का नाम और पता प्रथम पृष्ठ पर लिखा हुआ था। उस रिक्शावाले ने डाकखाने में जाकर उस व्यक्ति को पाँच हजार रुपये का मनीआर्डर करवा दिया तथा आवश्यक कागजों और डायरी को रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेज दिया। रिक्शावाला कम पढ़ा-लिखा और निर्धन व्यक्ति था लेकिन वह था बड़ा चरित्रवान्। उसके मन में पराए धन का लालच नहीं आया। यदि वह चरित्रवान् न होता तो वह उस धन को अपने पास रख सकता था।

प्यारे बच्चो, तुम्हें भी ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह तुम्हें चरित्रवान् बनाए। चरित्रवान् बनने के लिए तुम प्रतिदिन अपने-आप से पूछो कि–

मैंने किसी की वस्तु तो नहीं उठाई?

मैंने किसी का हृदय तो नहीं दुखाया?

मैंने दंड से बचने के लिए अध्यापक महोदय से असत्य तो नहीं बोला?

मैंने विद्यालय के नियमों का उल्लंघन तो नहीं किया?

मैंने किसी से इसलिए द्वेष तो नहीं किया कि वह पढ़ाई या खेल में मुझसे बहुत आगे है?

मैंने गुरुजनों और अपने माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना तो नहीं की?

मैंने किसी का दुःख हल्का करने में उपेक्षा तो नहीं की?

इन बातों का उत्तर अपने-आप में मिलने पर तुम जान पाओगे कि तुम चरित्रवान् हो या नहीं। यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसका सुधार करो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि तुम्हें शक्ति दे ताकि तुम बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयों को जीवन में अपनाओ।

शब्दार्थ

अशिक्षित = अनपढ़; अभिवादन = स्वागत, नमस्कार; उल्लंघन = न मानना, विरुद्ध जाना; अवहेलना = निरादर, न मानना; उपहार = भेंट; मार्ग = रास्ता; ओझल = गायब; द्वेष = बैर; असत्य = झूठ।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

(क) मानव सदा कैसे नियमों की खोज करता है?

____

(ख) चरित्रहीन व्यक्ति किसे कहते हैं

____

(ग) चरित्रवान् व्यक्ति में में क्या-क्या गुण होते हैं?

____

(घ) चर्चिल ने पं० जवाहरलाल नेहरू के बारे में क्या कहा?

____

(ङ) किस घटना से पता चला कि रिक्शावाला चरित्रवान् था?

____

2. **दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-**

- जीजाबाई
- ओझल
- शेक्सपीयर
- सच्चरित्रता
- सेनापति

(क) उद्देश्य की सफलता ____________ पर निर्भर करती है।

(ख) छत्रपति शिवाजी की माता का नाम ____________ था।

(ग) शिवाजी अपने ____________ पर बहुत नाराज हुए।

(घ) ____________ अंग्रेजी के महान् नाटककार हुए हैं।

(ङ) तब तक बस आँखों से ____________ हो चुकी थी।

3. **सही जोड़े बनाइए-**

* चरित्र से ही	* पं० जवाहरलाल नेहरू थे।
* धनी व्यक्ति रिक्शा पर	* में पराये धन का लालच नहीं था।
* रिक्शा वाले के मन	* पर उस व्यक्ति का नाम व पता लिखा था।
* डायरी के प्रथम पृष्ठ	* बैठकर बस स्टैंड की ओर जा रहा था।
* भारत के प्रथम प्रधानमंत्री	* भाग्य का निर्माण होता है।

4. **सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए-**

(क) शिवाजी ने अपने सेनापति को पुरस्कार दिया।

(ख) रिक्शा वाले ने पैसे व सामान अपने पास रख लिए।

(ग) ईमानदारी, सत्य बोलना, चोरी न करना, चरित्रवान् व्यक्ति के गुण हैं।

(घ) शिवाजी ने महिला से माता जैसा व्यवहार किया।

(ङ) अशिक्षित व्यक्ति चरित्रवान् नहीं बन सकता।

व्याकरण-ज्ञान

1. 'चरित्र' में 'वान्' प्रत्यय लगाने पर 'चरित्रवान्' बन जाता है। ऐसे ही कुछ अन्य शब्द लिखिए जिनके अंत में 'वान्' प्रत्यय आता है-

बलवान् ________ ________
________ ________
________ ________

2. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए

पारसल = ________ अशिक्षीत = ________
रिक्सावाले = ________ निरभरता = ________
सिवाजी = ________ चरचिल = ________

3. निम्नलिखित संयुक्ताक्षर से शब्द बनाइए

क्श = ________ ________
स्त = ________ ________
ल्क = ________ ________
द्वे = ________ ________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए

(क) धोखेबाज = ________
(ख) अभिवादन = ________
(ग) अशिक्षित = ________
(घ) निर्माण = ________
(ङ) द्वेष = ________

योग्यता-विस्तार

✤ महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी तथा महात्मा गांधी की चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कीजिए।

शिक्षण संकेत

छात्रों को स्वामी दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द के जीवन से परिचित कराइए।

18 गुलीवर की यात्राएँ

गुलवीर की यात्राएँ रहस्य और रोमांच से भरपूर हैं। इसकी यात्राओं में ऐसी-ऐसी जगहों और वहाँ के निवासियों का वर्णन है जो कोरी कल्पना या किसी दूसरी ही दुनिया के लगते हैं। प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही एक यात्रा का वर्णन है।

मैं एक जहाज पर व्यवसाय करता था। उस समय मैंने कई लंबी-लंबी यात्राएँ कीं और खूब आनंद उठाया।

एक समय की बात है कि हमारा जहाज दक्षिणी सागर से पूर्वी द्वीप की ओर जाते हुए तूफान में फँसकर चकनाचूर हो गया। परंतु मैं सौभाग्य से बच गया और तैरते हुए एक किनारे पर पहुँच गया और वहीं लेट गया। उस समय मैं बहुत थका हुआ था जिसके कारण मैं जल्दी ही सो गया।

जब मेरी नींद खुली तो मैंने अपने आपको पतले-पतले धागों से बँधा हुआ पाया। मैं बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे कोई चीज मेरे पैरों पर चढ़कर मेरी छाती पर आ रही है। यह मानव की आकृति थी जो बड़ी ही विशेष प्रकार की थी। यह देखने में बिल्कुल ही छोटी और दंग करने वाली आकार की थी। कुछ समय के पश्चात् सैकड़ों लोग मेरे शरीर पर चढ़ गए। मैं बहुत ही जोर से चिल्ला उठा। मैं जैसे ही चिल्लाया वे सभी नीचे की ओर लुढ़कते चले गए।

मैंने उनसे पूछा ''कौन हो तुम?'' उन्होंने कोई भी जवाब नहीं दिया। अब मैंने उठने का प्रयत्न किया तो मेरे शरीर से बँधे हुए धागे कुछ तो टूट गए और कुछ शरीर में ही चिपके रह गए। मैंने देखा कि वे लोग मेरे ऊपर सुई जैसी चीज से वार कर रहे थे। वास्तव में वह सुई जैसी दिखने वाली चीज उनके तीर कहलाते थे। मैंने सोचा कि चुपचाप लेटे रहने में ही भलाई है।

अब उन अद्भुत प्राणियों ने मेरे ऊपर तीर बरसाने बंद कर दिए। उनमें से एक प्राणी कुछ ऊँचाई पर खड़ा होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। दरअसल वह मुझसे कुछ कहना चाहता था। उस समय मुझे बहुत ही अधिक भूख लग रही थी। मैंने उससे कुछ खाने को माँगा परंतु वह मेरी बातों को समझ ही नहीं पाया। मैंने फिर से अपना हाथ अपने मुँह की ओर ले जाकर कहा तो वह समझ गया कि मैं भूख के विषय में बात कर रहा हूँ। अब वे मेरे लिए भोजन का प्रबंध करने लगे। उन सभी लोगों ने मेरे मुँह के पास एक लंबी-सी सीढ़ी लगा दी जिससे वे मुझे खाना खिला सकें। वे सभी सीढ़ियों से चढ़कर मेरे मुँह में टोकरी भर-भर कर डालने लगे। मेरा पेट भर चुका था इसलिए अब मैंने उनसे पानी की माँग की तो उन्होंने कई मटके मेरे मुँह

में डाल दिए। वे सभी आश्चर्य में पड़े हुए थे कि मेरा पेट है या फिर कोई बड़ी-सी खाई। अब मेरे पेट में बिल्कुल भी जगह नहीं रही थी। इसलिए मेरी पलकें भारी हुईं और मुझे गहरी नींद आ गई।

जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि मुझे कहीं ले जाया जा रहा था। यह देखकर मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा कि मुझे एक गाड़ी पर सवार करके ले जाया जा रहा था। एक तरफ उन छोटे-छोटे लोगों की भीड़ मेरे साथ-साथ चल रही थी। मैं समझ गया कि मुझे कैद कर लिया गया है। वे मुझे धीरे-धीरे लिलिपुट नामक स्थान पर ले गए। जहाँ के लोग मुझे देखने के लिए उमड़ पड़े। मेरे पहाड़ जैसे शरीर को देखकर वे सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए।

लिलिपुट के बादशाह ने मुझे एक पुराने मंदिर में कैद कर लिया क्योंकि राजधानी में यही केवल एक ऐसा स्थान था जहाँ पर मैं झुककर घुस सकता था। बाकि सभी मकान तो मेरे सामने खिलौने की भाँति लग रहे थे। वे सभी लोग जिस प्रकार मुझे देखकर चकित थे उसी प्रकार मैं भी उनकी इस दुनिया को देखकर चकित था। उनमें से कुछ लोग थोड़े शरारती थे जो कि मुझ पर तीर से वार कर रहे थे। तभी अचानक एक तीर मेरी बाईं आँख पर लग गया। यह देखकर वहाँ के सिपाहियों ने उन व्यक्तियों को पकड़कर मुझे सौंप दिया। उनमें से मैंने पाँच को तो अपनी कोट की जेब में ही रख लिया बाकि के व्यक्तियों को मैं अपनी अंगुली में पकड़कर अपने मुँह की ओर ले जाने लगा। वे सभी चिल्लाने लगे। वे सभी मुझसे बुरी तरह से डर चुके थे। परंतु मैंने उन सभी को जमीन पर ही छोड़ दिया। उन्हें छोड़ते ही वे इस प्रकार से भागे कि मानो जैसे किसी राक्षस के चँगुल से छूटकर भागे हों। इस बात का उन सभी लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। वहाँ के बादशाह ने जब यह सुना तो उसने मेरी प्रशंसा की।

वहाँ के लोग मेरे खाने-पीने के सामान के बारे में सोचने लगे कि इसके खाने पर कितना खर्च हो रहा है। इस तरह से हमारे देश में अकाल की स्थिति जल्दी ही आ जाएगी इसलिए उन्होंने एक साजिश रची। उन्होंने सोचा कि क्यों न इसे विषैले तीरों से मार दिया जाए। परंतु मेरा सौभाग्य था कि वहाँ का बादशाह उनकी बातों में नहीं आया। उसने मेरे भोजन-पानी का सारा दायित्व स्वयं पर ले लिया। उसने मेरे पास छह विद्वान भेजे जो मुझे उस देश की भाषा का ज्ञान कराने के लिए आए थे। कुछ ही समय में मैंने उन लोगों की भाषा भी सीख ली।

वहाँ के लोग मेरे स्वभाव और मेरे व्यवहार से बहुत खुश थे। अब वे सभी निडर होकर मेरे आस-पास घूमने लगे। कभी वे मेरे पास आकर मेरे शरीर के साथ खेलते तो कभी वे सिर पर चढ़ने लगते तो कभी हाथों-पैरों पर नाचने लगते। वहाँ के बच्चे तो मेरे बालों में छुपकर आँख-मिचौली खेला करते थे। इसी प्रकार मैं सभी का खिलौना बना हुआ था।

एक बार मैंने वहाँ के बादशाह से अपने घर वापस जाने की बात कही तो उसने मेरे सामने एक शर्त रख दी कि मैं बादशाह की आज्ञा के बिना कहीं भी आ जा ना सकूँ और किसी दूसरे से यद्ध छिड़ जाने पर मैं हमेशा लिलिपुट वालों की सहायता करूँगा।

उसके बाद मैं अपना समय वहीं पर बिताने लगा। कुछ समय बाद मुझे पता चला कि पड़ोसी देश ब्लेफुस्कू के बादशाह ने एक शक्तिशाली जहाज बेड़ा तैयार किया है और वह लिलिपुट पर आक्रमण की तैयारी कर रहा है, क्योंकि वहाँ के राजा ने मुझसे यह शर्त रखी थी कि मैं वहाँ के निवासियों की युद्ध में सहायता करूँगा। इसी कारण मैंने एक योजना सोची।

मैंने कुछ रस्सियाँ और कुछ काँटे लिए और समुद्र की ओर चल पड़ा। यह समुद्र मेरे लिए कोई अधिक गहरा नहीं था। परंतु उनके लिए यह बहुत ही बड़ा महासागर था। मैं समुद्र में घुस गया और वहाँ के सभी जहाजों को वहाँ से काँटों में फँसा लिया और उन्हें खींचकर लिलिपुट देश की ओर चल दिया। उसी समय ब्लेफुस्कू के सैनिकों ने मुझ पर तीर बरसाने शुरू कर दिए। परंतु उनके छोटे-छोटे तीरों का गुलीवर पर कोई असर नहीं हुआ।

ब्लेफुस्कू के जहाजों को खींचकर जब मैं लिलिपुट से मिले हुए समुद्रों में लाया तो वहाँ के बादशाह और लोगों ने मेरी बड़ी प्रशंसा की। वहाँ के बादशाह ने मुझे अपने देश की सबसे बड़ी उपाधि से सम्मानित किया।

एक बार मैं लिलिपुट के समुद्र के पास घूम रहा था कि अचानक वहाँ मुझे पानी में एक बहुत ही बड़ा तख्ता-सा दिखाई दिया। मैंने उसे ध्यान से देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक उल्टी हुई नाव थी। उसे देखकर मैं खुशी से नाच उठा क्योंकि वह मेरी आशाओं का दीपक बनकर आई थी।

कुछ दिन बाद मैंने वहाँ के बादशाह से अपने देश जाने की आज्ञा माँगी। उन्होंने मुझे आज्ञा दे दी और बड़े ही प्रेम-भाव से विदा किया। उन्होंने मेरी नाव में बहुत-सी भोजन सामग्री भी रख दी कि जिससे यदि मुझे रास्ते में कहीं भी भूख लगे तो मैं उनके द्वारा दिए गए भोजन का उपयोग करूँ। मैं थोड़ी ही दूर चला था कि मुझे समुद्र में जहाज आता हुआ दिखाई दिया। यह देखकर मेरी प्रसन्नता का ठिकाना ही नहीं रहा। उस जहाज के लोगों ने मुझे ऊपर की ओर खींच लिया। जब मैंने उनसे पूछा कि यह जहाज किस ओर जा रहा है तो उनके बताने पर मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा क्योंकि यह जहाज मेरे देश ही जा रहा था।

लिलिपुट से आकर मैं कुछ महीनों तक अपने घर पर ही रहा। उसके बाद मुझे एक जहाज पर नौकरी मिल गई। कुछ दिन बाद हमारा जहाज भारत जाने के लिए रवाना हुआ। अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम के किनारे पर चलते-चलते हम उत्तमाशा अंतरीप पहुँच गए।

उत्तमाशा अंतरीप से पूर्व की ओर चलने पर हमारा जहाज तूफान में फँसकर रास्ता भटक गया और हम भटकते हुए एक टापू पर जा पहुँचे। नाविक तो जहाज की देखभाल में लगे हुए थे और मैं अपने कुछ साथियों के साथ नाव लेकर पानी की तलाश में इधर-उधर घूमने लगा। लेकिन पानी कहीं भी नहीं मिला। मुझे एक पेड़ की छाँव दिखी और वहाँ लेट गया।

कुछ समय बाद जब मैं नाव की ओर पहुँचा तो मैंने देखा कि मेरे साथी नाव को तेजी से जहाज की ओर ले जा रहे थे। मैं उन्हें आवाज देने ही वाला था कि मेरी नजर एक बहुत विशाल आदमी पर पड़ी। वह देखने में राक्षस-सा प्रतीत हो रहा था। समुद्र का पानी उसके केवल घुटनों तक ही आ रहा था। उसे देखकर मैं अपनी जान की रक्षा करने के लिए वहीं पर स्थित एक खेत में जा छिपा। यह खेत वैसे तो जौं का था लेकिन यहाँ की जौं हमारे देश के पेड़ों से कम न थी। यहाँ की घास भी बहुत ही बड़ी-बड़ी थी और यहाँ के पेड़ तो पर्वतों की ऊँचाइयों का सामना कर रहे थे।

जौं के पौधे की आड़ में छिपे-छिपे मैंने देखा कि कुछ आदमी उसी खेत की ओर आ रहे हैं। उन्होंने जौं काटने शुरू किए तो उनमें से एक की नजर मुझ पर पड़ गई। उसने मुझे एक खिलौने की भाँति उठा लिया

और अपने हाथ पर रख लिया। उस समय मुझे लगा कि मैं एक ऊँचे से पेड़ की टहनी पर एक कबूतर की भाँति बैठा हूँ और लेकिन ऐसा नहीं था।

वह एक किसान था जो मुझे उलट-पलटकर देख रहा था। मेरी डर के मारे चीख निकलने लगी। मुझे चिल्लाता देखकर उसने मुझे जमीन पर छोड़ दिया। उस समय मेरी जान-में-जान आ गई। मैं चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें अपने बारे में बताना चाहता था। लेकिन वे मेरी बातों को समझें तभी तो मैं उन्हें अपने बारे में बता सकता था। उसने फिर मुझे अपनी हथेली पर रखा और अपने घर ले गया।

घर ले जाकर जैसे ही किसान ने अपनी पत्नी की तरफ अपना हाथ किया तो उसकी पत्नी एकदम डर-सी गई। उसे लगा कि जैसे कोई बिच्छू या फिर साँप है। यह देखकर किसान को बहुत ही आनंद आया। वह अपनी पत्नी को देखकर खिल-खिलाकर हँसने लगा और मुझे लगा कि जैसे कोई आँधी-सी आ गई है और बादल गरज रहे हैं। मैं आँखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ देखने लगा। वहाँ की सभी चीजें और प्राणी बहुत ही बड़े-बड़े आकार की लग रही थीं। नाँद जैसे प्याले, बड़े-बड़े थालों जैसी रोटियाँ और शेर-शेरनी जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ। वहाँ का छोटे-से-छोटा बच्चा भी बहुत ही बड़ा लग रहा था। इन सभी लोगों के बीच में अपने आपको एक मच्छर और मक्खी की भाँति अनुभव कर रहा था। लिलिपुट के लोग मुझे देखकर जितना हैरान हुए थे उनसे कहीं ज्यादा मैं इन्हें देखकर ही हैरान था।

इन लोगों के साथ रहकर मेरा भी भय खुल गया। इनका आकार ही डरावना था लेकिन वे सभी आदमी बहुत ही भले थे। मैंने उस देश की भाषा भी सीख ली थी जिसके कारण मुझे बहुत ही सुविधा हुई। कभी-कभी मैं मेज पर खड़े होकर किसान और उसके परिवार वालों को तरह-तरह के खेल दिखाता था। मेरा नाचना और तलवार चलाना उन सभी को बहुत अच्छा लगता था। मुझसे उनका अच्छा खासा मनोरंजन होता था। यह देखकर किसान के मित्र ने उसे सलाह दी कि वह राजधानी में लगने वाले मेले में टिकट लगाकर मेरा नाच दिखाए। किसान उसकी बातों से प्रभावित हुआ और मुझे एक लकड़ी के डिब्बे में बंद किया और मेले में ले गया।

मेले में सभी लोग मेरा खेल देखने के लिए टूट पड़े। वे मेरा खेल नहीं बल्कि मुझे देखना चाहते थे क्योंकि मैं उनके लिए एक जीता-जागता खिलौना था। यहाँ पर मुझे दिन में कम-से-कम दस बार अपना खेल दिखाना पड़ता था। इसी तरह से काफी रुपये जमा करने के बाद किसान ने मुझे एक देश की रानी को एक हजार सोने के सिक्कों के बदले बेच दिया।

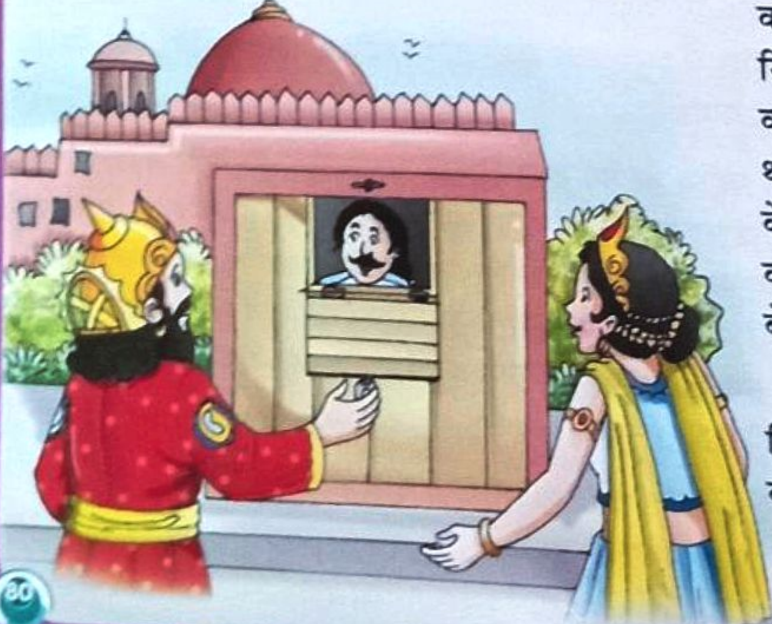

उस देश की महारानी ने मेरे लिए पिंजरा बनवाया। वह पिंजरा मेरे लिए किसी कमरे से कम न था। खाना खाते समय वह

महारानी मेरे पिंजरे को अपनी मेज पर रखती थी और मुझे अपने साथ खाना भी खिलाया करती थी। उसने मेरे लिए एक विशेष प्रकार की आकृति वाला बर्तन भी बनवाया था जो हमेशा ही मेरे सामने रखा रहता था।

एक बार राजा और रानी अपने नौकरों के साथ अपने राज्य का दौरा करने निकले, उन्होंने मुझे भी साथ ले लिया। चलते-चलते हम ऐसे नगर में पहुँचे जो कि समुद्र के समीप ही था। समुद्र को देखकर मुझे अपने देश की याद आ गई और मैं उदास होकर वहीं बैठ गया। तभी एक नौकर मेरा पिंजरा उठाकर समुद्र के किनारे पर ले गया। मेरे पिंजरे को वह एक चट्टान पर रखकर वह वहीं पर पड़े हुए रेत पर लेट गया।

समुद्र की ओर देखते-देखते मुझे न जाने कब नींद आ गई। खड़-खड़ की आवाज से जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि मेरा पिंजरा हवा में उड़ रहा था। अभी में सोच ही रहा था कि मेरा पिंजरा बहुत तेजी के साथ समुद्र में गिरने लगा। यह देखकर मेरी आँखें बंद हो गईं। मेरा पिंजरा एकदम समुद्र में डूब-सा गया। मैं डर गया लेकिन थोड़ी ही देर बाद यह पिंजरा नाव की भाँति तैरने लगा।

"खुला समुद्र और लहरों के हिलोरे, तीर की तरह चुभती हुई ठंडी हवा, खाने-पीने का कोई भी ठिकाना नहीं, मेरे दुर्भाग्य का कहाँ अंत होगा, यह मुझे भी नहीं पता था। मैंने सोचा कि इससे तो मैं महारानी के यहाँ पर ही सही था।"

मैंने सोचा कि अब जो मेरे भाग्य में लिखा होगा वही होगा। मैंने सब कुछ अपने भाग्य पर ही छोड़ दिया। उस असहाय स्थिति में पड़े-पड़े काफी देर हो गई थी मुझे लगा कि कोई मेरे पिंजरे को तेजी से खींच रहा था। पिंजरे की खिड़की को पकड़कर मैंने अपना हाथ बाहर निकाला और मदद के लिए आवाज लगानी आरंभ कर दी। जब बाहर से मुझे आवाज सुनाई दी तो मेरा रोम-रोम खिल उठा क्योंकि वह मेरे देश के लोगों की ही आवाज थी।

वे सभी मेरे ही देश के नाविक थे। उन्होंने जहाज पर खड़े होकर मेरे पिंजरे को देखा तो एक फंदा फेंककर उसे अपनी ओर खींच लिया। पिंजरे में एक जीवित मनुष्य को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा।

मैंने अपनी कहानी उन सभी को बताई तो वे बहुत ही चकित रह गए। उन्हें यह सुनकर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं इतने विशालकाय लोगों के बीच में रहकर भी वापस अपने देश लौट आया था।

मैं अब भी जब उन विचित्र लोगों के बारे में सोचता हूँ तो मुझे बहुत ही अनोखी बात महसूस होती है।

शब्दार्थ

चकित = हैरान; चकनाचूर = नष्ट; प्रभाव = असर; शीतल = ठंडा; उपाधि = सम्मान-सूचक शब्द; विशालकाय = बहुत बड़े शरीर वाला; नाविक = नाव में सवार यात्री; विचित्र = अनोखी, अद्भुत; डरावना = भयानक।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) जब गुलीवर की नींद खुली तो उसने अपने आपको किस स्थिति में पाया?

____

(ख) लिलिपुट के राजा ने गुलीवर को कहाँ कैद किया और क्यों?

____

(ग) लिलिपुट के बादशाह ने किन शर्तों पर गुलीवर को जाने दिया?

____

(घ) गुलीवर को पिंजरे में किसने बंद कर लिया?

____

(ङ) गुलीवर की यात्राओं को विचित्र क्यों कहा गया है?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) मैंने अपने आपको ________ धागों से बँधा हुआ पाया।

(ख) वास्तव में वह सुईं जैसी दिखने वाली चीज उनके ________ कहलाते थे।

(ग) समुद्र को देखकर मुझे मेरे ________ की याद आ गई।

(घ) मैंने अपने आपको अपने ________ के ऊपर छोड़ दिया।

(ङ) उस ________ स्थिति में पड़े-पड़े मुझे काफी देर हो गई थी।

- तीर
- देश
- पतले-पतले
- असहाय
- भाग्य

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए-

(क) जहाज में छेद होने के कारण गुलीवर का जहाज डूब गया। ◯

(ख) सर्वप्रथम गुलीवर छोटे लोगों के पास पहुँचा था। ◯

(ग) लिलिपुट के लोगों ने उसे अपने देश की भाषा सिखाई। ◯

(घ) किसान ने गुलीवर को रानी को बेच दिया। ◯

(ङ) अंत में गुलीवर लिलिपुट में ही रहने लगा। ◯

4. निम्नलिखित वाक्यों को कहानी के क्रमानुसार लिखिए-

(क) पिंजरे में एक जीवित मनुष्य को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

(ख) मेले में सभी लोग मेरा खेल देखने के लिए टूट पड़े।

(ग) समुद्र की ओर देखते-देखते मुझे न जाने कब नींद आ गई।

(घ) मेरी नजर एक विशालकाय आदमी पर पड़ी।

(ङ) अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम के किनारे पर चलते-चलते हम उत्तमाशा अंतरीप पहुँच गए।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए–

सैकड़ा	=	______	पड़ोसी	=	______
सुई	=	______	रस्सी	=	______
प्राणी	=	______	लकड़ी	=	______

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

मित्र	=	______	महारानी	=	______
ज्ञानी	=	______	विद्वान	=	______
आदमी	=	______	कवि	=	______

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

प्रसन्नता	=	______	______	______
राक्षस	=	______	______	______
आँख	=	______	______	______

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) भाषा = ______

(ख) सौभाग्य = ______

(ग) विचित्र = ______

(घ) आशाओं = ______

(ङ) समुद्र = ______

योग्यता-विस्तार

✤ तूफान में फँसी नाव का चित्र बनाइए तथा अपनी किसी यात्रा का वर्णन कक्षा में सुनाइए।

शिक्षण संकेत

छात्रों को सिन्दबाद की रोचक कहानियों के बारे में बताइए।

19 अब जाड़े की बारी आई

ऋतु-चक्र अपने नियम के अनुसार चलता रहता है। एक ऋतु के जाने के साथ ही दूसरी ऋतु के आगमन की तैयारी शुरू हो जाती है। प्रस्तुत कविता में जाड़े की ऋतु का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है।

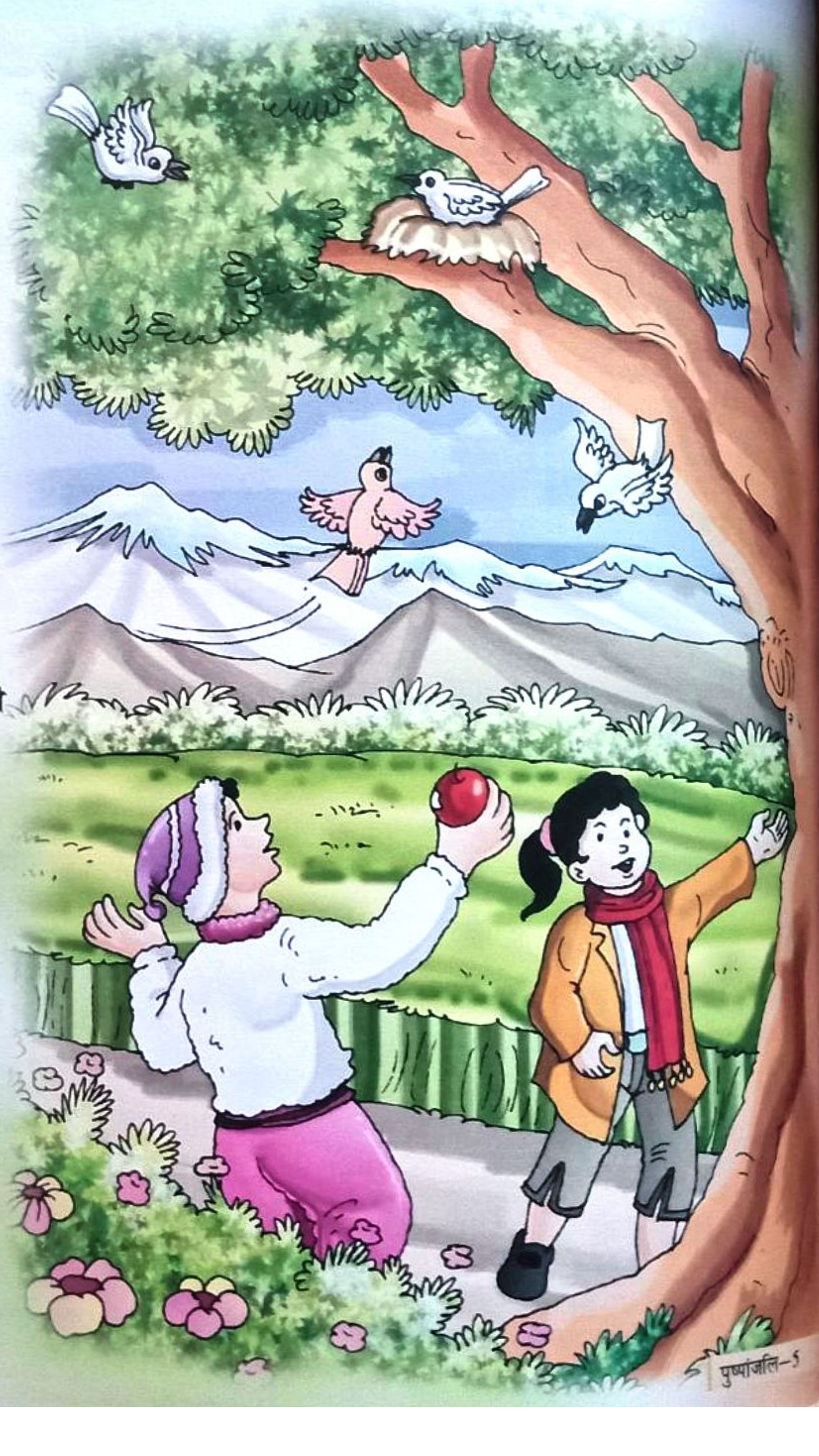

हुई विदाई वर्षा ऋतु की,
अब जाड़े की बारी आई।

मौसम हुआ सुहाना ऐसा,
बच्चे लगे नाचने-गाने।
घर की सीलन भरी वस्तुएँ
दादी-मम्मी लगीं सुखाने।

चिड़ियों ने पेड़ों की डाली
पर चह-चहाकर खुशी जुताई।

रेनकोट, बरसाती जूते,
छाते अब मुँह लगे छुपाने।
स्वेटर, मफलर और कोट की
फिर से सजने लगी दुकानें।
आई चादर और रजाई,
अब जाड़े की बारी आई।

हरी सब्जियाँ और फलों का
मौसम प्यारा-प्यारा आया।
खाकर सेहत खूब बनाने
का मौसम ने पाठ पढ़ाया।

अब सारे बच्चे करते हैं
जाड़े में दिन-रात पढ़ाई।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कविता में कौन-सी ऋतु की विदाई हुई है और कौन-सी ऋतु आई है?

____

(ख) दादी-मम्मी क्या करने लगी हैं?

____

(ग) जाड़े की ऋतु में कौन-कौन-सी दुकानें सजने लगी हैं?

____

(घ) मौसम ने क्या पाठ पढ़ाया है?

____

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए–

मौसम _______________ ऐसा,

बच्चे _______________ गाने।

घर _______________ वस्तुएँ

दादी _______________ सुखाने।

3. सही जोड़े बनाइए–

* हरी सब्जियाँ	* ने पाठ पढ़ाया
* मौसम प्यारा	* खूब बनाने
* खाकर सेहत	* और फलों का
* का मौसम	* प्यारा आया

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए–

सुखाने	= _______________	मौसम	= _______________
जूते	= _______________	चादर	= _______________
आया	= _______________	रजाई	= _______________
बारी	= _______________	सीलन	= _______________

2. कविता में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए-

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) चह-चहाकर =

(ख) सीलन =

(ग) मौसम =

(घ) हरी सब्जियाँ =

(ङ) विदाई =

योग्यता-विस्तार

- कविता को याद करके कक्षा में सुनाइए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को मौसम-परिवर्तन के कारकों से अवगत कराएँ तथा किस ऋतु के बाद कौन-सी ऋतु आती है, यह भी बताएँ।

20 ग्रामीण जीवन

गांधी जी का कहना था कि वास्तविक भारत गाँवों में बसता है। यदि भारत की सच्ची संस्कृति और सभ्यता के दर्शन करने हैं तो गाँव का जीवन देखो जो बिल्कुल सरल और शहरी बनावट से कोसों दूर है। प्रस्तुत पाठ में ऐसे ही ग्रामीण जीवन की झलक प्रस्तुत की गई है।

विशाल एक डॉक्टर का पुत्र था। उसके पिताजी एक बहुत बड़े डॉक्टर थे। उनका अपना एक अस्पताल शहर में भी था। वहाँ विशाल के पिताजी रोगियों की देख-रेख बड़ी ही सावधानी के साथ किया करते थे। विशाल और उसके पिताजी ने गाँव जाकर अपना अस्पताल खोलने का निश्चय किया, तो इस बात को सुनकर उनके सभी मित्रों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

रेलगाड़ी में पिताजी और माताजी बहुत ही खुश दिखाई दे रहे थे। तभी पिताजी ने विशाल से कहा "विशाल, गाँव में जाकर रहना मेरा बहुत ही पहले का सपना था। परंतु मेरे साथ कुछ घटनाएँ घटीं जिसके कारणवश मैं अपना यह सपना शीघ्र पूरा नहीं कर सका। मेरा जन्म मेरे गाँव में ही हुआ। जहाँ मैंने बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करने के पश्चात् आज यह मुकाम प्राप्त किया है। मैंने अपनी शिक्षा शहर में अपने चाचाजी के यहाँ पूरी की क्योंकि उस समय हमारे गाँव में विद्यालयों की बहुत कमी थी। उस समय हमारे गाँव में एक भी पाठशाला नहीं थी। मुझे इस बात का बहुत ही दुःख था।

जब हमारी पाठशाला की छुट्टियाँ होतीं तो मैं अपने गाँव में अपनी छुट्टियाँ बिताने के लिए चला जाता था। मैं वहाँ बहुत मौज-मस्ती किया करता था। दिन-भर अपने खेतों में घूमता रहता और मीठे-मीठे फल भी खाया करता था। कई बार तो मैंने खेतों में ताजे गन्ने तोड़कर चूसे हैं। जितना शुद्ध वातावरण मुझे अपने गाँव में मिलता था, वह मुझे शहर में नहीं मिलता। शहरों में तो चारों तरफ प्रदूषण-ही-प्रदूषण फैला होता है। मैं गाँव में अपने घर पर हरी-हरी और ताजी-ताजी सब्जियाँ तथा बाजरे व मकई की रोटी खाता था। मैं अपने गाँव में मक्खन और ताजे गन्नों का बना हुआ गुड़ खाता था जो मुझे शहर में खाने को नहीं मिलता था। मैंने गाँव में बहुत ही मजे किए थे, लेकिन रात के समय में गाँव मुझे अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उस समय गाँव में बिजली नहीं हुआ करती थी। गाँव में कहीं-कहीं लालटेन की थोड़ी बहुत रोशनी नजर आती, इसके अलावा पूरे गाँव में चारों तरफ घुप अँधेरा ही होता था। मैं अपने सपनों में यह सोचता था कि कितना अच्छा होता यदि यहाँ पर भी बिजली का प्रबंध हो जाए।

समय बीतता चला गया और कुछ समय बाद ही हमारे गाँव में बिजली का प्रबंध हो गया। बिजली के आने से हमारे गाँव में एक पाठशाला भी खुल गई। अब हमारे गाँव के बच्चों को पढ़ने के लिए गाँव से बाहर नहीं जाना पड़ता। उस समय भी मैं अपने गाँव वापस नहीं आ सका, क्योंकि उस समय मैं अपनी डॉक्टरी की शिक्षा पूरी कर रहा था। यह समय मेरे जीवन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण समय था। इसलिए मैं अपने गाँव नहीं जा सका।''

इतना कहकर विशाल के पिताजी शांत हो गए और सोने की तैयारी करने लगे। परंतु विशाल को और बातें सुनने की उत्सुकता मन में बढ़ने लगी। उसने अपने पिताजी को सोने नहीं दिया और कहा कि पिताजी आगे क्या हुआ मैं जानना चाहता हूँ।''

क्योंकि उसके पिताजी को नींद आ रही थी, इसलिए वह कुछ समय चुपचाप बैठे रहे और फिर उदास होकर बोले ''जब मैं अपनी डॉक्टरी की शिक्षा पूरी कर रहा था, उस समय मेरे पास मेरे पिताजी के बीमार होने की सूचना आई। मैं उनकी बीमारी की सूचना सुनते ही गाँव के लिए रवाना हो गया। लेकिन मेरे पहुँचने से पहले ही मेरे पिताजी ने अपना दम तोड़ दिया। मुझे बाद में पता चला कि डॉक्टरी सुविधा न मिलने पर ही उनका स्वर्गवास हुआ था। यह बात जानकर मुझे बड़ा धक्का लगा और मैंने उसी दिन अपने मन में यह प्रतिज्ञा की कि मैं आजीवन समाज की सेवा डॉक्टर के रूप में करता रहूँगा। मुझे जैसे भी अवसर प्राप्त होगा मैं अपने गाँव जाकर गाँववासियों को रोगों से दूर रखने की कोशिश करूँगा। इसलिए ही मैंने अपने गाँव में अपनी जमीन पर एक अस्पताल खोलने का निश्चय किया है। मेरे पास अपने पिताजी की दी हुई जमीन तो थी लेकिन अस्पताल बनाने के लिए कुछ रुपयों की आवश्यकता थी। इसलिए मैंने सरकार से सहायता माँगी जो सरकार ने पूरी भी की और आज हम अपने गाँव पुनः लौट रहे हैं। मुझे इस बात की बहुत ही खुशी है। आज लगभग मेरा सपना पूरा होने जा रहा है।'' विशाल अपने पिताजी की बातों को ध्यानपूर्वक सुन रहा था कि अचानक रेलगाड़ी रुक गई। जब विशाल के पिताजी ने बाहर देखा तो उनके गाँव का स्टेशन आ चुका था। वे सभी गाड़ी से नीचे उतरे और उन्होंने देखा कि विशाल के चाचाची उन्हें लेने के लिए स्टेशन आए हुए थे।

विशाल उस स्टेशन को बड़े आश्चर्य से देखने लगा। उसने देखा कि यह एक छोटा-सा स्टेशन है और यहाँ एक-दो ही रिक्शे खड़े हैं और यहाँ पर भीड़ भी नहीं है। पिताजी ने विशाल से हँसते हुए कहा ''विशाल तुम जानते हो कि जब मैं पहले यहाँ आता था, उस समय यहाँ पर कोई रिक्शा नहीं हुआ करता था, सभी लोग पैदल ही जाया करते थे और कई लोगों को लेने के लिए उनके गाँव से बैलगाड़ी आती थी।''

कुछ समय पश्चात् वे सभी अपने गाँव पहुँच गए। विशाल ने देखा ईंटों का एक बहुत बड़ा मकान बना हुआ है और मकान के चारों तरफ हरे-भरे खेत थे जो दिनभर लहलहाते रहते थे। पिताजी ने विशाल को खेतों की ओर इशारा करते हुए कहा ''ये सभी खेत हमारे हैं।'' इतने में दादीजी बाहर आईं। सबने दादीजी को प्रणाम किया और अंदर चले आए। दादीजी विशाल को बहुत प्यार करती थीं। उन्होंने विशाल के सिर पर हाथ फेरा और उसे ताजी लस्सी बनाकर दी। अब रात काफी हो चुकी थी इसलिए वे सभी सो गए।

जब विशाल प्रातः कालीन समय में उठा तो उसने देखा कि घर के आँगन में एक बहुत बड़ा कुआँ था। कुएँ के चारों ओर बहुत बड़ी दीवार लगी हुई थी। उसके ऊपर टीन की एक छत भी थी जिसके पास एक

नल भी लगा हुआ था। आँगन के एक ओर तुलसी का एक पौधा भी लगा हुआ था। गाँव में तुलसी का बहुत ही ज्यादा महत्त्व माना जाता है। यह तुलसी का पौधा गाँव में ज्यादातर सभी लोगों के घरों में पाया जाता है। घर के पास तरह-तरह के पौधे लगे हुए थे जो देखने में बहुत ही सुंदर लग रहे थे।

विशाल कुएँ पर नहाने के लिए गया। कुएँ का पानी बहुत ही शीतल था। विशाल को नहाने में बहुत ही आनंद आया। वह बहुत देर तक कुएँ के पानी से नहाता रहा। स्नान करने के बाद जब वह अंदर घर में पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी दादीजी ने उसके लिए चूल्हे की गर्म-गर्म रोटी बना रखी थी और बहुत सारा मक्खन भी रखा हुआ था। दूसरी थाली में गुड़ और दही भी रखा हुआ था जो गाँव में ज्यादातर खाना खाने के बाद खाया जाता है। विशाल ने सारा खाना खा लिया और वह घूमने के लिए निकल पड़ा।

वह घूमने के लिए अपने चाचाजी के साथ गया था। उसके चाचाजी उसे सारा गाँव दिखाने के लिए निकल पड़े। जब विशाल अपने चाचाजी के साथ घर से बाहर निकला तो उसने पशुशाला और जहाँ पर पंचायत होती थी वह जगह देखी। पशुशाला में कुछ गायें और भैंसें बंधी हुई थीं। पंचायत होने वाले स्थान पर कुछ लोग बैठे हुए थे। गाँव में पक्की नालियाँ भी बनी हुई थीं। पूरे गाँव में कहीं भी मक्खी या मच्छर नहीं था। गोबर की बदबू भी बहुत ही कम मात्रा में आ रही थी।

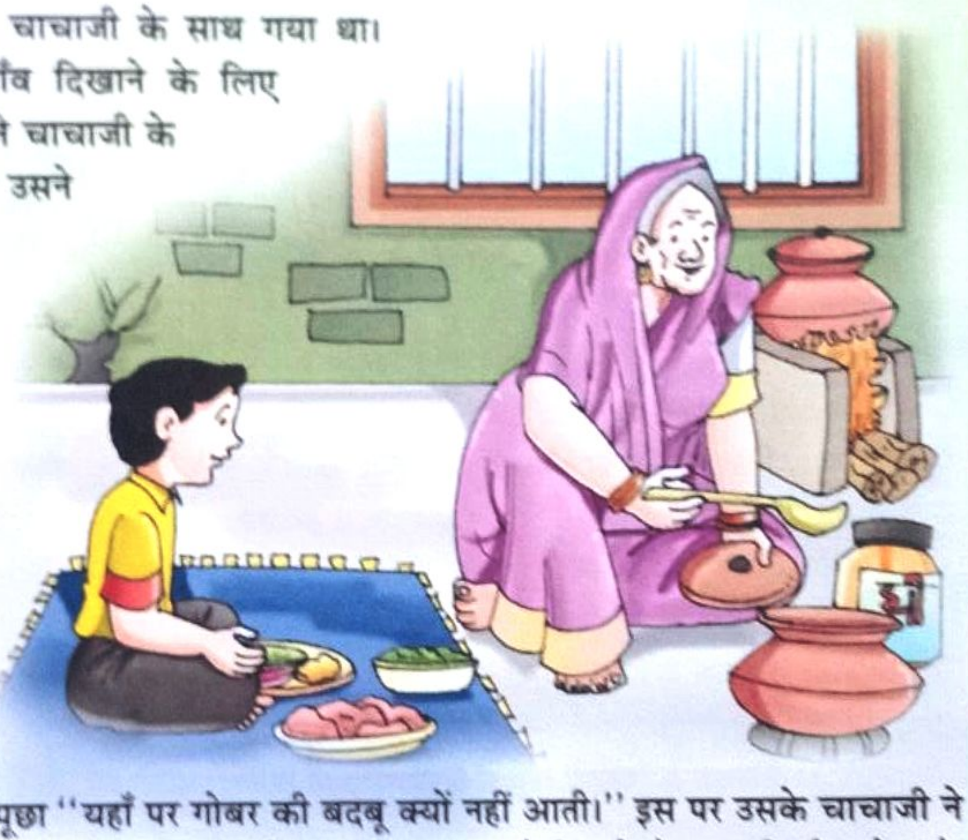

उसने जब अपने चाचाजी से पूछा ''यहाँ पर गोबर की बदबू क्यों नहीं आती।'' इस पर उसके चाचाजी ने बताया ''पूरे गाँव का गोबर, गोबर गैस की टंकी में डाल दिया जाता है जिससे गैस का निर्माण होता है। इससे खेती करने के लिए खाद बनाई जाती है। तुम्हारी दादीजी गोबर गैस पर ही खाना बनाती हैं। गाँव के कई घरों में इसका प्रयोग उजाला करने के लिए भी किया जाता है।

चाचाजी फिर से बोले, ''विशाल इस समय तो खेती के नए-नए आधुनिक साधन भी उपलब्ध हो चुके हैं। गाँव के कुछ लोगों ने तो अपने-अपने घरों में छोटे-छोटे उद्योग भी चला रखे है। जिससे उनको बहुत ही लाभ हुआ है। हमारे पड़ोसी ने हथकरघा लगा रखा है जिस पर सूती चादरें और दरियाँ बनाने का काम होता है।

विशाल धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ता चला गया। उसने गाँव के बड़े-बड़े खेत देखे। उसने देखा कि खेतों में कहीं ट्यूबवैल तो कहीं ट्रैक्टर चल रहे हैं। विशाल को यह सब देखकर बहुत आनंद आया। अब

वह थोड़ा थक चुका था इसलिए वह वहीं एक आम के पेड़ की छाँव में बैठ गया। उसने वहाँ कोयल की कू-कू की आवाज सुनी जो बहुत ही मधुर थी तथा दूसरी ओर बैलों के गले में लगी हुई घंटी की आवाज भी सुनाई दे रही थी।

विशाल को यह सब देखकर बहुत ही अच्छा लगा। उसने अपने चाचाजी से कहा ''चाचाजी अब घर वापस लौट चलिए। वे दोनों घर पर वापस लौट आए। विशाल रात को सोते समय सोचने लगा कि ग्रामीण जीवन कितना अच्छा होता है और फिर वह सो गया।

शब्दार्थ

आश्चर्य = हैरान; प्रतिज्ञा = किसी काम को करने का संकल्प लेना; शीतल = ठंडा; निर्माण = बनाना; शांत = चुप; मधुर = मीठी; विशाल = बड़ा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) विशाल कौन था और वह अपने माता-पिता के साथ कहाँ जा रहा था?

____

(ख) विशाल के पिताजी ने अपने चाचा के यहाँ शिक्षा क्यों प्राप्त की?

____

(ग) विशाल के पिताजी छुट्टियों में गाँव में आकर क्या-क्या करते थे?

____

(घ) विशाल के पिताजी गाँव में अस्पताल क्यों खोलना चाहते थे?

____

(ङ) विशाल की दादी जी ने विशाल को खाने में क्या-क्या दिया?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) विशाल और उसके पिताजी ने गाँव जाकर अपना ________ खोलने का निश्चय किया।

(ख) बिजली के आने से हमारे गाँव में एक ________ भी खुल गई।

(ग) विशाल के चाचाजी उन्हें लेने के लिए ________ आए हुए थे।

(घ) आँगन के एक ओर ________ का एक पौधा भी लगा हुआ था।

(ङ) ________ में कुछ गायें और भैंसें बंधी हुई थीं।

- स्टेशन
- पशुशाला
- पाठशाला
- अस्पताल
- तुलसी

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) विशाल के पिता किसान थे।

(ख) विशाल अपने दादी के घर गया।

(ग) विशाल के पिता गाँव में पाठशाला खोलना चाहते थे।

(घ) विशाल की दादी ने उसे चूल्हे की रोटी खिलाई।

(ङ) ठंडा पानी होने के कारण विशाल कुएँ के पानी से नहीं नहाया।

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

कोयले	= ______	कुएँ	= ______
दरियाँ	= ______	भैंस	= ______
चादर	= ______	चूल्हे	= ______

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

भैंस	= ______	पिता	= ______
गाय	= ______	चाचा	= ______
पुत्र	= ______	दादी	= ______

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) सिंचाई = ______

(ख) पंचायत = ______

(ग) पाठशाला = ______

(घ) डॉक्टर = ______

(ङ) नालियाँ = ______

योग्यता-विस्तार

✤ आधुनिक युग में किसानों को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है? लिखिए।

शिक्षण-संकेत

किसानों को सरकार द्वारा कौन-कौन सी सुविधाएँ दी जा रही हैं? छात्रों को अवगत कराएँ।

महान् लोगों का जीवन अपना नहीं होता, वे तो जन कल्याण के लिए धरती पर आते हैं। और उनका कल्याण का उनकी क खुशी के लिए संसार से चले जाते हैं। प्रस्तुत पाठ एसे ही एकमहान् दार्शनिक सुकरात का परिचय है।

21 सुकरात

यूनान हमारे देश की तरह ही एक बहुत प्राचीन देश है। आज से लगभग 2400 वर्ष पूर्व इस देश के एथेन्स नगर में एक व्यक्ति की बहुत चर्चा थी। वह देखने में बहुत बदसूरत और नाटे कद का था, परंतु एथेन्स के निवासी उसका बड़ा आदर करते थे। युवकों को अंधविश्वास से हटाकर सुमार्ग पर चलाने के लिए वह दिन-रात घूमा करता था। उसे प्रतिदिन नगर की सड़कों पर युवकों से घिरा हुआ देखा जा सकता था। उसे सत्य से असीम प्रेम था। सत्य की रक्षा के लिए उसने जहर का प्याला पीया था। वह व्यक्ति था–सुकरात।

सुकरात के पिता एक साधारण संगतराश थे और माता धाय थी। उसकी प्रारंभिक शिक्षा एक साधारण बालक की भाँति ही हुई। अपनी आयु के अन्य बच्चों की भाँति वह स्कूल जाता था, जहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण विषय संगीत व शारीरिक व्यायाम थे। उसने विज्ञान तथा गणित भी सीखा। उसने तारामंडल के विषय में भी ज्ञान प्राप्त किया, वह बहुत चिंतनशील था। वह हर समय अपने साथियों का अवलोकन करता रहता था। बहुत ही कम ऐसी बातें थीं जो उसकी दृष्टि से बच पाती थीं। बड़े होकर कुछ समय तक सुकरात एथेन्स की सेना में रहा। वहाँ उसने अपूर्व वीरता का परिचय दिया।

सुकरात एथेन्स को एक पूर्ण आदर्श राज्य देखना चाहता था। वह अपने अनुयायियों से कहा करता था कि ऐसा तभी हो सकता है, जबकि प्रत्येक नागरिक अपने स्वचिंतन की योग्यता का विकास कर सके। इससे वे यह जान सकते हैं कि क्या उचित, न्यायसंगत, सत्य और सुंदर है। सुकरात कहा करता था कि किसी बात को केवल इसलिए स्वीकार मत करो, क्योंकि ऐसा बड़े लोगों ने कहा है। स्वयं उसकी सत्यता की जाँच करो। यदि यह पता चले कि वह सत्य है, तभी उसको मानो और उसी के अनुसार अपना आचरण बनाओ।

सुकरात का विश्वास था कि प्रश्न पूछने और वाद-विवाद से सत्य की खोज में सहायता मिलेगी। इसी कारण वह हमेशा आम रास्तों पर खड़ा हो जाता था। आते-जाते लोगों को रोककर उनसे प्रश्न पूछता। लोगों के निरुत्तर होने पर उन प्रश्नों के उत्तर भी स्वयं देता। तब लोगों की समझ में आता था कि उनका ज्ञान कितना कम है। सुकरात घुमा-फिराकर उनसे वही बात कहलवा लेता था जो वह उन्हें बताना चाहता था। इस प्रकार उसने चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैला दिया।

सुकरात का यह भी विश्वास था कि मनुष्य स्वभाव से बुरा नहीं होता। वह अपने अज्ञान के कारण बुरे कार्य कर बैठता है। यदि उसका अज्ञान दूर हो जाए और वह सत्य को जान जाए तो वह अच्छा और सुखी मनुष्य बन जाएगा। उसने यह निश्चय किया कि एथेन्सवासियों के जीवन को सुखी बनाने में वह उनकी सहायता करेगा।

सुकरात को धन-वैभव या प्रसिद्धि की कोई लालसा नहीं थी। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उसने अपने शारीरिक आराम और सुख की ओर सोचना बिल्कुल बंद कर दिया। वह सभी कार्य छोड़कर सत्य और श्रेष्ठ जीवन की खोज में लगा रहा। एक बार वह यूनान की कौंसिल का सदस्य भी बना। वही एक सदस्य था जिसने कौंसिल में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। सुकरात का शिक्षा देने का ढंग इतना सरल और प्रभावपूर्ण था कि थोड़े ही समय में उसके समर्थकों की संख्या बहुत बढ़ गई। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। युवक और वृद्ध, धनी और निर्धन, कवि और दार्शनिक सभी उसका अनुसरण कर अपने को धन्य मानते थे।

परंतु एथेन्स के शासकों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्हें उसके बढ़ते हुए प्रभाव से डर लगने लगा। वे उससे ईर्ष्या करते थे। उन्होंने उसे चुप कराने का निश्चय किया। उन्होंने सुकरात पर आरोप लगाया कि वह एथेन्स के देवी-देवताओं में आस्था नहीं रखता और देश के नवयुवकों को गलत राह पर ले जा रहा है। वह प्रश्न करके मस्तिष्क में प्राचीन विश्वासों के प्रति संदेह भर रहा है। वह उन्हें अपने बड़े-बूढ़ों की अवज्ञा सिखा रहा है तथा लोगों को विद्रोह करने के लिए उकसा रहा है। उस पर अभियोग चलाया गया।

सभी जानते थे कि अभियोग बिल्कुल झूठा है, लेकिन उन्हें यह भी पता था कि शासकों से सुकरात को कभी न्याय नहीं मिलेगा; अतः सुकरात के मित्रों ने उससे बचकर भाग निकलने या छिप जाने की प्रार्थना की, परंतु सुकरात कायर नहीं था। वह जानता था कि उसने कोई गलत कार्य नहीं किया है और केवल वही सिखाया है, जिसे वह सही, उचित और सम्माननीय समझता था। वह न्यायालय में उपस्थित हुआ। उससे कहा गया कि वह अपना अपराध स्वीकार करे और क्षमा माँगे। इसके उत्तर में सुकरात ने एक सशक्त और शानदार भाषण दिया, उसने कहा ''यदि आप इस शर्त पर मुझे मुक्त करना चाहते हैं कि मैं सत्य की राह त्याग दूँ तो ऐसा असंभव है। सत्य के लिए मुझे सौ बार भी मरना पड़े तो मैं तैयार हूँ। अच्छे व्यक्ति का उसके जीवन में या मृत्यु के बाद कोई बुरा नहीं हो सकता।''

न्यायाधीश बड़े असमंजस में थे, तो भी उन्होंने उसे मृत्युदंड सुना दिया। सुकरात के मित्र इस निर्णय को सुनकर शोक में डूब गए। बहुत-से लोग तो यह सुनकर रोने लगे, परंतु सुकरात उन्हें सांत्वना देता रहा। सुकरात तो इस दंड के लिए पहले से ही तैयार था। वह बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। अपने परिवार-जनों को उसने समझाया-बुझाया और धीरज बँधाया।

उन दिनों एथेन्स में जब किसी को मृत्युदंड दिया जाता था तो उसे पीने के लिए जहर का प्याला दिया जाता था। सुकरात के सम्मुख भी जहर का प्याला पेश किया गया। उसने प्याला पी लिया और सदा के लिए इस संसार से विदा हो गया। सुकरात मरकर भी अमर हो गया। उसकी शिक्षा आज भी हमें सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रही है।

शब्दार्थ

नाटे = छोटे; विचलित होना = घबराना; सुमार्ग = अच्छा रास्ता; सम्मुख = सामने; चिंतनशील = विचारवान; वीरता = बहादुर; स्वचिंतन = खुद सोचना-समझना; निरुत्तर = उत्तर न देना; ख्याति = प्रसिद्धि; असमंजस = दुविधा; सांत्वना = तसल्ली।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) सुकरात के सबसे महत्वपूर्ण विषय क्या थे?

____

(ख) सुकरात दिन रात क्यों घूमा करता था?

____

(ग) सुकरात के अनुसार सत्य की खोज किस प्रकार की जा सकती है?

____

(घ) उन दिनों मृत्युदंड की सजा कैसे दी जाती थी?

____

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

- लालसा
- अभियोग
- बदसूरत
- नाटे
- अवलोकन

(क) सुकरात देखने में __________ और __________ कद का था।

(ख) सुकरात अपने साथियों का __________ करता रहता था।

(ग) सुकरात को धन-वैभव या प्रसिद्धि की कोई __________ नहीं थी।

(घ) सभी जानते थे कि __________ बिल्कुल झूठा है।

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) सुकरात यूनान देश के रहने वाले था। ◯

(ख) एथेन्स के शासक सुकरात को अपने लिए घातक मानते थे। ◯

(ग) सुकरात लोगों को गलत राह पर ले जाकर उन्हें विद्रोह के लिए उकसा रहा था। ◯

(घ) सुकरात मृत्युदंड मिलने पर विचलित हो गया। ◯

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) अवलोकन = _______________________

(ख) मृत्युदंड = _______________________

(ग) संदेह = _______________________

(घ) आदर्श = _______________________

योग्यता-विस्तार

✤ ऐसे ही अन्य महापुरुषों की जीवनी पढ़िए जो सत्य-मार्ग पर चलते हुए इस संसार से विदा हुए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को ईसा मसीह के जीवन से अवगत कराइए।

22 शहीद भगत सिंह

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 'शहीद-ए-आजम' का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। शायद ही कोई भारतवासी हो जो उनके नाम से परिचित न हो। प्रस्तुत पाठ चित्रकथा के रूप में है जो भगत सिंह के जीवन की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत कर रहा है।

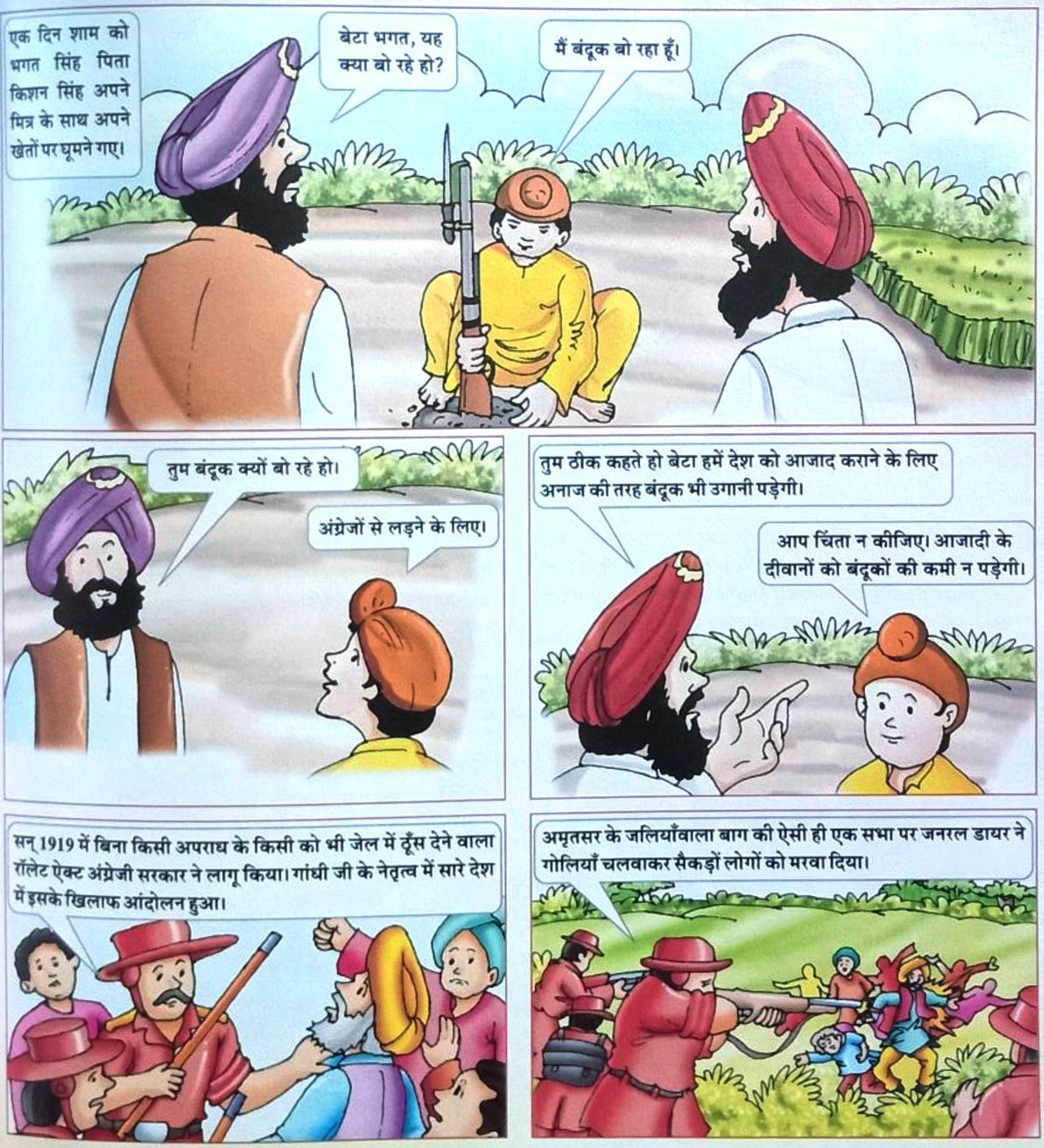

घटना के बाद भगतसिंह जलियाँवाला बाग पहुँचे और वहीं से थोड़ी-सी खून से रंगी लाल मिट्टी उठा लाए।
यह मिट्टी मुझे अपने कर्त्तव्य के लिए सर्वस्व त्याग करने की प्रेरणा देती रहेगी।
बाद में लाहौर में भगतसिंह और उनके साथियों ने 'नौजवान भारत सभा' नामक संगठन बनाया।
मैं अपनी जाति के बजाय देश के हित को मान्यता देने का वचन देता हूँ।
भारत की राजनीतिक स्थिति के अध्ययन के लिए अंग्रेजी सरकार ने साइमन कमीशन बनाया, जिसमें कोई भी भारतीय न था। लोगों ने इसका विरोध किया। भगतसिंह ने इसके विरोध के लिए भारत सभा की मीटिंग बुलाई।
साइमन कमीशन वापस जाओ। वापस जाओ।
अक्टूबर 1928 को पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकला।
भारत भारतीयों का है।
साइमन कमीशन का विरोध करते समय लाला लाजपतराय पर पुलिस सुपरिटेंडेंट स्कॉट ने लाठियाँ चलवाईं। लाला जी को बचाने के लिए भगतसिंह और उनके साथियों ने घेरा बना लिया। मगर लालाजी लाठियों की चोट से बच न सके और दो सप्ताह बाद स्वर्ग सिधार गए।
17 दिसंबर, 1928 को लालाजी की हत्या का बदला लेने के लिए अपने साथी राजगुरु के साथ भगतसिंह पुलिस स्टेशन के पास छिप गए और जयगोपाल पुलिस स्टेशन के सामने साइकिल ठीक करने का नाटक करने लगे।
पुलिस स्टेशन
अंग्रेजी अफसर मोटर साइकिल चालू कर ही रहा था कि जयगोपाल के इशारा करते ही गोलियों की बौछार हो गई।
भगतसिंह और राजगुरु पुलिस स्टेशन के सामने डी० ए० वी० कॉलेज की ओर भागे। दो सिपाहियों ने उनका पीछा किया।
भगतसिंह ने उन्हें चेताया।
एक कदम भी बढ़ाया तो गोली मार दूँगा।
सिपाही ने नहीं सुना। भगतसिंह ने गोली चला दी। एक सिपाही मारा गया।

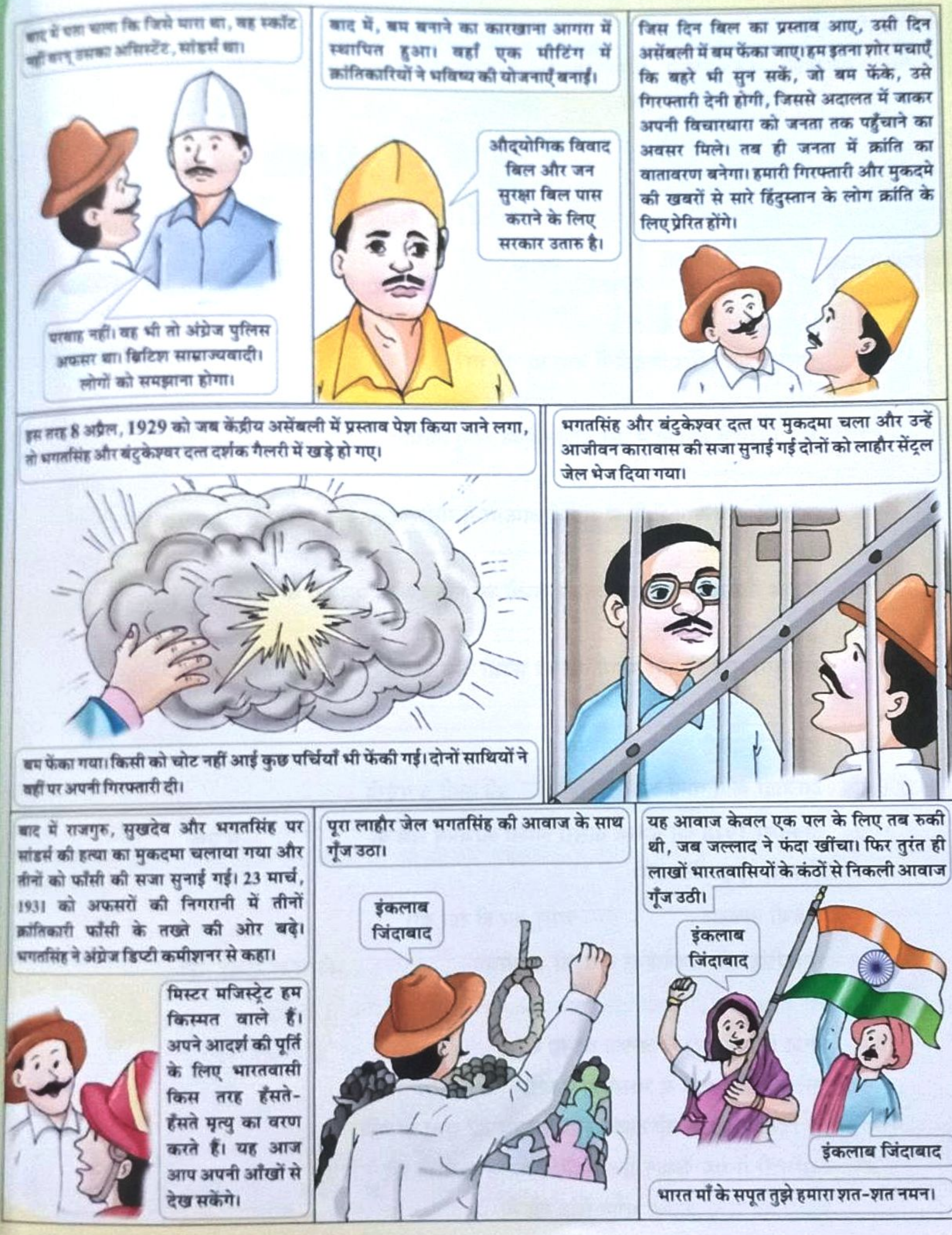

बाद में पता चला कि जिसे मारा था, वह स्कॉट नहीं बल्कि उसका असिस्टेंट, सांडर्स था।
परवाह नहीं। वह भी तो अंग्रेज पुलिस अफसर था। ब्रिटिश साम्राज्यवादी। लोगों को समझाना होगा।
बाद में, बम बनाने का कारखाना आगरा में स्थापित हुआ। वहाँ एक मीटिंग में क्रांतिकारियों ने भविष्य की योजनाएँ बनाईं।
औद्योगिक विवाद बिल और जन सुरक्षा बिल पास कराने के लिए सरकार उतारु है।
जिस दिन बिल का प्रस्ताव आए, उसी दिन असेंबली में बम फेंका जाए। हम इतना शोर मचाएँ कि बहरे भी सुन सकें, जो बम फेंके, उसे गिरफ्तारी देनी होगी, जिससे अदालत में जाकर अपनी विचारधारा को जनता तक पहुँचाने का अवसर मिले। तब ही जनता में क्रांति का वातावरण बनेगा। हमारी गिरफ्तारी और मुकदमे की खबरों से सारे हिंदुस्तान के लोग क्रांति के लिए प्रेरित होंगे।
इस तरह 8 अप्रैल, 1929 को जब केंद्रीय असेंबली में प्रस्ताव पेश किया जाने लगा, तो भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त दर्शक गैलरी में खड़े हो गए।
बम फेंका गया। किसी को चोट नहीं आई कुछ पर्चियाँ भी फेंकी गईं। दोनों साथियों ने वहीं पर अपनी गिरफ्तारी दी।
भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त पर मुकदमा चला और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई दोनों को लाहौर सेंट्रल जेल भेज दिया गया।
बाद में राजगुरु, सुखदेव और भगतसिंह पर सांडर्स की हत्या का मुकदमा चलाया गया और तीनों को फाँसी की सजा सुनाई गई। 23 मार्च, 1931 को अफसरों की निगरानी में तीनों क्रांतिकारी फाँसी के तख्ते की ओर बढ़े। भगतसिंह ने अंग्रेज डिप्टी कमीशनर से कहा।
मिस्टर मजिस्ट्रेट हम किस्मत वाले हैं। अपने आदर्श की पूर्ति के लिए भारतवासी किस तरह हँसते-हँसते मृत्यु का वरण करते हैं। यह आज आप अपनी आँखों से देख सकेंगे।
पूरा लाहौर जेल भगतसिंह की आवाज के साथ गूँज उठा।
इंकलाब जिंदाबाद
यह आवाज केवल एक पल के लिए तब रुकी थी, जब जल्लाद ने फंदा खींचा। फिर तुरंत ही लाखों भारतवासियों के कंठों से निकली आवाज गूँज उठी।
इंकलाब जिंदाबाद
इंकलाब जिंदाबाद
भारत माँ के सपूत तुझे हमारा शत-शत नमन।

शब्दार्थ

सर्वस्व = सब कुछ; नमन = प्रणाम, नमस्कार; दर्शक = देखने वाले लोग; आजीवन = संपूर्ण जीवन; निगरानी = किसी पर नजर रखना; कंठ = गला; शत-शत = बार।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) बालक भगत सिंह मिट्टी में क्या बो रहा था?

______

(ख) सन् 1919 में अंग्रेजों ने क्या रॉलेट ऐक्ट लागू किया?

______

(ग) जलियाँवाला बाग में किस अंग्रेजी अफसर ने गोलियाँ चलवाईं?

______

(घ) पंजाब में साइमन कमीशन वापस जाओ का नेतृत्व कौन कर रहा था?

______

(ङ) राजगुरु, सुखदेव और भगतसिंह को फाँसी कब दी गई?

______

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए-

(क) आजादी के दीवानों को ______ की कमी न पड़ेगी

(ख) अक्टूबर 1928 को पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के ______ में एक विशाल जुलूस निकला।

(ग) अंग्रेजी अफसर ______ चालू कर ही रहा था।

(घ) भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन ______ की सजा सुनाई गई।

- कारावास
- मोटरसाइकिल
- नेतृत्व
- बंदूकों

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए-

(क) भगत सिंह मिट्टी में अनाज बो रहे थे। ◯

(ख) जलियाँवाला बाग में भारतीयों ने अंग्रेजों को मारा। ◯

(ग) 17 दिसंबर 1928 को लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गई। ◯

(घ) असेंबली में बम फेंकने में भगतसिंह का साथ गांधी जी ने दिया। ◯

(ङ) फाँसी की सजा केवल भगत सिंह को मिली। ◯

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए-

राजगूरू = ________ जलियांवाला बाग = ________

बटुकेसवर = ________ अमरतसर = ________

मजिसटेरट = ________ नेततृव = ________

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

आजाद = ________ अपनी = ________

अपराध = ________ भविष्य = ________

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी लिखिए-

चिंता = ________ आँख = ________

इशारा = ________ पल = ________

सजा = ________ कंठ = ________

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) नेतृत्व = ________

(ख) आदर्श = ________

(ग) आजीवन = ________

(घ) प्रस्ताव = ________

(ङ) आजादी = ________

योग्यता-विस्तार

✤ पुस्तकालय में जाकर अन्य क्रांतिकारियों की जीवनी पढ़िए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को चित्रकथा लिखने का अभ्यास करवाइए।

कहते हैं कि डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होता है और यह बात सच भी है क्योंकि पृथ्वी पर ईश्वर के बाद डॉक्टर ही जीवन रक्षा जैसा पुण्य कार्य करता है। प्रस्तुत कहानी में डॉक्टर के इसी पुनीत कर्त्तव्य को बड़े ही गंभीर रूप में प्रस्तुत किया गया है।

23 डॉक्टरी

पहला दृश्य

(गाँव के घर का आँगन। विश्वंभर बाबू सप्तग्राम जाने की तैयारी में जुटे हैं। वे पालकी का निरीक्षण कर रहे हैं। पालकी की छत पर दवाइयों की एक पिटारी बँधी है।)

विश्वंभर बाबू - *(थोड़ा परेशान होकर)* तूने दवाइयों की पिटारी कसके बाँधी है कि नहीं? अगर रस्सी ढीली हुई तो सारी दवाइयों का नाश समझो!

शंभू - *(मुस्कराकर)* साहब आप घबराइए नहीं! कुछ नहीं होगा इस पिटारी को। यह मेरी जिम्मेदारी है।

विश्वंभर बाबू - अरे भई, कैसे न घबराएँ? रोगी को देखने जाना है। स्टीमरघाट के स्टेशन मास्टर मधुविश्वास का छोटा लड़का बीमार है। बेचारा बड़े कष्ट में है। तभी तो मुझे बुलाया है। चल, चल, ज्यादा न बोल, बहुत दूर जाना है। बुला सबको!

शंभू - *(चिल्लाकर)* बुद्धू, बगलू, पल्लू, बक्शी, विष्णु! जल्दी करो नहीं तो देर हो जाएगी।

(सब भागकर आते हैं। विश्वंभर बाबू पालकी में बैठते हैं। कहार पालकी उठाते हैं और सप्तग्राम की ओर चल पड़ते हैं।)

दूसरा दृश्य

(फागुन का महीना है। जाड़ा अभी काफी पड़ रहा है। विश्वंभर बाबू ने मोटा–सा कंबल ओढ़ रखा है। पालकी के साथ-साथ शंभू चल रहा है। उसके हाथ में मोटी लाठी है। शंभू इतना बलवान है कि उसे देखकर हैरानी होती है।)

शंभू - साहब! क्या सोच रहे हैं?

विश्वंभर बाबू - शंभू! मुझे वो दिन याद आ रहा है जब कुंभीरा के जंगल में तुझे रीछ ने पकड़ लिया था।

शंभू - हाँ, साहब! उस समय तो मेरे पास बंदूक नहीं थी। बस अपनी लाठी लेकर ही रीछ से भिड़ गया। जमकर लड़ाई हुई थी। मैंने ऐसी लाठी घुमाई कि रीछ की रीढ़ की हड्डी टूट गई। उसमें उठने तक का दम न रहा। *(कुछ सोचकर मुसकराता है।)* साहब सो तो नहीं गए?

विश्वंभर बाबू - अरे नहीं! नींद कहाँ! मुझे तो स्वर्णगंज वाली घटना याद आ रही है। मेरा मानना है कि घड़ियाल आज भी तुझे न भूला होगा!

शंभू - *(हँसकर)* पता नहीं घड़ियाल को मुझसे क्या दुश्मनी थी? मैं तो खाना पकाने के लिए पानी लेने नदी में गया था। मुझे क्या पता था कि घड़ियाल वहाँ छुपा बैठा है? पर साहब मैंने भी उस भयंकर जानवर को अच्छा सबक सिखाया।

विश्वंभर बाबू - अँधेरा घिर आया है। चरवाहे ढोर-डंगर लेकर अपने-अपने घर लौट रहे हैं। लगता है हम विष्णुपुर पहुँच गए हैं।

(कुछ दूर चलकर उन्हें एक चरवाहा मिलता है, वे चरवाहे से पूछते हैं।)

विश्वंभर बाबू - क्यों भई, सप्तग्राम कितनी दूर है?

चरवाहा - कोई सात कोस होगा। पर आप आगे न जाएँ! *(फुसफुसाकर)* रास्ते में डाकुओं का अड्डा है। रात यहीं बिताना ठीक रहेगा।

विश्वंभर बाबू - पर आज रात यहाँ नहीं रुक सकते। रोगी को देखने जाना है। बहुत पीड़ा में है।

(कहार पालकी लेकर आगे बढ़ते हैं। चरवाहा दूर तक विश्वंभर बाबू की पालकी देखता है। रात हो चली है। अचानक पिटारे की रस्सी खुल जाती है। दवाइयों की पिटारी लुढ़ककर नीचे गिरती है और दवाइयाँ बिखर जाती हैं।)

शंभू - अरे भई, दवाइयों को जल्दी-जल्दी उठाकर पिटारी में रखो! कितना अँधेरा है, कुछ ठीक से दिखाई भी नहीं दे रहा है।

(कहार दवाइयाँ संभालकर पिटारी में रख देते हैं और पिटारी को पालकी की छत पर कसकर बाँध देते हैं। मगर तब तक एक और आफत आ जाती है। पालकी का डंडा तड़तड़ाकर टूट जाता है और पालकी जमीन पर गिर जाती है।)

विश्वंभर बाबू - कैसी आफत आई, अब तो रात यहीं काटनी पड़ेगी, और कोई चारा भी नहीं है। शंभू! घास पर कंबल बिछा दो और लालटेन पास में रख दो।

बुद्धू - *(डरकर)* अरे! वह देखिए, कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं। मुझे तो वे डाकू जान पड़ते हैं।

विश्वंभर बाबू - *(जोश में)* अरे डर किसका! तुम सब तो हो ही।

बुद्धू - *(डर से हकलाते हुए)* स... सब लोग!

(इधर-उधर देखता है) यहाँ तो कोई नहीं है। बगलू भाग गया है, पल्लू का कहीं पता नहीं है, बक्शी

तो झाड़ियों में छिप गया है और विष्णु के तो डर के मारे हाथ-पाँव फूल गए हैं। *(यह कहते-कहते वह भी भाग जाता है।)*

विश्वंभर बाबू - *(जोर से पुकारते हैं)* शंभू! शंभू!

शंभू - जी साहब!

विश्वंभर बाबू - अब क्या होगा? ये डाकू तो हमें मार डालेंगे।

शंभू - डरिए मत साहब, मैं तो हूँ!

विश्वंभर बाबू - माना तू बहुत बहादुर है पर वे तो पाँच हैं!

शंभू - पर मैं भी तो शंभू हूँ!

(उठकर छलाँग भरता है और गरजकर बोलता है)

खबरदार! आगे बढ़े तो एक-एक के हाथ-पाँव तोड़ दूँगा।

डाकू - *(सभी डाकू ठहाका मारकर हँसते हैं।)* हा! हा! हा!

(डाकू आगे बढ़ते हैं। शंभू अपनी लाठी संभालता है और घुमाकर डाकुओं को मारता है। एक साथ तीन डाकू गिर पड़ते हैं। शंभू फिर से लाठी संभालता है, जो दो डाकू बच गए थे, वे सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े होते हैं। घायल डाकू दर्द से कराहते हैं।)

डाकू - हाय! हाय! मार दिया! कोई बचाओ! कोई बचाओ!

विश्वंभर बाबू - (आँख फाड़-फाड़कर देखते हैं) शंभू! झटपट दवाइयों की पिटारी निकाल।

शंभू - साहब, अब इसकी क्या जरूरत आ पड़ी?

विश्वंभर बाबू - अरे शंभू! इन तीनों की मरहम-पट्टी कौन करेगा? पता नहीं कहाँ-कहाँ तूने उन्हें मारा है। न जाने कितनी चोट लगी है।

(पीछे से सभी कहार लौट आते हैं। पहले बगलू आता है, उसके बाद धीरे से बक्शी का हाथ पकड़कर विष्णु आता है, फिर पल्लू।)

विश्वंभर बाबू - आ गए तुम लोग? देखो तो, इन तीनों का क्या हाल कर दिया है शंभू ने! जरा दवाइयों की पिटारी खोलो, इन तीनों की डॉक्टरी भी तो करनी है।

–रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी पर आधारित

शब्दार्थ

कष्ट = परेशानी; कहार = पालकी ढोने वाला; अड्डा = ठिकाना; आफत = मुसीबत; हाथ पाँव फूलना = घबरा जाना; दर्द = पीड़ा।

अभ्यास

पाठ-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) विश्वंभर बाबू कौन थे और वे कहाँ जा रहे थे?

(ख) शंभू की क्या विशेषता थी?

(ग) चरवाहे के मना करने पर भी विश्वंभर बाबू ने यात्रा क्यों नहीं रोकी?

(घ) डाकुओं को आता देख सबने क्या किया?

(ङ) पाठ के द्वारा लेखक हमें क्या शिक्षा दे रहा है?

2. दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए–

(क) अगर रस्सी ढीली हुई तो सारी ________ का नाश समझो।

(ख) स्टेशन मास्टर मधुविश्वास का ________ बीमार है।

(ग) मुझे तो ________ वाली घटना याद आ रही है।

(घ) रास्ते में ________ का अड्डा है।

(ङ) इन तीनों की ________ भी तो करनी है।

- डाकुओं
- लड़का
- दवाइयों
- स्वर्णगंज
- डॉक्टरी

3. किसने कहा? किससे कहा?

(क) "यह मेरी जिम्मेदारी है।" ________ ने ________ से

(ख) "अरे भई, कैसे न घबराएँ?" ________ ने ________ से

(ग) "कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं।" ________ ने ________ से

(घ) "इन तीनों की डाक्टरी भी तो करनी है" ________ ने ________ से

व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

हाथ = ________ ________ ________

जंगल = ________ ________ ________

घर = ______ ______ ______
रात = ______ ______ ______
पीड़ा = ______ ______ ______
विष्णु = ______ ______ ______

2. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(क) एक महीने का समय मासिक — ______
(ख) लोगों को मारपीट कर धन लूटने वाला — ______
(ग) पालकी उठाने वाले — ______
(घ) मरीज का इलाज करने वाला — ______

3. पढ़िए, समझिए व लिखिए-

रोग + ई = रोगी
पालक + ______ = ______
निशान + ______ = ______
बीमार + ______ = ______
बहादुर + ______ = ______

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-

छोटा = ______ दुश्मनी = ______ बीमार = ______
सज्जन = ______ मोटा = ______ रात = ______
स्वर्ण = ______ बहादुर = ______ धीरे = ______

5. पाठ में आई व्यक्तिवाचक संज्ञा छाँटकर लिखिए-

______ ______ ______
______ ______ ______

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) फागुन = ______
(ख) आफत = ______
(ग) जरूरत = ______
(घ) मरहम-पट्टी = ______
(ङ) अड्डा = ______

योग्यता-विस्तार

✤ अपने अध्यापक/अध्यापिका से पूछकर कुछ घरेलू औषधियों के नाम लिखिए, साथ ही वे किस काम आती हैं यह भी लिखिए।

शिक्षण-संकेत

छात्रों को गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के विषय में जानकारी दें।

BALAJI PUBLICATION
Marketed by :
Prem Publication House
OFFICE
51, Vivekananda Road,
Kolkata 700 007
Phone : 4066 1060
Fax : 2210 1048
SHOP
209/B, Bidhan Sarani
Kolkata 700 006
Phone : 4060 9068
Mobile : 98310 27006
E-mail : pph@bhartia.in
₹ 230/-